खंड: XIII अंक: 9 व 10

सितम्बर – अक्टूबर, 2001

चैतन्य लहरी

अपने गुरु की क्षमाशीलता का स्मरण करने का प्रयत्न करें।
तब आप जान पाएंगे कि आपका गुरू कितना महान है और वैसा गुरू पाने की कामना
कितने साधकों के मन में रही होगी क्योंकि आपका गुरू सभी गुरूओं का स्रोत है।

श्री माताजी

गुरू पूजा, 1981

1 श्री माताजी का प्रवचन, दिल्ली, 17.12.2000

3 सहस्रार पूजा, कबेला, 6.5.2001

13 श्री ईसा मसीह पूजा, गणपतिपुले, 25.12.2000

23 सार्वजनिक कार्यक्रम, दिल्ली, 26.3.2001

35 श्री बुद्ध पूजा, स्पेन, 20.5.1989

50 गुरु पूजा, 1981

सर सी.पी. श्रीवास्तव द्वारा लिखित

'भ्रष्टाचार भारत का आन्तरिक शत्रु'
(Corruption-India's enemy within)
के विमोचन के अवसर पर –

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिल्ली, दिसम्बर 17, 2000

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणिपात। इतने अच्छे भाषणों के पश्चात् मुझे समझ में नहीं आता कि और क्या कहा जाए! माँ के रूप में एकमात्र समाधान जो मुझे नज़र आता है वह यह है कि वास्तव में यदि आपमें अपनी मातृभूमि के प्रति देश–भक्ति है तो यही सारी समस्या का समाधान है। आप यदि देशभक्त हैं तो भ्रष्ट नहीं हो सकते। महान देशभक्त लोगों के विषय में पढ़कर या उन लोगों के विषय में पढ़कर जिन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया है, किसी भी तरह से यदि ये गुण आप अपने अन्दर विकसित कर लें तो सारा कार्य हो सकता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए उन्होंने बहुत कार्य किया, आप यदि देश के लिए उनकी भावनाओं को समझ मात्र लें, इस प्रकार का भावनात्मक विवेक अपने में जगा लें, इस प्रकार का देश प्रेम अपने अन्दर विकसित कर लें तो मुझे विश्वास है कि आप पूर्णतः ईमानदार बन जाएंगे। कोई प्रश्न नहीं है, करने को कुछ भी बाकी नहीं है परन्तु ये चीज़ तो अत्यन्त अन्तर्जात है और परमात्मा भी इसे चाहते हैं। आप यदि वास्तव में मानसिक शान्ति चाहते हैं तो भ्रष्ट क्यों होते है? ये मेरी समझ में नहीं आता! किसी भी भ्रष्ट व्यक्ति को शान्त या प्रसन्न स्थिति में मैंने कभी नहीं देखा। आप यदि अपने देश से प्रेम करते हैं, मैंने अपने माता–पिता को सहकर्मियों को और उनके मित्रों को देखा है। उन्होंने देश के लिए सभी कुछ बलिदान कर दिया क्योंकि वे अपने देश को प्रेम करते थे। वृद्ध होने के कारण मैंने यह सब देखा है। किस प्रकार ये सारे कष्ट वो झेल पाए, किस प्रकार जेलों में गए और सभी अत्याचार झेले! किस प्रकार उन्होंने यह सब कुछ सहन किया, मैंने यह सब कुछ देखा। आज हम सब भारतीय इस बात को स्मरण क्यों नहीं करते कि ये हमारी महान भूमि है। हमें ये समझना चाहिए कि यहाँ पर महान लोगों ने जन्म लिया। विश्व के अन्य किसी देश में इतने महान लोग कभी उत्पन्न नहीं हुए। उनकी महानता, उनका 'देश धर्म' है कि उन्होंने अपने देश को प्रेम किया और इस प्रकार श्रेष्ठता प्राप्त की। जैसे इन्होंने कहा, देश धर्म में बहुत सी चीजें आती हैं। महान पुरुषों ने श्रेष्ठता और महानता के बारे में बताया परन्तु मेरी

समझ में नहीं आता आज हम भ्रष्टाचार की मूर्खता में किस प्रकार डूब गए हैं! पैंतीस वर्ष पूर्व हम दोनों ने भारत वर्ष छोड़ा था। जब हम वापिस आए तो मुझे आघात लगा क्योंकि कि इससे पूर्व हमने किसी को इतना भ्रष्ट होते हुए नहीं सुना था। कोई चपरासी यदि माँगता भी था तो एक आध रुपया। कहने का अभिप्राय ये है कि हम इस देश की गरीबी को नहीं देखते। आज लोग इस बात से चिन्तित नहीं हैं कि इस भयानक भ्रष्टाचार से हमारी क्या हानि हो रही है। यह तो कैंसर से भी भयानक रोग है। इस रोग का उपचार करने के लिए मैं सोचती हूँ कि अपनी मातृभूमि की पूजा एक मात्र उपाय है। प्रातःकाल अपनी मातृभूमि की पूजा करें। उसका चित्र आपके पास है, उसे देखें, उसे प्रणाम करें और स्मरण रखें कि आप उसके ऋणी हैं। भारत में जन्म लेना भी महान सम्मान है, कि आपने इस देश में जन्म लिया। इसके लिए कृतज्ञ हों। इस प्रकार के प्रेम का आनन्द लेना वास्तव में अत्यन्त महान है और आश्चर्यजनक है। परमात्मा की धन्यवादी हूँ कि मेरे पति भी देशभक्त हैं। मैं सदैव उनसे ये बताती रही हूँ कि मेरा रोम–रोम देशभक्त है। वे विदेश सेवा में थे परन्तु मैंने उन्हें कहा, मैं विदेश नहीं जाना चाहती, यहीं रहना चाहती हूँ। आप यहीं भारतीय प्रशासनिक सेवा को चुन लें और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने केवल इतना ही नहीं किया, परन्तु मैं कहना चाहूँगी कि उन्होंने कभी इस बात की शिकायत नहीं की कि उन्हें कोई हानि हो गई है। निःसन्देह मैं भिन्न प्रकार की व्यक्ति हूँ परन्तु वे स्वयं भी ऐसे ही हैं।

ये पुस्तक प्रकाशित हो गई, इस बात की मुझे प्रसन्नता है। जैसा आप जानते हैं, यद्यपि मेरा स्वप्न ब्रह्माण्डीय है और मैं चाहती हूँ कि महान परिवर्तन आएं। परन्तु मैं ये भी जानती हूँ कि इस पर बहुत सा समय लगेगा। इस प्रकार की पुस्तक को लोग यदि पढ़ेंगे और समझेंगे और इसे गम्भीरता से लेंगे तो हो सकता है कि मेरा स्वप्न आसानी से साकार हो जाए। मैं ऐसा ही महसूस करती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि आप सब लोग शपथ लें कि आप सब अपने देश को प्रेम करेंगे और किसी भी प्रकार से इसे हानि पहुँचाने में आपको खुशी न होगी। ऐसा करना यदि आप सीख लें तो भ्रष्टाचार रूपी इस भयावह राक्षस को समाप्त करने के लिए आवश्यक महान प्रकाश देने के लिए यह काफी होगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सहस्रार पूजा (6.5.2001)
कबेला–इटली

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

जिन सहजयोगियों ने सत्य को प्राप्त कर लिया है, आज मैं उन्हें प्रणाम करती हूँ। युग–युगान्तरों से सत्य की खोज होती रही है। जब साधकों को ये पता चला कि सत्य को प्राप्त करने के लिए परमात्मा के सम्मुख समर्पित हो जाने के अतिरिक्त कोई और मार्ग नहीं है तब भी उन्हें इस बात का ज्ञान न था कि उसे किस प्रकार प्राप्त किया जाए और किस प्रकार इसे कार्यान्वित किया जाए। विश्व भर में जिज्ञासु हैं। मैं जब टर्की गई तो हैरान थी कि वहाँ पर बहुत से सूफी हुए परन्तु उनके शिष्य आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं! उसका कारण यह है कि वो सूफी भी न जानते थे कि उन्हें आत्मसाक्षात्कार किस प्रकार मिला। जिज्ञासुओं के चहुँ ओर ऐसा अंधकार था।

जब मैं छोटी सी लड़की थी तब विश्व भर में मैंने देखा कि सत्य को प्राप्त करने में विषय में लोग पूरी तरह अनभिज्ञ थे। भिन्न प्रकार के तथाकथित धर्मों और कर्मकाण्डों में बहुत से सत्य साधक खो गए। वे सभी प्रकार के कर्मकाण्ड किया करते थे, सुबह से शाम तक कोई न कोई कर्मकाण्ड चलता ही रहता था। वो चाहे हिन्दू, मुसलमान, ईसाइ, जो भी थे, उनका विश्वास था कि इन कर्मकाण्डों द्वारा कुछ प्राप्त किया जा सकता है, सत्य को जाना जा सकता है और व्यक्ति आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर सकता है। ऐसे सभी साधक गलत लोगों के पास गए, गलत दिशाओं में गए क्योंकि वो तो वास्तव में अपने हृदय से सत्य को खोज रहे थे। इन भ्रमित करने वाले लोगों के पीछे जाकर ये साधक भ्रमित हो गए और ऐसे भयानक अंधकार–मय क्षेत्र में चले गए कि उन्हें इस बात का ज्ञान भी न रहा कि वे क्या खोज रहे हैं, उन्हें क्या खोजना चाहिए था, क्या प्राप्त करना चाहिए था। ये भविष्यवाणी की गई है कि जब कलियुग आएगा तो लोग स्वयं को जान लेंगे। महाराज नल और कलि की एक कहानी है। कलि ने राजा नल की पत्नी दमयन्ती का उनसे बिछोह करवा दिया था। एक बार नल ने उसे पकड़ लिया और कहा, "अब मैं तुम्हारा वध करूंगा। तुम अत्यन्त शैतान व्यक्ति हो, तुमने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। कलि ने कहा, "आप मेरा वध कर सकते हैं परन्तु वध करने से पूर्व आप मेरा महात्म्य जान लें। मेरा महात्म्य ये है कि जब कलियुग आएगा तब जंगलों,

पहाड़ों, घाटियों और हिमालय में बैठे हुए सभी तपस्वी सर्व साधारण गृहस्थ बन जाएंगे। वे सब गृहस्थ होंगे, इधर–उधर भटकते रहने वाले सन्यासी नहीं होंगे और वे सब सत्य को प्राप्त कर लेंगे। ये भविष्यवाणी बहुत समय पूर्व की गई थी। इसके विषय में नल पुराण नाम एक पुस्तक भी है और संभवतः आपने इसमें पढ़ा होगा कि, "अब समय आ गया है जब लोग स्वयं को पहचान लें।" सभी धर्मों ने एक ही बात कही है 'आप स्वयं को पहचान लें'। इस्लाम ने यही बात कही, बुद्ध ने यही बात कही, इसाई धर्म ने यही बात कही और हिन्दू धर्म भी यही बात कहता है।' तब तक सभी लोग सब प्रकार के उल्टे सीधे कार्य किए चले जाते है परन्तु वे जानते हैं कि हमें सत्य का ज्ञान नहीं हुआ है।

तो यह कार्य मेरे हिस्से में आया। अपने बचपन से ही मैं जानती थी कि मुझे यह कार्य करना है। परन्तु जब मैंने मानव को देखा तो पाया कि अपने विषय में वह कितना अंधेरे में है, वह कितना आक्रामक है और कितना अपराधी प्रवृत्ति का है। उसकी शैली अत्यन्त क्रूर तथा अविश्वसनीय है। इसी समय मैंने हिटलर को उभरते हुए देखा। तब हमारा देश भी दासत्व की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। मेरे माता–पिता का भी यही लक्ष्य था। जैसे–तैसे करके जब हमने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली तो थोड़े से समय के बाद ही हम भटक गए। लोगों ने सभी प्रकार की आधुनिक चीज़ें अपनानी शुरू कर दीं जो गलत थीं और केवल मनोरंजन के लिए थीं।

ऐसी परिस्थितियों में मैने पाया कि विश्व भर में बहुत बड़ी जिज्ञासु शक्ति थी और कुछ झूठे लोगों ने इसका पूरा लाभ उठाया। वे देश से बाहर गए और बेशुमार पैसा बनाया और अपने असत्य से उन्हें अभिशप्त किया। मैं नहीं समझ पाती कि उन कुगुरुओं ने उनके साथ क्या किया? इस प्रकार बहुत से सत्य साधक भटक गए। इसके बावजूद भी मैं अमरीका गई और वहाँ पर हालात को देखकर मुझे बहुत चोट पहुँची। परन्तु किसी भी प्रकार से मैं वहाँ के लोगों की सहायता न कर पाई क्योंकि अभी तक मानसिक रूप से वे तैयार न थे। वे न जानते थे कि उन्हें क्या प्राप्त करना है। सत्य को आप धन से नहीं खरीद सकते। सहस्रार खोलने के पश्चात् मैंने यह कार्य आरम्भ किया। सहस्रार खोलने की कहानी तो आप जानते ही हैं और ये भी जानते है कि किस प्रकार मैंने एक व्यक्ति से आत्मसाक्षात्कार देना आरम्भ किया परन्तु अमरीका से मैं बहुत निराश हुई। मैं सोच रही थी कि 'ये किस प्रकार बढ़ेगा?' किस प्रकार कार्यान्वित होगा?' तब तक (भारत में) हमारे पास पच्चीस लोग थे जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका था। उन्होंने वास्तव में महसूस किया था कि आत्म–साक्षात्कार से उन्हें क्या प्राप्त हुआ है।

उन्हें लगा कि वे बहुत अच्छे लोग बन गए हैं। अपनी सारी बुरी आदतें उन्होंने त्याग दी थीं और अब वे मेरी पूजा करना चाहते थे। मैंने कहा, "नहीं, नहीं, मेरी पूजा मत करो, क्योंकि लोगों को अभी ये बात समझ नहीं आएगी। परन्तु एक दिन उन्होंने मुझे पूजा के लिए विवश कर दिया। अतः घर की छत पर उन्होंने मेरी पूजा की, किसी ने उनको बता दिया था कि ये देवी हैं। एक बार ऐसा हुआ था एक भूत बाधित नौकरानी हमारे कार्यक्रम के बाद आई और मुझे देवी के नामों से पुकारना शुरू कर दिया। लोगों ने उससे पूछा, "तुम क्या कह रही हो?" महिला होते हुए भी उस स्त्री की आवाज पुरुषों जैसी थी। उसने कहा, "मैं आपको सच बता रही हूँ, ये परमेश्वरी हैं जो हमारी रक्षा करने के लिए आई हैं।" उसकी भाषा नौकरानियों जैसी न होकर अत्यन्त विद्वान ब्राह्मण जैसी थी जो आदि शंकराचार्य के सारे श्लोकों का उच्चारण कर ले। अत्यन्त आश्चर्य की बात थी! लोगों ने उससे बहुत से प्रश्न पूछे और उसके बाद वह बेहोश हो गई। मैंने लोगों को कहा, "उसकी बातों को मत सुनो इसका कोई लाभ नहीं है।" परन्तु वो इस बात से सहमत नहीं हुए और कहने लगे, श्रीमाताजी "हमें आपकी पूजा करनी है।"

तो किसी तरह से मैं पूजा के लिए सहमत हो गई। पूजा करवाने के लिए वो लोग सात ब्राह्मण ले आए। वे बहुत घबरा रहे थे क्योंकि ऐसी पूजा करना अत्यन्त भयानक होता है और यदि यह सत्य न हो तो यह हानिकारक भी हो सकता हैं। परन्तु इसके विपरीत पूजा करते हुए उन सबको आत्मसाक्षात्कार मिल गया और सब कह उठे अब यह सत्य है। शीतल चैतन्य लहरियाँ उन्हें अपने हाथों पर महसूस हुईं। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के सारे लक्षण उनमें आरम्भ हो गए। उस समय मैं सभी कुछ न बताना चाहती थी क्योंकि ऐसा कहने वाले बहुत से लोग थे कि मैं ये हूँ, मैं वो हूँ। उस समय मैं इन सारी चीज़ों को एकदम से अनावृत नहीं करना चाहती थी, परन्तु शनैः शनैः मैंने पाया कि लोग आकर्षित हुए हैं और मेरे कार्यक्रम पर आने लगे हैं। तब सहजयोग बड़ी अच्छी तरह से चारों तरफ फैलने लगा। अतः यह सहस्रार दिवस या जिस दिन ये सहस्रार खोला गया था बहुत महत्वपूर्ण है। ये अत्यन्त सूक्ष्म है।

कुण्डलिनी के विषय में हम जानते हैं कि साढ़े तीन कुण्डलों में यह साढ़े त्रिकोणाकार पवित्र अस्थि (Sacrum) में स्थित है। परन्तु हम ये नहीं जानते कि ये क्या कार्य करती है, कैसे कार्य करती है और हमारे अन्दर क्या घटित होता है? छः चक्रों को पार करके यह सातवें चक्र को भेदती है। मुझे कहना चाहिए कि यह केवल छः चक्रों को भेदती है क्योंकि श्री गणेश के चक्र का भेदन नहीं होता। जब यह छठे चक्र (सहस्रार) का भेदन करती है तो आपका

सम्बन्ध परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति से जोड़ देती है।

परन्तु यह परमेश्वरी प्रेम (Divine Love) है क्या? इसका क्या अर्थ है? ये माँ की शक्ति है, हम कह सकते हैं कि यह आदि शक्ति की ऊर्जा है। जो चैतन्य लहरी के माध्यम से सर्वत्र कार्य करती है। परन्तु ये चैतन्य लहरियाँ हैं क्या? यह अत्यन्त सूक्ष्म ऊर्जा है जो आपके सहस्रार से बहने लगती हैं। सहस्रार की एक हज़ार पंखुड़ियाँ शनैः शनैः ज्योतिर्मय होने लगती हैं और चैतन्य लहरियाँ व्यक्ति के पूरे शरीर में बहने लगती हैं। व्यक्ति के हाथों में, पैरों में और पूरे शरीर में ये चैतन्य लहरियाँ प्रसारित होने लगती है। जितना अधिक हमारा चित्त सहस्रार पर होता है उतने ही कम समय में ये चैतन्य लहरियाँ प्रसारित होती हैं।

विज्ञान में मैंने पढ़ा हैं कि एक प्रमात्रा ऊर्जा (Quantum Energy) होती है। मैं ये नहीं जान पाई कि इसे प्रमात्रा (Quantum) नाम क्यों दिया गया है। इसका अर्थ श्री गणेश की ऊर्जा हो सकता है, मैं नहीं जानती, क्योंकि वैज्ञानिक तो अन्धे हैं। किस चीज़ को वो क्या कहते हैं ये मैं नहीं जानती। तो इस ऊर्जा को उन्होंने प्रमात्रा ऊर्जा का नाम दिया। तो उनके अनुसार प्रमात्रा ऊर्जा अत्यन्त सूक्ष्मरूप से रहती है और आमतौर पर ये अदृश्य होती है। परन्तु इसमें प्रकाश होता है। जैसा आपने मेरे बहुतसारे चित्रों में देखा है इसमें भिन्न प्रकार का प्रकाश होता है। यह ऊर्जा प्रकाश के रूप में बहती है इसलिए यह प्रमात्रा ऊर्जा है। फिर से मैं ऐसा सोचती हूँ, इसके विषय में विश्वस्त नहीं हूँ क्योंकि सदैव मैंने वैज्ञानिकों को अस्पष्ट पाया है। यह प्रमात्रा ऊर्जा, जिसके विषय में ये लोग बात करते हैं, आध्यात्मिक ऊर्जा या प्रेम शक्ति की तरह से है जो हमारे चहुँ ओर बहती है। वैज्ञानिक लोग ये नहीं जानते कि ये प्रमात्रा ऊर्जा क्या कार्य करती है परन्तु उन्होंने ये देखा है कि इसमें प्रकाश है। वो इसे प्रमात्रा इसलिए कहते हैं कि उनके अनुसार यह ऊर्जाणु (Bundles) में प्रसारित होती है। उनके अनुसार हर समूह एक प्रमात्रा है। यह ऊर्जा जब प्रसारित होती है, आपने स्वयं देखा है, तो यह कार्य करती है। ये हर दिशा में, हर आयाम में कार्य करती है।

उदाहरण के रूप में यह शरीर पर भी कार्य करती है। मान लो व्यक्ति को कोई शारीरिक रोग है तो यह कार्य करती है। आपने देखा होगा कि मेरी उपस्थिति में बहुत से लोग रोग मुक्त हो जाते हैं। मात्र मेरी उपस्थिति में, मुझे उन पर कुछ करना नहीं पड़ता। जब भी मैं किसी व्यक्ति को देखती हूँ तो जान जाती हूँ कि उसे क्या रोग है। मैं कहना चाहूँगी कि यह परमात्मा से मेरा सम्बन्ध (योग) है जो मुझे बताता है कि उस व्यक्ति में क्या कष्ट है और क्या किया जाना चाहिए। उसे तुरन्त ठीक किया

जा सकता है। यह बात भी मुझे इसी प्रकार सूझती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मैं कोई प्रश्न नहीं पूछती, कुछ भी खोजने का प्रयत्न नहीं करती, कोई विश्लेषण नहीं करती, परन्तु ये कहता है कि "ऐसा कर लो"। ये कहता भी नहीं है सीधे कर देता है। यह स्वतः कार्य करता है। ये वर्णन करना कठिन है कि यह शक्ति किस प्रकार कार्य करती है।

आप सब लोग जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, अपनी शक्तियों को कार्यान्वित कर सकते हैं। कैसे? उसे प्रसारित करके, इसका अनुभव करके, इसे अन्य लोगों को देकर और इस पर प्रयोग करके। निःसन्देह सहजयोग आप लोगों के कारण फैला है, आप ही अन्य लोगों को सहजयोग में लाए हैं। परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। **हमें पूरे विश्व को विनाश से बचाना है और उसके लिए, मैं सोचती हूँ, पूरी जनसंख्या के कम से कम 40 प्रतिशत लोगों को आत्मसाक्षात्कारी होना आवश्यक है।** जो चाहे उनकी राष्ट्रीयता हो, जो चाहे उनका शिक्षा स्तर हो, सभी को आत्म–साक्षात्कार दिया जाना चाहिए।

भारतीय धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि आत्मसाक्षात्कार के बिना आपका जीवन व्यर्थ है। **परन्तु ये आत्म साक्षात्कार है क्या? ये स्वयं का ज्ञान है। परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति से एक हुए बिना किस प्रकार आप यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं?** तो ये अत्यन्त महान चीज़ है। वर्ष 1970 में मुझे लगा कि मैं सहस्रार को खोल सकती हूँ ऐसा मुझे महसूस हुआ। मैं अभिभूत हो उठी क्योंकि मैं ये बात जानती थी कि यही कठिनाई है, यही बाधा है जो सभी मनुष्यों में है। उनके सहस्रार खुले हुए न होने के कारण वे अंधेरे में विचरण कर रहे हैं और इसी कारण से सारे युद्ध होते हैं और सभी प्रकार की समस्याएं भी। उनके सहस्रार यदि खुल जाएं और उनका सम्बन्ध यदि परमेश्वरी शक्ति से हो जाए तो इन सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा, हर प्रकार की समस्या का हल हो जाएगा और सभी के जीवन खुशियों से भर जाएंगे। ये बात मैंने महसूस की। इससे मैं बहुत प्रसन्न हुई और आनन्द से झूम उठी। परन्तु किसी ने मुझे नहीं समझा। मैं नहीं जानती क्यों? शायद लोगों ने सोचा कि मैं कोई मूर्खतापूर्ण बात कर रही हूँ। किसी ने भी नहीं समझा कि ये क्या है क्योंकि शास्त्रों में भी कुण्डलिनी के विषय में कुछ स्पष्ट नहीं लिखा गया है। केवल महान सन्त ज्ञानेश्वर ने अपनी पुस्तक के छठे अध्याय में कुण्डलिनी के विषय में लिखा था। यह भी अधिक स्पष्ट नहीं है। उन्होंने मात्र इतना कहा कि कुण्डलिनी द्वारा आप जागृति पा सकते हैं। आप लोग सदैव वो भजन गाया करते हैं, मैंने सुना है, 'उदेके अम्बे उदे' (हे कुण्डलिनी

माँ जागो)। परन्तु कोई नहीं जानता कि ये कुण्डलिनी क्या है और आप यह भजन क्यों गा रहे हैं। हमारे देश के गाँवों में यह भजन गाया जाता था परन्तु किसी ने भी इसका अर्थ नहीं समझा। भजन के रूप में इसको गाते रहे या संगीत के रूप में इसका आनन्द लेते रहें, किसी ने भी ये न समझा कि इस भजन में क्या कहा जा रहा है। यह सारी बात को गलत ढंग से समझना था। उन सभी कवियों ने जिन्होंने जागृति और आत्मसाक्षात्कार के विषय में स्पष्ट रूप से लिखा वह सब पुस्तकों में ही रह गया। लोग उसका पाठ करते, पहला पाठक जिस शब्द पर छोड़ता दूसरा वहीं से शुरु कर देता और वह तीसरे व्यक्ति के पढ़ने के लिए छोड़ता। इस तरह से पाठ होते रहे। शास्त्रों के विषय में भी यही बात है। बहुत बड़ी गलतफहमियाँ उत्पन्न कर दी गईं और इनका उपयोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए किया गया। यही कारण है कि हमें वे लोग नहीं मिलते जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया हो। धन तथा पदवी प्राप्त करने के लिए लोगों ने बड़ी–बड़ी संस्थाएं, बड़ी–बड़ी धार्मिक संस्थाएं आरम्भ कर दीं। मैं नहीं जानती कि उन्हें किस नाम से पुकारा जाए परन्तु उनमें से कोई भी आत्मसाक्षात्कारी नहीं था। उदाहरण के रूप में विदित्तमा नाम के एक सन्त थे जो चीन गए। वहाँ पर उन्होंने ज़ेन नामक धर्म आरम्भ किया। ज़ेन अर्थात ध्यान। ज़ेन को उन्होंने इस प्रकार लाना चाहा कि लोग निर्विचार हो जाएं। उन्होंने एक बहुत बड़ा कुण्ड बनाया जिसमें भिन्न आकार बनाए। उसमें कुछ पत्थर डाले। इस कुण्ड के किनारे पर बैठो और बिना कुछ सोचे इसे देखते रहो परन्तु लोगों की समझ में ये बात न आई। सामान्य रूप से कोई भी वहाँ जाता और कहता, "ओह ये कुण्ड ऐसा प्रतीत होता है जैसे समुद्र के अन्दर जहाज हो या ऐसा ही कुछ और कहता। परन्तु किसी ने भी निर्विचार समाधि में जाने का प्रयत्न न किया। मैंने वहाँ कुछ लोगों को बताया कि यह कुण्ड निर्विचार समाधि की अवस्था प्राप्त करने के लिए है, उनकी समझ में मेरी बात न आई।

जापान में 'ताओ' हुए हैं। उन्होंने सर्वव्यापक शक्ति की बात की जो कि 'ताओ' है। लाओत्से ने सन्तों का वर्णन किया। सन्त कैसे होते हैं किस प्रकार आचरण करते है, किस प्रकार बातचीत करते हैं, उनके तौर तरीके क्या होते हैं आदि आदि। परन्तु किसी ने ये न बताया कि किस प्रकार आप सन्त बन सकते हैं। मैं सोचती हूँ कि कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं है कि एक साधारण व्यक्ति को सन्त किस प्रकार बनाया जाए।

ज्ञानेश्वर जी बारहवीं शताब्दि में हुए। तब उन्होंने इसके विषय में बताया और अपनी पुस्तक में बहुत कुछ लिखा। तब एक गुरु एक शिष्य की परंपरा थी कि एक

गुरु एक ही शिष्य को आत्मसाक्षात्कार दे बहुत से शिष्यों को नहीं। मैं नहीं जानती कि किस कारण से उन्होंने ऐसा कानून या नियम बनाया। बारहवीं शताब्दि में ये कार्य आरम्भ हुआ, बहुत से सन्तों ने आत्म–साक्षात्कार के गुणगान किए। सभी ने ये माना कि कर्मकाण्ड व्यर्थ है और इस प्रकार उन्होंने कर्मकाण्डों को त्याग दिया, परन्तु कोई न जानता था कि क्या घटित होना चाहिए। मैंने सभी की जीवनियाँ पढ़ी हैं। सभी सन्तों के विषय में पढ़ा है परन्तु ऐसा लगता है कि उनमें से कोई भी ये न जानता था कि कुण्डलिनी को कैसे जागृत किया जाए। ये मूल समस्या थी–वे नहीं जानते थे कि किस प्रकार कुण्डलिनी को उठाया जाए। हो सकता है उनमें ये शक्ति ही न हो या उन्हें इसका ज्ञान ही न हो। ठीक है कि उन्होंने कुण्डलिनी की बात की। परन्तु कुण्डलिनी को उठाना वो न जानते थे।

यह आध्यात्मिकता की विशेष शक्ति है। उनमें से कोई भी आपको ये न बता सका कि कुण्डलिनी को किस प्रकार उठाएं। अब आप सबको ये शक्ति प्राप्त हो गई है और यह अत्यन्त दुर्लभ है। आप सबको ये प्राप्त हो गई है। मुझे एक भी सहजयोगी नज़र नहीं आता जिसमें कुण्डलिनी उठाने की शक्ति न हो। अपनी इच्छा से चाहे आप ये कार्य न करें, अपने आप में सन्तुष्ट हो जाएं, परन्तु ये कोई अच्छी बात नहीं है। **आपका सहस्रार यदि खुल चुका है और आप यदि जानते हैं कि कुण्डलिनी किस प्रकार उठाई जाए तो लोगों को आत्म–साक्षात्कार देने का हर सम्भव प्रयत्न करें।** आत्मसाक्षात्कार देने का हर सम्भव प्रयत्न करें। आत्मसाक्षात्कार से अधिक लाभ उन्हें कोई अन्य चीज़ नहीं पहुँचाएगी। बाकी दान करना, पैसा देना आदि सब बेकार है। सर्वोत्तम बात तो जी–जान से जिज्ञासुओं को खोज निकालना और उन्हें आत्म–साक्षात्कार देना है। ये देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि इन लोगों ने जिप्सियों पर कार्य करना आरम्भ किया है। जिप्सियों के लिए मेरे हृदय में विशेष भावना है। बिना अपने किसी दोष के वे दयनीय जीवन जी रहे हैं। किस प्रकार से जिप्सियों ने आत्म– साक्षात्कार प्राप्त किया? कोई भी व्यक्ति यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना चाहता हो तो आप उसे आत्म साक्षात्कार दे सकते हैं। परन्तु आत्म साक्षात्कार किसी पर थोंपा नहीं जा सकता। उनमें यदि इच्छा है, शुद्ध इच्छा है तो वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं।

अतः आज मुझे ये कहना है कि अब बहुत से वर्ष गुजर चुके हैं। रात–दिन मैंने कठोर परिश्रम किया और **मेरी एकमात्र इच्छा यही थी कि आप लोग इसे गम्भीरता से लें और कार्यान्वित करें। अपने आत्मसाक्षात्कार को अपने तक**

ही सीमित न रखें। जितने अधिक से अधिक लोगों को आप आत्मसाक्षात्कार देंगे, मैं तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा उतने ही अधिक आभारी होंगे। आप केवल अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने का प्रयत्न करें। आपसे कभी गलती नहीं होगी। आप कभी कोई गलती नहीं कर सकते क्योंकि कुण्डलिनी सब जानती है। वह आपको पहचानती है और यह भी जानती है कि आप आत्म– साक्षात्कारी व्यक्ति हैं। वह आपका सम्मान करेगी। आप यदि गलतियाँ करेंगे तो वह आपकी गलतियां भी सुधारेगी और सभी प्रकार से आपकी सहायता करेगी।

मैं तो मात्र एक गृहणी हूँ जिसे किसी का भी आश्रय न था, परन्तु मैं विश्वस्त थी कि यह खोज निकालना मेरा कार्य हैं कि सहस्रार का भेदन किस प्रकार किया जाए। बाहर जो भी हालात थे या स्थिति थी, मेरा कार्य सहस्रार भेदन की विधि खोजना था और वह मैंने किया, आप भी इस बात को जानते हैं। अब यह आपका कार्य है। अब वैज्ञानिक भी आपके पास आकर प्रश्न पूछा करेंगे क्योंकि वे नहीं जानते कि वो जिन चीज़ों के विषय में बातें कर रहे हैं हम उन्हीं को कार्यान्वित कर रहे हैं। अतः आप लोग अत्यन्त शक्तिशाली हैं। असली बात ये है कि आपमें से कितने लोग वास्तव में इस कार्य को कर रहे हैं? आज बहुत महत्वपूर्ण दिन है। मैं आपको बता दूं कि आप लोगों को मेरे हाथ मजबूत करने होंगे। लोग कहते हैं कि **देवी के एक हजार हाथ हैं परन्तु वो एक हजार हाथ भी अब आपसे माँग रहे हैं कि अपने दो हाथों समेत आ जाओ और इसे कार्यान्वित करो।** जो कार्य आपने करना है वह बहुत महत्वपूर्ण है। संसार में भिन्न प्रकार की समस्याएं हैं, चाहे वे राजनीतिक हों या अन्य प्रकार की, सभी अज्ञानता के कारण आती हैं और इनका समाधान भी आपकी परमेश्वरी शक्ति के द्वारा ही हो सकता है। इसका मैं आपको एक साधारण उदाहरण दूंगी। तुर्की के लोग आए और मुझसे याचना करने लगे, "श्रीमाताजी आप आएं। अपनी यात्रा की तिथि आगे न बढ़ाए।" लेकिन मेरे पासपोर्ट की समस्या थी। मैंने कहा, "मेरा पासपोर्ट तैयार नहीं है, मैं कैसे आऊंगी?" परन्तु तब मैने सोचा क्यों नहीं? हम पासपोर्ट भी बनवा लेगे।" तो पासपोर्ट बन गया वो चाहते थे कि मैं तुर्की आऊं क्योंकि उन्होंने कहा, "आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई है, अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ गई है, हम बर्बाद हो गए हैं।" मैं वहाँ गई, परन्तु इसके विषय में मैने कुछ नहीं किया, फिरभी दो दिन के अन्दर विश्व बैंक ने दस करोड़ डालर की सहायता की घोषणा कर दी। मैंने तो विश्व बैंक से कोई बात नहीं की थी मुझे विश्व बैंक से क्या लेना देना। मैं नहीं जानती। तब मैंने कहा, "हो सकता है कि वो आपकी सहायता इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप कष्ट में

हैं। वो कहने लगे, "कष्ट में तो बहुत से देश हैं, उन्होंने केवल हमारी सहायता क्यों की?" मैंने कहा, "ये तत्व की बात है।"

मैं हैरानी थी कि तुर्की में अधिकतर महिलाएं ही अगुआ थीं और उन्होंने बहुत बड़ा कार्य किया है। मैं देखना चाहती हूँ कि आप लोग अपने देश में क्या कार्य कर रहे हैं? आप कह सकते हैं मेरे देश में लोग बिल्कुल बेकार हैं। हो सकता है मैं इसके लिए असहमति न प्रकट करूं। परन्तु ऐसे स्थान, ऐसे छोटे–छोटे क्षेत्र भी हैं जहाँ जाकर आप सहजयोग बता सकते हैं सहजयोग की बात कर सकते हैं। विशेष रूप से संवाददाताओं (Media) को आप कायल कर सकते हैं। ये कार्य आपको करना होगा और खोज निकालना होगा कि आप क्या कर सकते हैं? मेरी तरह से। मुझे किसी का सहारा न था, किसी ने मेरी सहायता न की, फिर भी किस प्रकार मैंने सहस्रार का भेदन किया। आप भी अन्य लोगों का सहस्रार भेदन कर सकते हैं।

ये कार्य कठिन नहीं है क्योंकि ये मेरा स्वप्न है कि इस विश्व में कम से कम 40 प्रतिशत लोग ऐसे हों जो आत्मसाक्षात्कारी हों और जिन्होंने सहजयोग को अपना लिया हो तथा जो अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे रहे हों और उनको परिवर्तित करने में लगे हुए हों। किसी के भी पास जाकर आप उसे सहजयोग के विषय में बता सकते हैं। भेदभाव करने की या उनके पास बैठकर उनके शिक्षा स्तर की जाँच करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चाहे जो भी हो मैं ये नहीं कह रही हूँ कि आप कुत्तों तथा पशुओं को आत्मसाक्षात्कार दें, केवल मनुष्यों को दें। (माँ हँसती हैं) चाहे कोई भी मनुष्य हो, वो अंग्रेज हों जर्मन हो, इटेलियन हों या किसी अन्य स्थान के हों। मुझे बताया गया है कि कुछ लोग गोष्ठियाँ करते हैं और सभी प्रकार के लोगों के साथ कठोर परिश्रम करते हैं और इस तरह से सहजयोग का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। मुसलमान लोगों पर भी हमने कार्य आरम्भ कर दिया है। भारत में भी इसमें सफलता प्राप्त हुई है। आप नहीं जानते, किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया। अतः यह कार्यान्वित हो सकता है। इसके विषय में न तो अधिक निराश होने की आवश्यकता है और न ही परेशान होने की। शनैः शनैः इसमें सुधार होगा।

मेरे विचार से आत्मसाक्षात्कार का सबसे बड़ा शत्रु शराब है। लोगों को यदि मद्यपान की लत पड़ जाए तो वे इसके गुलाम हो जाते है। उनके दिमाग ठीक नहीं रहते। मैं सोचती हूँ शराब की लत के कारण उनका सहस्रार बिगड़ जाता है। अतः मेरे विचार से मद्यपान सबसे बड़ा शत्रु है। यदि आप शराब की लत में फँसे किसी व्यक्ति को देखें और इस लत से उसे मुक्त कराना चाहें तो आत्मसाक्षात्कार के द्वारा ये कार्य

हो जाएगा। निःसन्देह हमारे और भी शत्रु हैं जैसे कुगुरु। इसके अतिरिक्त हमारे और शत्रु हैं जो धर्म के मामले में छलयोजनाएं करते हैं परन्तु यह चीजें अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। तो आपको यदि शराब की लत में फँसे हुए लोग मिलें तो मैं आपको बताती हूँ कि वे परिवर्तित हो जाएंगे और समझ जाएंगे कि अभी तक जो कुछ भी वो कर रहे थे वो गलत था। उनका शराब पीना और पलायन समाप्त हो जाएगा और वे कर्म क्षेत्र में लौट आएंगे तथा सहजयोग को कार्यान्वित करेंगे।

अब आप लोग प्रेम के शान्त सैनिक हैं। इसी चीज़ का आपने प्रसार करना है और यही चीज़ आपने अन्य लोगों को बतानी है और जो आनन्द आप प्राप्त कर रहे हैं वह अन्य लोगों को देना है। अपनी या आप थोड़े से लोगों की उपलब्धि से सन्तुष्ट होकर नहीं बैठ जाना। तेजी से आपने इसको प्रसारित करना है और यह कार्य करने की क्षमता आपमें है। इसके लिए न तो धन की आवश्यकता है न दिखावे की। यह आपके अन्तःस्थित है और यह कार्य करता है। ये आपमें पहले से ही है, आपमें विद्यमान है, आप सभी लोगों में है। मैं ये सब जानती थी, निःसन्देह मैं तो ये सब पहले से जानती थी। अब आप लोग भी इसे जान गए हैं। अतः अब आप लोग इसे कार्यान्वित करें। भली–भांति कार्यान्वित करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन ये संसार बिल्कुल भिन्न स्थान बन जाएगा।

आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

श्री ईसा मसीह पूजा
गणपति पुले, 25.12.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज का शुभ दिवस है जो मनाया जाता है। कारण, ईसामसीह का जन्म कहते हैं कि आज हुआ था। ईसामसीह के बारे में लोग बहुत कम जानते हैं क्योंकि वो छोटी ही उम्र में बाहर चले गए थे और उसके बाद वापिस आकर के उन्होंने जो महान कार्य किए वो सिर्फ तैंतीस (33) वर्ष के उम्र तक ही थे। उसके बाद उनके जो शिष्य थे, बारह उन्होंने धर्म का प्रचार किया लेकिन जैसे आप लोगों को भी समस्याएं आती हैं उसी प्रकार उनको भी अनेक समस्याएं आईं। पर इन बारह आदमियों ने बहुत कार्य किया और शुरूआत के जो लोग इनको मानते थे उनको ग्नोस्टिक (Gnostics) कहते थे। ग्नोस्टिक माने 'जिन्होंने जाना है'। 'जन्म' से आता है ग्नः, ग्नः माने जानना। और इन लोगों को भी बहुत सताया गया, इस वक्त के जो प्रीस्ट (priest) वगैरह. लोग थे उन्होंने बहुत सताया।

इसलिए शुरूआत में बड़ी तकलीफ से ईसामसीह की बातें लोगों में भर दी गई। फिर जो उस वक्त सबको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ था और ईसामसीह ने बार–बार कहा है कि 'अपने को जानो–अपने को जानो'। यह कहते हुए भी लोगों ने इस चीज़ का महत्व नहीं समझा और धर्म फैलाना शुरू कर दिया। **अपने को जाने बगैर धर्म फैल नहीं सकता, धीरे–धीरे वो अधर्म हो जाता है और यही बात ईसाई धर्म की हो गई।** जैसे कि ईसामसीह एक विवाहोत्सव में गए थे, शादी में गए थे और वहाँ पानी में हाथ डाल के उन्होंने उसकी शराब बना दी ऐसा लिखा हुआ है। हिब्रु में कहा जाता है जिसमें कि यह बात लिखी गई है शुरूआत में, कि वो पानी जो था उसका परिवर्तन जो हुआ सो जैसे कि अंगूर का रस। इस तरह उसका स्वाद था और अंगूर के रस को भी उसमें वाईन (wine) नहीं कहते। इसी बात को लेकर के ईसाईयों ने कहा कि चलो यह तो हमको मना नहीं है, शराब पीनी चाहिए और इस तरह से ईसाईयों में शराब बहुत चल पड़ी। शराब अधर्म लाती है, शराब से मनुष्य विचलित हो जाता है ऐसी बात कैसे ईसामसीह कहते? यह तो बहुत आसान चीज़ है, हम भी कर सकते हैं, पानी में हाथ डालकर के हो सकता है कि उसका स्वाद बदल दें। लेकिन इतनी लोग शराब पीने

लग गए, हम तो हैरान हैं! इंग्लैंड में हम गए थे तो वहाँ तो कोई मरता था तो भी बैठ कर शराब, कोई पैदा होता था तो भी शराब, बात–बात में शराब और इतनी शराब चल पड़ी कि अब शराब के सिवा बात ही नहीं करते। किसी के घर जाइए तो पहले वो शराब देंगे, अगर आप शराब नहीं पीते तो वो समझ नहीं सकते कि आपसे बात क्या करें। इस प्रकार इसका प्रचलन गलत चल पड़ा और अगर कोई कहे कि ईसामसीह ने ऐसा किया तो इससे बढ़ के गलत बात और कोई हो नहीं सकती। कभी भी कोई भी अवतरण आते हैं वो कभी भी आपको ऐसी बात नहीं सिखाएंगे कि जो आपके धर्म के विरोध में है। अब वो शराब का प्रचलन बढते–बढ़ते हिन्दुस्तान में भी आ गया। जब हम लोग छोटे थे तो यहाँ अंग्रेज़ों का राज था, कोई हिन्दुस्तानी लोग शराब नहीं पीते थे, जहां तक हम जानते हैं। हाँ कोई कोई रईस लोग पीते होंगे, लेकिन कोई नहीं पीता था और अब जिसको देखो वो ही शराब पी रहे हैं और शराब में कितनी दुर्दशा होती है वो कोई जानता ही नहीं है और सोचता नहीं है और गलत काम करते हैं।

तो पहली चीज़ भई बताना चाहती हूँ कि जो यह ईसाई लोग शराब पीते हैं तो बड़ा धार्मिक कार्य नहीं करते हैं। यहाँ तक कि इनके रोम में जो चर्च है वहाँ एक शराब बनाते हैं। धर्म से अधर्म करना, धर्म के नाम पर अधर्म करना मैं सोचती हूँ महापाप है और इस प्रकार सब गलत–गलत बातों को लोग अपना लेते हैं। उनके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य था कि आपके अन्दर जो आज्ञा चक्र है उसका भेदन करें और इसलिए उन्होंने अपने को क्रॉस (cross) पर टाँग दिया और फिर उसके बाद फिर से जीवित हो गए। यह चमत्कार लगता है लेकिन परमेश्वरी कार्य को चमत्कार कोई चीज़ नहीं। यह उन्होंने दिखाया कि इन्सान इस आज्ञा चक्र से बाहर जा सकता है और आज्ञा चक्र पे इन्होंने दो मन्त्र बताएं हैं इसे हम बीज मन्त्र कहते हैं 'हँ और क्षम्'। क्षम् का मतलब है क्षमा करो। क्षमा करना, यह सबसे बड़ा मन्त्र है। जो आदमी क्षमा करना जानता है उसका ईगो (Ego) जो है या उसका जो अहंकार है वो नष्ट हो जाता है। छोटी–छोटी बात में आदमी में अहंकार होता है जैसे किसी से कह दिया भाई तुम बैठ जाओ ज़मीन पर तो उनका अहंकार हो गया, अगर कहा कुर्सी पर बैठो तो कहेंगे कि यह छोटी कुर्सी है हमको क्यों दी? हर एक मामले में मनुष्य को अपने बारे में बड़ी कल्पनाएं होती हैं और वो कोई ज़रा सा कल्पना से कम चीज़ किसी ने की कि उसका अहंकार एक दम खड़ा हो जाता है। कभी–कभी अन्जाने में भी ऐसी बात हो सकती है और अन्जाने में भी कोई आदमी कुछ ऐसी बात करे तो जो आदमी अहंकारी होता है उसको हर एक चीज़ में लगता है कि उसका अपमान हो रहा है। इस तरह

से वो हर समय एक अजीब सी हालत में रहता है कि कोई भी उसके लिए करो काम तो सोचता है कि उसका अपमान हो रहा है, उसको नीचा दिखाया जा रहा है यह दिमाग में बात बैठी रहती है और फिर आप सीधी भी बात करो, चाहे नहीं भी करो सबका एक ही अर्थ निकलता है।

इसलिए देखना चाहिए और सोचना यह चाहिए कि जो ईसामसीह ने कहा है कि आपको अगर किसी के लिए भी ऐसा लगा कि उसने आपका अपमान किया या उसने आपको दुख दिया, तकलीफ दी तो उसे आप क्षमा कर दो। अब देखिए अगर आप सबको क्षमा कर दें तो क्या हो जाएगा? आपको कोई तकलीफ नहीं हो सकती, आप परेशान नहीं हो सकते। जब आपने क्षमा ही कर दिया तो उस बारे में आप सोचेंगे ही नहीं और कोई ऐसी घटना हो ही नहीं सकती कि जो आपके विपरीत हो क्योंकि आप सबको क्षमा करते रहते हैं। यह शक्ति हमें आज्ञा चक्र से मिलती है। जिसका आज्ञा चक्र अच्छा होता है वो सबको क्षमा कर देता है और नहीं तो दूसरा मार्ग क्या? अगर आप क्षमा नहीं करेंगे तो आप अपने ही को तकलीफ देंगे, अपने ही को परेशान करेंगे और जो दूसरा आदमी है वो हो सकता है उसने जान बूझ कर आपका अपमान किया है तो वो और बलवत्तर हो जाएगा। इसलिए क्षमा करना उन्होंने बड़ा भारी एक बड़ा भारी सन्देश मानव जाती के लिए दिया है। और दूसरा हँ–हँ जो है यह 'क्षम्' से बिल्कुल उलटा अर्थ रखता है। हं माने यह जान लो तुम क्या हो। यह जान लो कि तुम आत्मा हो, तुम यह शरीर, बुद्धि, मन, अहंकार आदि उपाधियाँ नहीं पर तुम आत्मा हो और इस 'हँ' को जानकर के आप समझ लोगे कि मैं आत्मा हूँ।

आत्मा का मतलब यह है कि कितनी भी गलत–सलत बातें हमारे दिमाग में घमंड से, गर्व से, मूर्खता से, अज्ञान से आई हुई हैं यह सब बेकार हैं, इनका कोई अर्थ नहीं बनता। तुम साक्षात जब स्वच्छ आत्मा हो तो इस आत्मा में यह सब चीज़ आती नहीं और तुम अत्यन्त पवित्र हो। **सो दो चीज़े उन्होंने बताईं एक तो यह कि आप सबको क्षमा कर दो। कोई ज्ञान से, अज्ञान से कुछ भी कुछ कहे क्षमा कर दो जिससे आप को तकलीफ नहीं होगी क्योंकि क्षमा करिये न करिये आप करते** क्या हैं? कुछ भी नहीं। पर जब आप क्षमा नहीं करते हैं तब आप अपने को सताते हैं और तंग करते हैं और जिस आदमी ने आपको दुख दिया, तकलीफ दी वो तो मज़े में बैठा है। तो इस तरह से आप देखें कि कोई ऐसी बात हो उसे आप क्षमा करने की आदत डाल लें।

दूसरी बात जो कही है उन्होंने कि तुम आत्मा हो, इस आत्मा को जानो। आत्मा को तो कोई छू नहीं सकता, नष्ट नहीं कर

सकता, उसको सता नहीं सकता। अगर आप वो आत्मा स्वरूप हैं तो उसमें पूर्णतया समविलीन होना चाहिए। लेकिन **इस आत्मा तत्व को प्राप्त करने के लिए आप जानते हैं कि कुण्डलिनी का जागरण होना ज़रूरी है और कुण्डलिनी के जागरण के बाद उसमें स्थित होना पड़ता है, उसमें बैठना पड़ता है। जब तक आप उसमें स्थित नहीं होंगे तब तक आप छोटी–छोटी बातों में उलझे रहेंगे।**

तो अपने में समाना आना चाहिए, अपने ही अन्दर समाना चाहिए। अपने अन्दर जब आप समाने लग जाएंगे तो आपके अन्दर एक नितान्त शान्ति प्राप्त होगी और आप विचलित नहीं होंगे। इस शान्ति के दायरे में जब आप रहेंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि आप जो छोटी–छोटी चीज़ों के लिए हर समय परेशान रहते थे वो नहीं रहेंगे, आत्मा के आनन्द में आप डूबे रहेंगे। इस आत्मा को प्राप्त करने के लिए मैंने कहा कि कुण्डलिनी का जागरण अत्यावश्यक है उसके लिए, उसके बगैर हो नहीं सकता। पर होने पर भी, जागरण होने पर भी लोग भटकते रहते हैं, तो भी वो गहन नहीं आते। तो केन्द्र बिन्दु अगर आपका आज्ञा है और उसके ओर लक्ष्य कर के अगर आप देखें तो आप समझ जाएंगे कि यह आज्ञा चक्र आपको घुमा रहा है। इस आज्ञा चक्र की वजह से आप चक्करों में पड़े हुए हैं, विचारों के चक्करों में पड़े हुए हैं, नाना तरह की उपाधियाँ इससे लग रही हैं। पर जब इस आज्ञा चक्र को आप लांघ जाएंगे, इससे परे आप चले जाएंगे तब आप में यह जो व्यथा है वो खत्म हो जाएगी। इसलिए आज्ञा चक्र का महात्मय माना जाता है। **यहाँ तक कि बाईबल (Bible) में लिखा हुआ है कि जो आदमी माथे पर टीका लगा कर आएगा वो बचेगा, लिखा है ऐसा।** वो सहजयोगी होंगे और कौन होगा! काम तो प्रचण्ड है। वो बारह (12) आदमी थे, आप लोग हज़ारों हैं। लेकिन एक–एक आदमी ने वहाँ जो मेहनत की है उसके एक सहस्त्रांश भी आप लोगों ने नहीं की है, अन्यथा न जाने कहाँ से कहाँ यह कार्य फैल सकता! अब मेरे लिए तो यही एक आधार है कि आप लोग सहजयोग को बढाएंगे और सारे विश्व में इसे फैलाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री ईसा मसीह पूजा

25.12.2000

(श्री माताजी के प्रवचन के अंग्रेजी भाग का अनुवाद)

मुझे खेद है कि मुझे हिन्दी भाषा में बोलना पड़ा क्योंकि यहाँ उपस्थित बहुत से लोग सिर्फ हिन्दी भाषा समझते हैं। मैं जब बाहर होती हूँ तो केवल अंग्रेजी बोलती हूँ, इसके अतिरिक्त कोई और भाषा नहीं। इसलिए कभी–कभी मुझे परिवर्तन की भी इच्छा होती है।

ईसा–मसीह के महान अवतरण के बारे में मैंने इन्हें बताया कि एक महान लक्ष्य लेकर वे पृथ्वी पर अवतरित हुए। वे आज्ञा चक्र को खोलना चाहते थे जो कि बहुत ही संकीर्ण है और इससे पूर्व ये कभी न खोला जा सका था। इस महान कार्य को करने के लिए उन्हें अपना जीवन बलिदान करना पड़ा। उनके इस बलिदान के कारण ही यह संकीर्ण चक्र खुल पाया। उन्हें इस बात का ज्ञान था। वो जानते थे कि घटनाक्रम ऐसे ही घटित होगा और उन्हें अपना बलिदान स्वीकार करना होगा। वे दिव्य पुरुष थे। ऐसा करने में उन्हें कोई समस्या न थी परन्तु उन्होंने सोचा कि ऐसा किए बिना यदि ये कार्य हो सके तो अच्छा है। परन्तु अन्ततः उन्हें अपना जीवन बलिदान करना पड़ा और उस बलिदान में उन्होंने दर्शाया कि मनुष्य को यदि सांसारिक बनावटी जीवन से ऊपर उठना है तो उसे बलिदान करना पड़ेगा। क्या बलिदान करना पड़ेगा? आपको अपने षड्रिपु (काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ) बलिदान करने पड़ेंगे। परन्तु कुण्डलिनी की जागृति के साथ ये षड्रिपु छुट जाते हैं। ऐसा होना इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी कुण्डलिनी कितनी जागृत हुई। **कुण्डलिनी यदि पूर्ण रुपेण उठ जाए तो, मैंने देखा है पहली बार में ही लोग पूर्ण साक्षात्कारी हो जाते हैं।** ऐसे लोग बहुत कम हैं, परन्तु ऐसे लोग हैं।

परन्तु मुझे लगता है कि आपमें से अधिकतर लोगों के साथ कुछ न कुछ समस्याएं हैं और अधिकतर को आज्ञा चक्र की समस्या है। हमारा आज्ञा चक्र इसलिए बहुत अधिक चलता है क्योंकि हम सभी बाह्य वस्तुओं को देखकर प्रतिक्रिया के रूप में सोचते हैं, हर चीज़ के प्रति हम प्रतिक्रिया करते हैं। यहाँ मैं ये सारे लैम्प देख रही हूँ। इनके बारे में मैं प्रतिक्रिया कर सकती हूँ और पूछ सकती हूँ कि आप

लोग इन्हें कहाँ से लाए, इन पर कितना पैसा खर्च हुआ, वर्ष भर इनको कहाँ रखते हैं आदि–आदि? मैं प्रतिक्रिया कर सकती हूँ। यह प्रतिक्रिया हमारे अहं एवं बन्धनों के कारण होती है। अहंकारी लोग अत्यन्त संवेदनशील होते हैं। आप उन्हें यदि ऐसी चीज दें जो बहुत गरिमामय नहीं है तो उन्हें खेद होता है। किसी भी चीज़ के विषय में उनके हृदय को चोट पहुँचती है क्योंकि अपनी चेतना के कारण वे स्वयं को कुछ विशेष, कुछ ऊँचा मानते हैं। उनसे व्यवहार करते हुए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि यदि उन्हें ये महसूस हो जाए कि कोई उनका तनिक सा भी अपमान कर रहा है तो वे पूर्णतः क्षुब्ध हो जाते हैं। यह अहं की देन है। अहं आज्ञा चक्र की गतिविधि का एक भाग है। बन्धन (Conditioning) इसका दूसरा भाग है।

अब आपके साथ एक बन्धन है, जैसे आप भारतीय हैं तो आपका बन्धन ये है कि कोई यदि आपसे मिलने आए तो वह आपके चरण–स्पर्श करे। मान लो वो आपका सम्बन्धी है और आपके चरण नहीं छूता तो आप नाराज हो जाते हैं। इस प्रकार का कोई भी बन्धन आपके मन में ये विचार पैदा करता है कि आपको अपमानित किया जा रहा है, आपका सम्मान नहीं किया जा रहा और यह बात आपको बुरी लगती है। अहं की अन्य प्रतिक्रियाएं जैसे मैंने बताया इस प्रकार होती है जैसे मैं ये लैम्प देखकर कह सकती हूँ कि मैं क्यों नहीं इन्हें ले सकती, या यदि ये मेरे पास हैं तो किसी और को मैं क्यों दूँ? या तो अहं की प्रतिक्रियाएं होती है या प्रतिअहं की। इन दोनों का समाप्त होना आवश्यक था और ये कार्य ईसामसीह के जीवन बलिदान द्वारा किया गया। ईसा मसीह दिव्य पुरुष थे और दिव्य पुरुष सागर की तरह होते हैं और सागर शून्य बिन्दू (0°) पर होता है। निम्नतम स्तर पर रहते हुए यह सारे कार्य करता है, बादलों का सृजन करता है, वर्षा बनाता है और वर्षा के पानी से जब सभी नदियाँ भर जाती हैं तो वे लौटकर समुद्र में आ जाती हैं क्योंकि समुद्र का स्तर निम्नतम होता है।

अतः विनम्रता सहजयोगी का एक मापदण्ड है। विनम्रता विहीन व्यक्ति को सहजयोगी नहीं कहा जा सकता। मैंने देखा है, सहजयोगी भी कभी–कभी बहुत क्रुद्ध हो जाते हैं, चिल्लाने लगते हैं, दुर्व्यवहार करने लगते हैं। ये व्यवहार दर्शाता है कि वे अभी तक सहजयोगी नहीं है और अभी उन्हें परिपक्व होना है। **ये विनम्रता व्यक्ति को अधिक स्थायित्व देती है, मैं कहूँगी कि एक अधिक स्थायी अवस्था जिसके कारण आप प्रतिक्रिया नहीं करेंगे,** किसी भी चीज को देखकर आप प्रतिक्रिया करते हैं, परन्तु तब आप प्रतिक्रिया

नहीं करेंगे। वस्तु को केवल देखेंगे और इस प्रकार आपमें एक नई अवस्था, साक्षी अवस्था का उदय होगा। **जब आप साक्षी बन जाएंगे तो केवल देखेंगे,** प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, इसके विषय में सोचेंगे नहीं। तब आप वर्तमान में होंगे। वर्तमान में आप देखते हैं और वास्तव में आनन्द लेते हैं। **सोचते हुए किसी भी कृति का आनन्द आपके मस्तिष्क में नहीं होता। परन्तु जब आप निर्विचार होते हैं तो उस कृति के सौन्दर्य का पूर्ण आनन्द आपमें प्रतिबिम्बित होता है और आपको अगाध शान्ति एवं आनन्द प्रदान करता है। अतः व्यक्ति को सीखना है कि उसे प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए।**

आज की मुख्य समस्या ये है कि सभी मनुष्य प्रतिक्रिया करने में अत्यन्त कुशल हैं। प्रतिक्रिया करना आज के समाज का प्रमुख सिद्धान्त है। किसी भी समाचार पत्र या पुस्तक को आप उठाएं तो आपका सामना ऐसे लोगों से होगा जो प्रतिक्रिया करने में कुशल हैं, वे प्रतिक्रिया करते हैं और उस प्रतिक्रिया के कारण विषय के सार तत्व तक नहीं जा पाते। सार तत्व को तो केवल साक्षी अवस्था द्वारा ही पाया जा सकता है। ईसा–मसीह के बलिदान से हमें यही सीखना है। उनका जन्म एक अत्यन्त गरीब एवं विनम्र परिवार में बहुत ही कठिन परिस्थितियों में हुआ। **लक्ष्य ये दर्शाना था कि बाह्य पदार्थ, बाह्य शानो–शौकत व्यक्ति को महान नहीं बनाती। महानता तो अन्तर्निहित है** और जब ये महानता अन्दर होती है तो आप बाह्य वस्तुओं की चिन्ता नहीं करते। तब आप अपने अन्दर इतने वैभवशाली हो चुके होते हैं कि आपको बाह्य चीज़ों की चिन्ता नहीं होती। बिना इन चीज़ों की चिन्ता किए आप गौरवमय जीवन व्यतीत करते हैं। ईसा मसीह के जीवन से भी हमें यही बात देखने को मिलती है। वे अत्यन्त गौरवशाली व्यक्ति थे अन्यथा कोई गरीब व्यक्ति तो, जिसने गरीबी का स्वाद चखा हो, भिखारियों की शैली में बात करेगा। यदि किसी धनवान परिवार में जन्में व्यक्ति से आप बात करेंगे तो वह अत्यन्त बाह्य दिखावे के स्वभाव से बातचीत करेगा। परन्तु दिव्य पुरुषों को ये सब चीज़ें छूती तक नहीं। उनके लिए अमीरी–गरीबी, उच्च पद या सत्ता का अभाव, सभी स्थितियाँ एक सम हैं। ऐसी स्थिति जब आपमें विकसित हो जाए तब आपको मानना चाहिए कि आप सहजयोगी बन गए हैं। मैंने देखा है कि गणपति पुले आने वाले लोग अब बहुत परिवर्तित हो गए हैं। आरम्भ में तो जब लोग वहाँ आते थे तो कहा करते ये हमें पानी नहीं मिलता, यहाँ फलाँ सुविधा नहीं मिलती, यहाँ गर्मी है या सर्दी है। हर समय वे ऐसे बात करते थे मानो छुट्टी बिताने के लिए आए हों। सहजयोग बिल्कुल भिन्न है। यहाँ पर आप अपनी साक्षी अवस्था विकसित करने के लिए हैं।

आपने आज आकाश को देखा यह कितना सुन्दर था! किस तरह नारंगी और नीले रंग आकाश में बिखरे हुए थे! स्वतः ही इसमें रंग उठते हैं और इनका यह आनन्द लेता है। इस बात की भी चिन्ता नहीं करता ये रंग सदैव बने रहने चाहिए। इस बात की भी इसे चिन्ता नहीं होती कि अंधेरा होते ही ये सब रंग समाप्त हो जाएंगे! ये मात्र देखता है। आकाश साक्षी रूप से देखता है और जो भी कुछ उसे उपलब्ध हो जाए उसे ले लेता है। यही कारण है कि यह इतना सुन्दर है और इतना आनन्ददायक।

तो एक अन्य बात ये है कि जब आप आध्यात्मिकता की उस अवस्था में होते हैं तो आप अत्यन्त शान्त एवं सुहृद होते हैं और परस्पर प्रेम करते हैं। अहं की सभी समस्याएं लुप्त हो जाती हैं। मेरे विचार से **अहं ही आपके जीवन के सारे वैभव एवं सौन्दर्य को बाधित** करता है। **आप यदि इस अहं को मात्र देख सकें कि यह किस प्रकार कार्य** करता है **तो आप आनन्द में आ जाएंगे।** यह एक प्रकार का नाटक करता है। आप इस नाटक को देख सकते हैं। साक्षी रूप से देखने पर लोग अचानक समझ जाते हैं कि आप इस अहं में फंसे हुए नहीं है, आप तो मात्र इसे देख रहे हैं। अपने अहं से जब आप निर्लिप्त होते हैं तो आप इस बात को देख पाते हैं कि किस प्रकार ये आपको अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करता है। आज के युग की यही समस्या है और इसीलिए हमें आज ईसामसीह की अत्यन्त आवश्यकता है।

आज की समस्या ये है कि लोग इस बात को नहीं समझते कि अहंवादी बनकर वे स्वयं को, अन्य लोगों को पूरे, विश्व को कितनी हानि पहुँचा रहे हैं। यदि वो इस बात को समझ लें तो, मैं आपको बताती हूँ कि, वो इसे त्याग देंगे। परन्तु समस्या ये है कि लोग इसका आनन्द लेते हैं! इस प्रकार की तुच्छता या अधम जीवन का आनन्द लेते हैं! आप सब लोग सहजयोगी हैं, आपको ये समझना चाहिए कि ये अहं मेरी खोपड़ी पर क्यों सवार हो रहा है? मैने ऐसा क्या किया है? मैं कौन हूँ? एक बार जब इस प्रकार के प्रश्न पूछने लगते हैं तो ये अहं लुप्त हो जाता है। अहंकारी लोगों से व्यवहार करना मेरे लिए भी बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि मैं उन्हें बता नहीं पाती कि तुम्हारे अन्दर अहं है। ये बात यदि मैं उन्हें बता दूँ तो वे दौड़ जाएंगे। यदि मैं उन्हें ये कहूँ कि तुम ठीक हो, बहुत अच्छे हो, बहुत भले हो, तो उनका अहं और अधिक बढ़ जाएगा और वे कहेंगे ओह! श्रीमाताजी ने मुझे कहा है मैं बहुत अच्छा हूँ ये बहुत बड़ी समस्या है। मेरी समझ में नहीं आता कि मनुष्य के अहं को किस प्रकार ठीक करुं! मैं जानती हूँ उनमें अहं है परन्तु ये नहीं जानती किस प्रकार व्यवहार किया जाए। यदि आप ये

बात समझ लें कि आपमें क्या दोष है तो मैं सोचती हूँ कि आप इस कार्य को कर सकते हैं। आपकी अपनी तथा मेरी समस्या को सुलझाने का यह अत्यन्त उत्तम उपाय है।

मेरा स्वप्न इतना महान है कि इसे एक जीवन में पूरा नहीं किया जा सकता। मैं चाहती हूँ कि विश्व के सभी लोग आत्मसाक्षात्कार पा लें। जिस प्रकार सहज संस्कृति में हमने अहं से मुक्ति प्राप्त करने का प्रशिक्षण पाया है यह अत्यन्त प्रशंसनीय है। आप स्वयं अन्तर्अवलोकन कर सकते हैं, स्वयं। आप देख सकते हैं कि आपका आचरण ऐसा क्यों है। जिस प्रकार सहजयोगी अन्तर्वलोकन कर सकते हैं वैसे अन्य नहीं कर सकते। क्योंकि सहजयोगी अपनी गहनता में पेंठ सकता हैं, वे स्वयं, स्वयं को देख सकते हैं, वे अन्य लोगों को देख सकते हैं और इस प्रकार वो ये देखने का प्रयत्न कर सकते है कि ये श्रीमान अहं आपकी खोपड़ी में क्या कर रहे हैं? निःसन्देह हम ये भी जानते हैं कि ईसामसीह का मंत्र अहंकार की बाधा को दूर करने का सर्वोत्तम उपाय है, ये हमारी बहुत सहायता करता है। परन्तु ये मन्त्र लेते हुए आपको अत्यन्त विनम्र अवस्था में होना चाहिए। आखिरकार मैं हूँ कौन? इतने सारे सितारों और सुन्दर वस्तुओं को देखने वाला 'मैं' कौन हूँ? मैंने क्या किया है? क्यों मुझे इतना अहंकारी होना चाहिए? मुझे ये क्यों सोचना चाहिए कि मैं बहुत महान हूँ? अन्य लोग भी आपके अहं को बढ़ावा देते हैं क्योंकि वे आपसे लाभ उठाना चाहते हैं। वो आपके अहं को बढ़ावा देंगे, कहेंगे कि ये बहुत महान बात है, आप बहुत महान हैं, और आप उन्मत हो जाएंगे मानो आपको मूसलधार वर्षा में फैंक दिया गया हो, और अहंकारग्रस्त लोगों की बाढ़ की तरह से आप पनप उठते हैं। अपने इर्द–गिर्द यदि आप देखें तो आधुनिक काल में सभी लोग अपने अहं के प्रति अत्यन्त सजग हैं। जिस प्रकार उनके नाम समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में आते हैं मुझे आश्चर्य होता है। वहाँ मेरा नाम यदि छपता तो मुझे लज्जा आती क्योंकि यह मात्र आपके अहंकार की अभिव्यक्ति है और कुछ भी नहीं। लोग भिन्न प्रकार के कार्य आरम्भ करते हैं, ये उनके अहं की स्पर्धा है। बहुत प्रकार की स्पर्धाएं हैं जैसे सौन्दर्य स्पर्धा, मिस्टर इंडिया स्पर्धा आदि। ये सभी चीज़ें व्यक्ति के अहं को बढ़ावा देती हैं और लोग इन स्पर्धाओं के पीछे दौड़ते रहते हैं। वो सोचते हैं 'क्यों न मैं भी ऐसा ही बनूं? तो ये सभी चीज़ें मृतपर्याय करने वाली हैं और आपके मस्तिष्क को पूरी तरह से ढक लेती हैं और आप सोचते हैं कि सफलता प्राप्त करने का यही तरीका है। इस प्रकार की सफलता अधिक समय तक नहीं चलती। शीघ्र ही समाप्त हो जाती है।

सहजयोग में प्राप्त की गई सफलता शाश्वत होती है। जिस व्यक्ति में इस प्रकार का विनम्र स्वभाव है उसे पीढ़ियों तक याद किया जाएगा। किसी अहंकारी व्यक्ति का पुतला मैंने कहीं लगा हुआ नहीं देखा। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति अहंकारी था तो लोगों ने उसे विशेष रूप से अहंकारी कहा। अब भी ये बात असम्भव है कि किसी अहंकारी व्यक्ति की प्रशंसा में गीत गाए जाएं या उसका पुतला लगाया जाए।

तो अपने हृदय में हम विनम्र लोगों को पसन्द करते है और यदि हम चाहते है कि अन्य लोग भी हमें पसन्द करें तो हमें भी विनम्र होना चाहिए। दिखावे के तौर पर नहीं, वास्तव में, ये समझकर की हम क्या हैं, हमें गर्व क्यों होना चाहिए, अन्य लोगों पर क्यों हमें प्रभुत्व जमाना चाहिए और उन्हें कष्ट देना चाहिए। आप यदि ये बात समझ लें तो आपने ईसामसीह के महान अवतरण के प्रति न्याय किया है। उन्होंने अपने बहुत से गुणों की अभिव्यक्ति की परन्तु अपने जीवन का बलिदान करके अहं चक्र का भेदन ही उनका महानतम संदेश है और ये बात हमें समझनी चाहिए। अपने आपको इसाई कहने वाले सबसे अधिक अहंकारी हैं। मैं हैरान थी कि इंग्लैण्ड में अंग्रेज लोग अत्यन्त अहंकारी हैं। पश्चिम के अन्य देशों में भी मैंने देखा है कि लोग अहंकारवादी हैं। भारतीयों के मुकाबले उनमें विनम्रता का पूर्ण अभाव है और वे अत्यन्त अहंकारी हैं क्यों? क्योंकि वे ईसा–मसीह का अनुसरण करते हैं? क्या इस बात की कल्पना आप कर सकते हैं? ईसामसीह का अनुसरण करने का क्या यही तरीका है? स्वयं को ईसाई कहलाने वाले और स्वयं को ईसामसीह का अनुयायी बताने वाले लोगों को अपने जीवन में ईसामसीह की वह विनम्रता, करुणा व प्रेम दर्शानें चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं है।

अतः पश्चिमी देशों से आए हुए आप सभी लोग सहजसंस्कृति को सीखने का प्रयत्न करें। सहज संस्कृति में हम किस प्रकार बात करते हैं, किस प्रकार रहते हैं, किस प्रकार एक दूसरे से सम्पर्क करते है? यह एकदम भिन्न है। एक बार जब आप सहज संस्कृति को अपने जीवन में उतार लेंगे तो, आप हैरान होंगे कि, आपके पारस्परिक तालमेल को देखकर अन्य लोग भी दंग रह जाएंगे कि किस प्रकार आप हर चीज की कितनी अच्छी तरह से देखभाल करते हैं!

सहजयोगियों के रूप में इस संसार में रहना सर्वोत्तम है। यहाँ न अहं है न बन्धन। ऐसा कुछ भी नहीं हैं। इन सभी दुर्गणों से आप पूर्णतः मुक्त हैं। तब आप हैरान होंगे कि लोग किस प्रकार आप पर विश्वास करते हैं, किस प्रकार आपको चाहते हैं। आप सब लोगों को मैं ईसामसीह के जन्मदिवस पर शुभकामनाएं देती हूँ और आशा करती हूँ कि आप ईसामसीह के सन्देश और उनके जीवन को सदैव याद रखेंगे।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

सार्वजनिक कार्यक्रम

नेहरु स्टेडियम, दिल्ली–26.3.2001

परम् पूज्य मातांजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य को खोजने वाले और जिन्होंने सत्य को खोज भी लिया है, ऐसे सब साधकों को हमारा प्रणाम। दिल्ली में इतने व्यापक रूप से सहज योग फैला हुआ है कि एक ज़माने में तो विश्वास ही नहीं होता था कि दिल्ली में दो चार भी सहज योगी मिलेंगे! यहाँ का वातावरण ऐसा उस वक्त था कि लोग सत्ता के पीछे दौड़ रहे थे और व्यवसायिक लोग पैसे के पीछे दौड़ रहे थे। तो मैं ये सोचती थी कि ये लोग अपनी आत्मा की ओर कब मुड़ेंगें? पर देखा गया कि सत्ता के पीछे दौड़ने से वह सारी दौड़ निष्फल हो जाती है। थोड़े दिन टिकती है, ना जाने कितने लोग सत्ताधारी हुए और कितने उसमें से उपर उठ गए। उसी तरह जो लोग धन प्राप्ति के लिए जीवन बिताते हैं, उनका भी हाल वही हो जाता है क्योंकि कोई सी भी चीज़ जो हमारी वास्तविकता से दूर है, उसके तरफ जाने से अंत में यही सिद्ध होता है कि ये वास्तविकता नहीं है। उसका सुख, उसका आनंद, क्षण भर में भंगुर हो जाता है, खत्म हो जाता है। इसी वजह से मैं देखती हूँ कि दिल्ली में लोगों में इस कदर से जागृती आ गई है।

ये जागृती आपकी अपनी संपत्ति है। ये आपके अपने शुद्ध हृदय से पाई हुई प्रेम की बरसात है। इसमें न जाने हमारा लेना देना कितना है? किन्तु समझने की बात ये है कि गर आपके अंदर ये सूझ–बूझ नहीं होती तो इस तरह से ये कार्य संपन्न नहीं हो सकता था। इसमें ये ही समझना हैं कि अनेक संतों ने इस देश में मेहनत की। हर एक के घर–घर में उनके बारे में चर्चा होती है और उन संतों के बारे में बहुत कुछ मालुमात बुजुर्गों को तो है ही, पर बच्चों को भी हो जाती है। धीरे–धीरे ये बात जमती है कि आखिर ये लोग ऐसे कौन थे जिन्होंने इतना परमार्थ साध्य किया। पता नहीं कैसे इतने व्यवसायिक लोग, जिनका सारा ध्यान रात दिन पैसा कमाने में, सत्ता कमाने में जाता है, वो मुड़ कर सहज योग में आ गए हैं! क्योंकि उनकी वो जो खोज थी उसमें आनंद नहीं था, उसमें सुकून नहीं था, शान्ति नहीं थी, किसी प्रकार का विशेष जीवन नहीं था। जब मनुष्य ये पता लगा लेता है कि उसके अन्दर कोई ऐसी वास्तविक आनंद की भावना आई नहीं, ना ही उसने कोई उस सुख को पाया जिसके लिए वह संसार में आया। ना जाने

कैसे एक जोत से अनेक जोत जलती गई ! आज मैं देखती हूँ कि हज़ारों लोग यहाँ पर आज उपस्थित हैं जिन्होंने अपने अंदर की अंतरात्मा को पहचाना है।

सबसे पहले जान लेना चाहिए कि हमारे अंदर जो बहुत सी त्रुटियां हैं उसका कारण है कि हम लोगों ने धर्म को समझा नहीं। जो कुछ धर्म–मार्तण्डों ने बता दिया, हमने उन्हीं को सत्य मान लिया। उन्होंने कहा कि आईये आप कुछ अनुष्ठान करिए या कुछ पूजा–पाठ करिए या और हर तरह की चीज़ बताई। मुसलमानों को भी इस तरह से पढ़ाया गया कि तुम गर इस तरह से नमाज़ पढ़ो और मुल्लाओं के कहने पर चलो तो तुम्हें मोक्ष मिल जाएगा। अब मनुष्य सोचने लगा कि ऐसा तो कुछ हुआ नहीं। ऐसी तो कोई प्राप्ति हुई नहीं, फिर ये है क्या। ये कर्मकाण्डों में हम क्यों फंसे हुए हैं और ये कर्मकाण्ड हमें बहुत ही गहरे अन्धकार में ले जाते हैं। हम लोग सोचते हैं कि इस कर्मकाण्ड से हम कुछ पा लेंगे, सो किसी ने पाया नहीं। जन्म जन्मांतर से लोगों ने कितने कर्मकाण्ड किए, उन्होंने क्या पाया! अब पाने का समय भी होगा। आज इस कलियुग में ये समय आ गया। ऐसा आया है कि आपको सत्य प्राप्त हो। सत्य की प्राप्ति। यही सबसे बड़ी चीज़ है। सत्य ही प्रेम है और प्रेम ही सत्य है। इसकी ओर आप ज़रा विचार करें कि हम सत्य को खोजते हैं तो सोचते हैं कि सन्यास ले लें, हिमालय पर जाएं, अपने बाल मुंडा लें और और तरह की चीज़ें करें। जब सत्य का वास अंदर है तो बाह्य की चीज़ों से और उपकरणों से क्या होने वाला है? इससे तो मनुष्य पा नहीं सकता सत्य को, क्योंकि इसके साथ कुछ सत्य लिपटा ही नहीं है।

तो करना क्या है? करना ये है कि आपके अंदर जो सुप्त शक्ति कुण्डलिनी की है, उसे जागृत करना है। अब कुण्डलिनी की शक्ति आपके अंदर है या नहीं, ऐसी शंका करना भी व्यर्थ है। हरेक इंसान के अंदर त्रिकोणाकार अस्थि में कुण्डलिनी की शक्ति है और उसे जागृत करना बहुत ही ज़रूरी है, जिससे कि आप उस चीज़ को प्राप्त करें, जिसे मैं कहती हूँ, 'सत्य, वास्तविकता'। सबने कहा है अपने को जानो, अपने को पहचानो। लेकिन कैसे? हम तो अपने को जानते ही नहीं। हम जो हैं अंदर से न जाने कितनी त्रुटियों से भरे हुए हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, सब तरह की चीज़े हमारे अंदर हैं और हम ये नही समझ पाते कि ये कहाँ से सब आ रही हैं और क्यों हमें इस तरह से ग्रसित किया हुआ है। इस चीज़ को गर आप ध्यान पूर्वक समझें तो एक बात है कि ये त्रुटियां जो हैं ये सब बाह्य की हैं। आत्मा शुद्ध निरंतर है। उसके ऊपर कोई भी तरह की लांछना नहीं आती और जब यह आई हैं तो ये किसी

वजह से आई होगी। हो सकता है कि आपकी परंपरागत ही आई हो, पूर्वजन्म से आई, माँ बाप से आई, समाज से आई, ना जाने कहाँ कहाँ से ये सब चीज़ें आपके अंदर समाविष्ट हुईं? अब इसके पीछे गर खोजते रहें कि ये कहाँ से आई, क्या हुआ, इससे अच्छा है कि इसे किसी तरह से नष्ट कर दें। ये हमारे अंदर जो खराबियाँ हैं, ये ही नष्ट हो जाएं तो फिर क्या? हम एक शुद्ध चित्त बन जाते है। इसकी व्यवस्था जिस परमेश्वर ने आपको बनाया उसने की है। अब आपके अंदर इतनी ही स्वतंत्रता है कि आप अपने को पहचानने के लिए जो सर्व सिद्ध प्रक्रिया है उसको अपनाएं। और वो प्रक्रिया है कुण्डलिनी जागरण की। मैं ये बात कह रही हूँ, ऐसा नहीं है।

अनादि काल से अपने भारत वर्ष में कुण्डलिनी और कुण्डलिनी के जागरण की बात की गई। हाँ हालांकि उस वक्त में कुण्डलिनी का जागरण बहुत कम लोगों को प्राप्त होता था और बहुत मुश्किलें होती थी। लेकिन इसका भी समय आ जाता है कि ये सामूहिक हो जाए, और आज यही बात है कि सामूहिक स्थिति में आपने कुण्डलिनी का जागरण पाया है। अब इस सामूहिक स्थिति पे आ कर के जब आप कुण्डलिनी के जागरण से प्लावित हुए और जब आपके अंदर एक विशेष रूप का चैतन्य स्वरूप व्यक्तित्व प्रकट हुआ है उस वक्त आपको ये सोचना चाहिए कि वास्तविक मैं तो ये हूँ और आज तक ना जाने किस चीज़ के पीछे भ्रामकता में मैं चला। ये सब होता गया, आपके अंदर जमता गया, बनता गया और ये सब आपके सुबुद्धि, दुर्बुद्धि और न जाने किस चीज़ से जुटता गया। सबसे बड़ी बात है कि **हमें अपने को गर पहचानना है तो सर्वप्रथम हमारा संबंध उस चारों तरफ फैली हुई चैतन्य सृष्टि से होना चाहिए। चैतन्य से एकाकारिता प्राप्त होनी चाहिए और उसके लिए, चैतन्य से एकाकारिता के लिए कुण्डलिनी ही उसका मार्ग है। और कोई मार्ग नहीं। कोई कुछ भी बताए, और कोई मार्ग है नहीं। लेकिन लोग आपको भुलावे में डालते है और लोग भटकने लगते है,** जैसे मैं एक बार एक गुरु जी का प्रवचन सुन रही थी, तो उन्होंने शुरू में ही गालियाँ देनी शुरू कर दीं। तो उन्होंने कहा कि आप लोग विकृत हैं। माने गाली हो गई। आप लोग विकृत हैं और आप के जो तरीके हैं उसमें आप भगवान को नहीं खोज रहे हैं। आप प्रवृत्ति मार्गी हैं, आप हरेक चीज़ की तरफ दौड़ते हैं। ये तो बात सही है। आप सब इस तरह से एक तरफ से दूसरी तरफ दौड़ते हैं और दौड़ कर के आप अपने को खो जाते हैं। इस दौड़ में, इस तरह की प्रवृत्ति में हमारी सारी ही शक्ति नष्ट हो जाती है। आज ये चाहिए तो कल वो चाहिए तो परसों वो चाहिए। भाग रहे हैं इधर से उधर, उधर से उधर व उधर से

उधर। अब ये जो उन्होंने गाली बक दी थी कि आप प्रवृत्ति मार्गी हैं तो उसको लोग मान लेते हैं कि अच्छा हम प्रवृत्ति मार्गी हैं। और वो दूसरों के लिए कहते हैं कि आप निवृत्ति मार्गी हैं नहीं तो क्यों आप आत्मा को प्राप्त कर रहे हो? गर आप निवृत्ति मार्गी हैं यानि आपकी वृत्ति अगर इधर–उधर नहीं दौड़ती तो आप आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं। तो पहले ही इस तरह की कठिन समस्या उपस्थित कर दी कि सर्व साधारण मनुष्य अपने को सोचेगा कि हाँ भई, मैं तो हूँ प्रवृति मार्गी। तो वो कहेंगे कि अच्छा ठीक है। आप गुरुओं की सेवा करो, उनको पैसा दो, ये मेहनत करो, ये कर्मकाण्ड करो। इधर पैसा लगाओ, उधर पैसा लगाओ और जिस तरह से भी हो सके तुम सब कुछ अपना परमेश्वर को दे दो और उसके बाद सन्यास ले लो। आपको ये बात समझ में आ जाती है कि भई ये आसान चीज़ है। पर ये अंधों की बात है। अच्छे भले आँख होते हुए भी यदि कोई अगर कहे कि तुम अंधे हो तो क्या इसे मान लेना चाहिए? कोई कहे कि आप प्रवृत्ति मार्गी हैं तो क्या इसे मान लेना चाहिए? अगर आपके अंदर निवृत्ति नहीं हैं तो आप ज्ञान मार्ग मतलब सहज योग में नहीं आ सकते। इस तरह की एक भाषा ये लोग व्यवहार में लाते हैं। उससे सर्व साधारण जनता ये कहती है कि भई हमारे लिए तो यह ठीक है कि गुरुओ की सेवा करो, उनको सब दो, उसको सब समर्पण दो। इस तरह की जो हमारे अंदर गलत धारणाएं बैठ जाती हैं और उसे हम मान भी लेते हैं क्योंकि हमारे अंदर विश्वास ही नहीं है कि हम कभी अपनी आत्मा को पा सकते हैं और जिससे हम अपने को जान सकते हैं। विश्वास रखो, यहाँ आज बहुत से लोग ऐसे बैठे हैं कि जिन्होंने कुण्डलिनी का जागरण और उसकी विशेषताओं से पूर्णतया अपने जीवन को प्रफुल्लित किया हुआ है। आप लोग सभी इस प्रकार इस चीज़ को पा सकते हैं। आप में कोई कमी नहीं है, कोई कमी नहीं है। ये शक्ति आप सबके अंदर है। आपने कुछ भी किया हो, आपने कोई भी गलत काम किया हो, आप परमात्मा के विरोध में भी खड़े हुए हों, चाहे जो भी किया हो, ये कुण्डलिनी तो अपनी जगह पर बैठी हुई है, जब कोई उसको जगाने वाला आएगा तो वो जग जाएगी और ये जो बाह्य की चीज़ें हैं जिसको प्रवृत्ति कहते हैं, ये जो आपके अंदर षडरिपु हैं ये एकदम झड़ जाएंगे। जब आप देखते हैं कोई बीज आप माँ के उदर में डालते हैं तो अपने आप प्रस्फुटित होता है। बीज में तो कुछ नहीं दिखाई देता पर जब वो माँ के पेट में जाता है तो वो अपने आप प्रस्फुटित हो जाता है। इतना ही नहीं, उसके अंग प्रत्यंग में जीवन आ जाता है। उसी प्रकार कुण्डलिनी के जागरण से आप जागृत हो जाते हैं और आप के अंदर की जो वृत्तियाँ हैं, जो नाशकारी हैं, जो गलत हैं वो अपने आप झड़ जाती हैं। ये बड़ा आश्चर्य का विषय है किन्तु ऐसे बड़े

आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि यह घोर कलियुग है, ये घोर कलियुग है और इसके प्रताप से न जाने कितने लोग झुलस गए? अब इसी कलियुग में ये कार्य होने वाला है और इसी कलियुग में आप इसे प्राप्त करने वाले हैं। उस परम तत्व को आप प्राप्त करने वाले हैं जो आपके अंदर आत्मास्वरूप विराजित है। उसके प्रकाश में आप अपने को जानेंगे। आप जानेंगे कि आप के अंदर से कौन से कौन से दोष गिर गए और अब आप शुद्धचित्त वाले आत्मा स्वरूप हो गए। इसको जब आप जान लेंगे कि आप की ये स्थिति है, और यही सच्चाई है, तो जितनी झूठी बातें हैं, आप छोड़ देंगे। उससे क्या फायदा? किसी भी झूठी बात को साथ ले कर के आप कहाँ जा सकते हैं? **पर तब तक झूठ नहीं दिखाई देता जब तक आपकी आत्मा जागृत नहीं होती। आत्मा के प्रकाश में ही आप उस झूठ को समझ सकते हैं जो आपको हर तरह से भुलावे में रखता है।**

इस भुलावे में हर तरह के लोग घूम रहे हैं। आप दुनिया की तरफ नज़र करें। किसी भी धर्म का नाम ले करके आज लड़ रहे हैं। अरे भई जब धर्म है, जब एक ही परमात्मा है तो लड़ क्यों रहे हो? पर इस तरह के भुलावे तैयार हो जाते हैं, दिमागी जमाखर्च ऐसा बन जाता है और उसको लोग अपना लेते हैं। उसका कारण यही है कि उनकी समझ में अभी प्रकाश नहीं। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो आपका संबंध उस परम चैतन्य की शक्ति से हो जाता है और ये संबंध बड़ा माना हुआ हैं। आइन्सटीन जैसे इतने बड़े वैज्ञानिक ने यह कहा हैं कि जब आपका संबंध (Torsion Area) (टोर्शन क्षेत्र) उसको कहते हैं, होता है तो अकस्मात ऐसी चीज़े होती हैं, इस तरह से आप शांतचित्त हो जाते हैं कि उस शांत चित्त में न जाने कितनी उपलब्धियाँ होती हैं और न जाने कितने तरह के नए–नए आपको प्रयोग मिलते हैं और नई–नई उपलब्धियाँ होती हैं।

ये सारी चीज़े होते हुए भी जब लोग बार–बार जग कर सो जाते हैं और सो करके फिर जगते हैं, ऐसी भी दशा चलती है। ऐसे लोग नहीं होते कि जो एक बार पार हो गए सो हो गए। उसके बाद उनकी गहनता कितनी है इस पर निर्भर हैं। गर आप गहन हैं तो ये चीज़ आपके अंदर जब जागृत होती हैं तो उसका बड़ा गहन अनुभव होता है। आप एकदम निर्विचारिता में चले जाते हैं। आज ही मैं बता रही थी कि मनुष्य विचार क्यों करतें है? हर समय, हरेक चीज़ पर देखना और उस पर विचार करना। कोई चीज़ है जैसे ये अब कारपेट है। ये कहाँ से आई होगी? कितने की होगी? क्या होगा? दुनिया भर की झंझट इसके लिए होगी। बजाए इसके कि कितना सुन्दर है, उसका सौन्दर्य, उसका आनंद लें, मनुष्य सोचते ही रहता है! इस तरह के सोच विचार से मनुष्य कभी–कभी पगला भी जाता है।

तो किसी भी चीज़ की ओर देख कर उस पर प्रक्रिया करना, react करना, इससे बढ़ के और कोई गलती नहीं है। क्योंकि जब आप प्रक्रिया कर रहे हैं या react कर रहे हैं किसी चीज़ पर तो वो आप अपने अहंकार के कारण या आपके अंदर जो सुप्त–चेतन है, जिसे कि (Conditioning) कहते हैं, उसके कारण कर रहे हैं। आप इसलिए नहीं कर रहे हैं क्योंकि आप उसे पूरी तरह से देख रहे हैं। वो साक्षी स्वरूपत्व आप में नहीं है। उस चीज़ को आप पूरी तरह से देखें। अगर आप पूरी तरह से उसे देख सकते हैं तो उस चीज़ का आनंद आपके अंदर पूरी तरह से समा जाएगा। सबसे तो बड़ी बात ये है कि इस दशा में आने की बात बहुतों ने कही है। मैं कह रही हूँ ऐसी बात नहीं है। पर वो बहुत से लोग समझ नहीं पाए होगें या उस वक्त ये भी सोचा होगा कि ये कैसे हो सकता है? हम तो एक मानव हैं, ये कैसे हो सकता है? कुण्डलिनी के जागरण से सब हो सकता है और जब कुण्डलिनी आप सब के अंदर वास्तव में है, वो स्थित है वहाँ तो सिर्फ उसके जागरण की बात है। ये आपका धरोहर है। ये आपकी अपनी चीज़ है, जिसे आपने खरीदी नहीं उसके लिए कोई पैसा नहीं दिया, उसके लिए किसी भी तरह की याचना नहीं की। वो अंदर है, वो स्थित है। सिर्फ उसकी जागृति होने का विचार होना चाहिए।

अब ये कुण्डलिनी शक्ति जो है ये आपकी बड़ी शुद्ध इच्छा है। शुद्ध इच्छा हमारे अलावा कोई हैं नहीं। जैसे कोई साहब, वो कहेंगे भई साहब "मैं चाहता हूँ कि मेरे पास एक मोटर आ जाए"। अच्छा भई, आ गई मोटर। तो उसका आनंद ही नहीं उठाया, फिर लगे कुछ दूसरा ढूँढने। फिर वो चीज़ हो गई तो लगे फिर तीसरी चीज़। तो इसका मतलब आपकी वो इच्छाएं शुद्ध नहीं थीं। **गर वो शुद्ध इच्छा होती तो आप तृप्त हो जाते। ये कुण्डलिनी शक्ति आपकी शुद्ध इच्छा है और ये परमेश्वरी इच्छा है। ये जब आपके अंदर जागृत हो जाती है तो आप तृप्त हो जाते हैं।** तृप्त हो जाते हैं माने आप सोचते हैं कि ये जो मेरा मन, ये चाहिए, वो चाहिए, वो चाहिए करता था उसके जगह अब मैं ऐसे सुन्दर बाग में आ गया हूँ जहाँ सुगंध ही सुगंध, आनंद ही आनंद, शन्ति ही शन्ति और प्रेम ही प्रेम बसा हुआ है। ये जब स्थिति आपकी आ जाती है तो फिर आप मुड़ कर नहीं देखते ऊधर जो गलत चीज़ है। अधिकतर, होते हैं ऐसे भी कुछ लोग जो फिर–फिर गिरते हैं, उठते हैं, फिर गिरते हैं। पर सहजयोग में जिसने एक बार इसे प्राप्त किया वो इतनी महत्वपूर्ण चीज़ है और इतनी सहज में होती है। उसके लिए कुछ करना नहीं, उसके लिए आपको पैसा देना नहीं। कोई चीज़ नहीं, प्रार्थना नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ आपके अंदर शुद्ध इच्छा होनी चाहिए कि मैं अपने आत्मा को प्राप्त करूं। इस शुद्ध इच्छा से ही आप इसे प्राप्त करेंगे। सिर्फ मन में यही एक इच्छा

रखें कि मेरी कुण्डलिनी जागृत हो जाए। ये इच्छा ही इतनी प्रबल है कि उससे अनेक लोग, अनेक देशों में मैंने देखा कि, एकदम से पार हो गए। जैसे एक देश है बेनिन। वहाँ पर, पहले वो मुसलमान लोग थे और वो फ्रेंच लोगों से इतने घबड़ा गए थे कि उन्होंने मुसलमान धर्म ले लिया। मुसलमान धर्म लेने के बाद भी वो संतुष्ट नहीं थे। उससे भी परेशान, उससे भी झगड़े, ये वो। पर उनको जब सहजयोग मिल गया तो सब छोड़ छाड़ के अब मज़े में हैं। आपको आश्चर्य होगा कि आज वहाँ भी 14,000 सहजयोगी हैं। वो सब मुसलमान।

मैं तो मुसलमान उनको मानती हूँ कि जिनके हाथ में चैतन्य आए। जिनके हाथ बोलेंगे। आज कियामा का ज़माना है। गर आप के हाथ बोल सकते हैं तो आप मुसलमान हैं वरना हैं नहीं। मुसलमान का मतलब हैं समर्पण। जब तक आपके हाथ नहीं बोलते आप क्या समर्पण करेंगे? इस तरह से गलत फहमी में पड़े हुए लोग न जाने क्या–क्या चीज़े बना दें! इसके लिए ये नहीं है कि आप किसी गर वेद–शास्त्र पढ़े हुए हैं या आप बड़ी तीर्थ यात्रा करते हैं और आप दुनिया भर के ब्राह्मणों को, कहना चाहिए कि आज हमारे पड़ोस में एक बड़े ज़ोरों में मंत्र बोलने लग गए, ऐसे लोगों को आप प्रोत्साहित करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उनको पैसा देते हैं, इससे कुछ नहीं होने वाला। ये सब बेकार की बातें हैं। बेवकूफी की बातें हैं। समझदारी क्या है कि आपको क्या मिला? आपने सब दिया, आपको क्या प्राप्त हुआ? आपको क्या मिला? क्या आपको अपना आत्मसाक्षात्कार मिला?

आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आप जानेंगे कि आप क्या हैं और क्या आपकी शक्तियाँ हैं, और क्या कर सकते हैं आप? आप कितने समर्थ हैं? जब तक आपका अर्थ ही नहीं मिलता आप समर्थ कैसे होंगे? इस समर्थता में आप अनेक कार्य कर सकते हैं। मैं तो इतने आश्चर्य में हूँ कि परदेश में जब मैं रहती हूँ तो ये परदेसी, इन्होंने तो कुण्डलिनी का नाम भी नहीं सुना था। पर जब से पार हो गए तो न जाने क्या–क्या चमत्कार कर रहे हैं दुनिया भर की चीज़ों में। पर जब ये मुझे बताते हैं तो मैं सोचती हूँ कि ये चमत्कार का भण्डारा जो है, ये कैसे एकदम से खुल गया? ये लोग इसे कैसे प्राप्त हुए? सब तरह से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आपकी पूर्णतया प्रगति हो जाती है और आप इसे आत्मसात कर लेते हैं। इतनी सुन्दर चीज़ है कि अपनी आत्मा को आप जान लें। आप ही के अंदर यह हीरा है। आप ही के अंदर ये ज्ञान हैं। आप ही के अंदर ये सब कुछ है। सिर्फ उसका मार्ग जो है सिर्फ कुण्डलिनी जागरण है और कोई नहीं। ये मैं आपसे इसलिए बताना चाहती हूँ कि बहुत बार मुझे लोग प्रश्न पूछते हैं कि कुण्डलिनी के सिवाय और कोई मार्ग हैं? मैंने कहा और कोई मार्ग नहीं। सच बात तो ये है। उसमें मेरा लेना–देना

कुछ नहीं। लेकिन आपको तो जो सच है वही बताना है कि कुण्डलिनी के जागरण के सिवाय आपके पास और कोई मार्ग नहीं है जिससे आप अपने को भी जाने और दुनिया को भी जानें। **सारे दुनिया भर के धंधे छोड़ कर के सीधे अपने अंदर बसी इस महान शक्ति का उद्घाटन करना ही आपका परम कर्त्तव्य है।**

आज आप लोगों को यहाँ देखकर इतनी बड़ी तादाद में, मेरा हृदय भर आता है। एक ज़माना था कि मैं दिल्ली को बिल्ली कहती थी। यहाँ तो किसी की खोपड़ी में सहजयोग घुसेगा ही नहीं। वो मैं यहाँ देख रही हूँ कि आप लोगों ने इसे आत्मसात किया और अपनाया और सब तरह का लाभ ही लाभ है। हर तरह का लाभ इसमें हैं। और गर महालक्ष्मी की कृपा हो जाये तो अपना देश भी एक बहुत बड़ा सुरम्य और बहुत वैभवशाली देश हो सकता है। इसलिए सबको सामाजिक रूप से इसे फैलाना चाहिए और इस सामाजिक रूप में हर तरह का पहलू हमें पहचानना है। जहाँ–जहाँ लोगों को तकलीफ है, मैंने कम से कम ऐसे 16 प्रोजेक्ट बनाए हैं जिसमें औरतों को मदद करना, बच्चों को मदद करना, बीमारों को मदद करना, बूढ़ों को मदद करना, खेतिहर लोगों को मदद करना आदि अनेक से Projects बनाए हैं कि जिसमें सहजयोग कार्यशील हो। और इस कार्य को जो करते हैं वो समझते हैं कि ये हमारे अंदर इतनी शक्ति कहाँ से आई? हम रोगों को ठीक करते हैं। पागलों को ठीक करते हैं और सबको व्यसन से छुड़ाते हैं। ये सब शक्तियाँ हमारे अंदर कैसे आई?

ये शक्ति आपके अंदर आने का एकमेव साधन है, कुण्डलिनी का जागरण। और उसको जागृत रखना चाहिए। ईधर–उधर भटकने वाले लोगों को, ये ठीक है कि वो एक जगह ज़रा रुक जाएं और देखे कि आप हैं कौन आप कितनी महान वस्तु हैं? आप में कितना सामर्थ्य है? और उसे आप किस तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं? मुझे पूर्ण आशा है कि अगले वर्ष मैं जब यहाँ आऊँ तो इससे भी दूने लोग यहाँ रहें। इतनी ही नहीं, वो लोग कार्यान्वित हों। सहजयोग में, उसको पा करके आपको सन्यास लेने की ज़रूरत नहीं, हिमालय पर जाने की जरूरत नहीं। यहीं, यहीं इस समाज में रह कर के सहजयोग को फैलाना है और इस तरह से विश्व में एक विशेष सहज समाज बनाना है। इस सहज समाज में वो ही करना चाहिए कि जो सारे संसार का उद्धार कर सकता है। जितनी इसकी त्रुटियाँ है उनको बिल्कुल पूरी तरह से नष्ट कर सकता है। ये कार्य आप लोग सब कर सकते हैं और इसलिए आप सब से मैं बार–बार यही कहूँगी कि अपनी जागृति कर लीजिए। **मनन करें, मनन से जागृति बनी रहेगी और जो दोष हैं वो धीरे–धीरे बिल्कुल निकल जाएंगे। इससे आप एक सुन्दर स्वरूप, बहुत ही बढ़िया व्यक्ति हो जाएंगे।** ऐसे अगर व्यक्ति समाज में हो

जाएं तो दुनिया भर की ये जो आफतें मची हुई हैं, दुनिया में मारा–मारी और इस तरह के घोर अत्याचार हो रहे हैं, ये सब रुक जाएंगे। क्योंकि आप एक सुन्दर मानव प्रकृति बन जाएंगे और इन सब चीज़ों से आप दूर रह कर के भी इन पर अपना प्रकाश डाल सकते हैं और सब ठीक कर सकते हैं। आज के इस वातावरण में मनुष्य घबड़ा सकता है कि ये हो क्या रहा है? कैसे हो रहा है? इन सबका एक ऐसे सोचना चाहिए कि एक दिन आता है कि सब चीज़ सामने आ के खड़ी हो जाती है और इतने दिन से चलने वाली ये चीज़ एकदम से उद्घटित हो जाए। इसका कारण क्या? कि सब लोगों ने अभी तक आत्मा को वरण नहीं किया। गर आत्मा को आप अपना लें तो इस तरह की न गलतियाँ होंगी न ऐसी चीज़ आगे चलेगी। तो अब ऐसी रुकावट आ गई है, इंसान हठात् खड़ा हो जाता है और सोचता है ये है क्या? ये है यही कि आप भटक गए हैं और कुछ लोग तो खाई में गिर गए, भटक कर। यही चीज़े हैं, इसको समझने की कोशिश करनी चाहिए। इतने सालों से अपने देश में जो महापाप चल रहा था वो आज उद्भव हुआ। सामने आ कर खड़ा हो गया। छोटे से परिमाण में, हो गया। इससे जागृत होने की जरूरत है कि कहीं हम भी इस भटकावे में तो चल नहीं रहे। हम भी इस तरह लुढ़क तो नहीं रहे कि जहाँ हमें नहीं जाना चाहिए।

आपको आश्चर्य होगा कि आजकल हिन्दुस्तान में तो मैं ये देखती हूँ हरेक को ये बीमारी हो गई है। जो देखो वो ही पैसा बनाता है, जो देखो वो ही चाहता है कि किस तरह से नोच–खसोट लें! अच्छा, परदेस में नहीं है। परदेस में ऐसा नहीं है। यानि मुझे खुद हमेशा घबराहट लगी रहती है कि लोग मेरे पास इसलिए आ रहे हैं कि किस तरह से मुझसे पैसा निकालें। अब ये पैसा मेरा जो है ये समाज कार्य के लिए है। इसलिए नहीं कि कोई चोर उच्चके आएं और मुझे लूट लें। पर वो कोशिश करते हैं। इसी प्रकार एक तरह की अपने यहाँ एक भावना आ गई है कि जैसे भी हो पैसा बनाएं। पर ये लक्ष्मी नहीं है। ये अलक्ष्मी है, क्योंकि आप तक जब लक्ष्मी आएगी तो वो बहुत चंचल है। बहुत चंचल है और वो ऐसे रास्ते पर ले जाएगी कि आपके अंदर अलक्ष्मी आ जाएगी, और उस अलक्ष्मी में आपको समझ नहीं आएगा कि क्या करना है। इसलिए किसी भी चीज़ की ज़्यादती करने से पहले सोच लेना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं? कहाँ अग्रसर हो रहे हैं? कौन से जंजाल में फंस रहे हैं? तो इस तरह की जो भावनाएं हमें हैं कि पैसे के मामले में हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए और दूसरे का पैसा कैसे निकाल सकते हैं वो करना चाहिए, ये चलने वाला नहीं। पैसा क्या उठा कर आप अपने साथ ले जाएंगे? ये सारा कुकर्म है। ये आप ही की खोपड़ी पर बैठेगा। मैं यह मानती हूँ क्योंकि यह घोर कलियुग है और इसी के साथ एक और चल

रहा है उसे मैं कृतयुग कहती हूँ। जब ये परम चैतन्य कार्यान्वित है, कार्यान्वित है और ये परम चैतन्य वो कार्य कर रहा है जिससे बार–बार ऐसे लोगों को ठोकरें लगेगीं और वो समझ जाएंगे कि ये हम बहुत ही सामाजिक हित के विरोध में हैं। गर आपको लोगों का हित पाना है तो आपके अंदर शक्ति है उसे आप जागृत करें और उनका हित सोचें। किन्तु हित के मामले में भी स्वार्थ नहीं होना चाहिए। असल में अपने यहाँ शब्द भी इतने सुन्दर हैं! स्वार्थ, माने स्व का अर्थ। क्या आपने अपने स्व का अर्थ जाना है? स्व का अर्थ जान लेना ही स्वार्थ है और बाकी सब बेकार है। गर ये चीज़ हम लोग समझ लें कि हमने अपने स्व का अर्थ नहीं जाना तो हम उधर ही अग्रसर होएंगे। वहीं हम कार्य करेंगे जिससे स्व का अर्थ जानने की व्यवस्था हो।

इसलिए आजकल की जो भी कुछ कशमकश चली हुई है, झगड़े बाजी चली हुई है, इसकी परंपरा बहुत पुरानी है। अपने देश में स्थित हो गई, पता नहीं कैसे? पहले जब अंग्रेज आए, वो भी यही धंधे करते थे। उन्होंने हमारे यहाँ से कोहिनूर का हीरा ले गए। उनको जब तक आप कुछ उपहार नहीं दो तो वो खुश नहीं होते थे। पर वो थोड़े परिमाण में था। अब तो बहुत ही बड़े परिमाण में हरेक चीज़ है। तब से शुरू हुआ और अब बढ़ते–बढ़ते हमारे राजकारणी लोगों ने शुरू किया और अब आगे बढ़ गया। अब राजकारणी नहीं, बल्कि हरेक आदमी ऐसा हो रहा हैं जो चाहता है कि किस तरह से दगा करें, किस तरह से पैसा लूटें। **इससे मुक्ति का एक ही मार्ग है। वो है सहजयोग। इसी से हमारा समाज व्यवस्थित हो जाएगा। इसी से हमारे समाज में आपसी प्रेम और आदर पनप जाएंगे।** न की हम पैसे का आदर करें।

अब दूसरी बात है सत्ता। सत्ता के पीछे भी लोग पागल हैं। सत्ता चाहिए। काहे के लिए चाहिए सत्ता? किस लिए सत्ता चाहिए? आपकी अपने पे सत्ता नहीं, आप दुनिया भर की सत्ता ले कर करोगे क्या? सत्ता चाहिए। हमें ये होना है। हमें वो होना है। किस दिन के लिए? कौन सा उससे लाभ है? उससे आपका क्या लाभ होने वाला हैं? सत्ता करने के लिए भी बहुत बड़े आदर्श पुरुष हो गए हैं। उनकी हिम्मत, उनका बड़प्पन, उनकी सच्चाई, वो तो है नहीं और सत्ता चाहिए! जैसे कोई आप बंदर को सत्ता दे दीजिए तो वो क्या करेगा? हमारे मराठी में कहते हैं कि बंदर के हाथ में जली हुई लकड़ी दे दीजिए तो वो तो सब कुछ जलाते फिरेगा। वही है आज सत्ता का रूप कि सब बंदर जैसे अपनी सत्ता को इस्तेमाल करते हैं, पैसा कमाने के लिए और पैसा कमाते है सत्ता के लिए! इस तरह इन दोनों के द्वन्द में चलने से आज अपना देश बहुत ही गिर गया है, सामाजिक रूप से। सहज योग उसका इलाज है। सहजयोग में आने से आप समझ जाएंगे कि यह महामूर्खता है और इस मूर्खता को

सहजयोगी नहीं करते। जिस दिन सहजयोग बहुत फैल जाएगा, उस दिन ये सब चीज़े अपने आप नष्ट हो जाएंगी। ये रह ही नहीं सकतीं। इसीलिए आपको समझना चाहिए कि आजकल जो हम घबड़ाए हुए हैं कि अपने समाज का क्या होगा, उसको ठीक करने का भी, उसको सही रास्ते पर लाने का भी उत्तरदायित्व आपका है। आप कर सकते हैं। आप जो सहजयोगी हैं, ये कर सकते हैं और जो नहीं भी हैं उन्हें सहजयोग में लाना चाहिए। हमें अगर अच्छी समाज व्यवस्था चाहिए, अच्छी अगर एक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें कोई किसी को खसोटे नहीं, मारे नहीं और सब लोग आपस में प्रेम भाव से रहें, तो इसका इलाज सिर्फ सहजयोग कर सकता है। सहजयोग दिखने में सीधा साधा है और सबके अंदर शक्ति होने से सब सोचते हैं कि हम तो पार हो गए। पर **इसमें रचना पड़ता है। इसमें रमना पड़ता है और उसके बाद ही इसकी शक्तियाँ पूरी तरह से जागृत होती हैं और उससे आप हिन्दुस्तान ही नहीं सारे संसार का उद्धार कर सकते हैं।** इस उद्धार की व्यवस्था होनी चाहिए। अब इसमें कुछ–कुछ लोग ऐसे हैं कि वो शैतानी के पीछे हैं। उनकी इच्छाएं ही शैतान हैं। ठीक है, ऐसे लोग रह जाएं। मैंने बहुत बार आपसे बताया है कि अब ये जो है, आखिरी Judgement आ गया है। इस वक्त में अगर आप अच्छाई को पकड़ें तो आप उठ जाएंगे और बुराई को पकड़ें तो आप गिर जाएगें।

हमें देखना चाहिए कि किस तरह से जगह–जगह भूकंप आते हैं, तो क्या होता हैं? अभी गुजरात में बड़ा भारी भूकंप आया। वहाँ हमारे सिर्फ 18 सहजयोगी थे। क्योंकि गुजरातियों को पता नहीं क्या सहजयोग से खास मतलब नहीं है! अब टर्की में भी बड़ा भारी भूकंप आया। वहाँ भी जितने सहजयोगी थे सब बच गए। सब, एक से एक और उनके घर भी बिल्कुल सही सलामत। मैंने देखे खुद! **क्योंकि आप परमात्मा के साम्राज्य में आ गए हैं तो आपका संरक्षण है। कोई आपको मार नहीं सकता। कोई आपको नष्ट नहीं कर सकता।** ऐसे ही और भी जगह जहाँ भूकम्प आए, वहाँ भी हमने यही देखा कि सहजयोगी एक भी नष्ट नहीं हुआ, न उसका घर नष्ट हुआ। लातूर की ये बात है, कि लातूर में जहाँ हमारा Centre था उसके चारों तरफ, चारों तरफ खंदक बन गया, चारों तरफ, और बीच में Centre बिल्कुल ठीक रहा और एक भी लातूर का सहजयोगी मरा नहीं। ऐसा हुआ कि चतुर्दशी के दिन गणपति को विसर्जित करते हैं। सबने विसर्जन किया और विसर्जन करके आए और उनमें से जो लोग दुष्ट प्रवृत्ति के थे, उन्होंने शराब ले कर पीना शुरू किया। शराब पी कर के नाच रहे थे और नाचते–नाचते सब ज़मीन के अंदर। पर एक भी सहजयोगी लातूर में किसी भी तरह से, कोई भी बात से वंचित नहीं है। उसका घर जैसे के तैसा रहा, उसकी गृहस्थी, उसके

बच्चे सब ठीक हैं। ये क्या चमत्कार नहीं तो और क्या है? इसी प्रकार आप भी समझ लें कि परमात्मा का जो संरक्षण है वो आपके ऊपर है क्योंकि आप उसके साम्राज्य में गए हैं। इन सारे साम्राज्यों के बाहर इतने ऊँचे आप चले गए कि अब किसी भी चीज़ का भय नहीं। कोई भी चीज़ आपको नष्ट नहीं कर सकती। इस तरह से हमने सहजयोग में अनेक उदाहरण देखे हैं। अनेक लोगों को बीमारी से उठते देखा हैं। ड्रग लेने वाले लोग एक रात में ही बदल जाते हैं। किसी को आश्चर्य होगा कि ये कैसे हुआ! वही बात मैंने कही कि कुण्डलिनी के जागरण से अपने अंदर की सब विकृतियाँ झड़ जाती हैं। इस तरह से हर जगह यह कार्य हो रहा है और लोग इसको अब महसूस कर रहे हैं, इसको समझ रहे है कि परिवर्तन की बहुत ज़रूरत है। इस परिवर्तन के सिवा कुछ भी नहीं बदल सकता कुछ भी ठीक नहीं हो सकता। ये मनुष्य ही है जो सब गड़बड़ करता है और ये मनुष्य ही है जो खुद इसको उठाएगा और इसको बढ़ाएगा। बड़ा विश्वास है मुझे कि जिस तरह से यहाँ सहजयोग बढ़ा है, और भी आगे बढ़ता रहेगा। अनेक प्रांगण में, अनेक स्थिति में इसका प्रकाश चारों तरफ हो पाएगा।

आप सबको अनंत आशीर्वाद।

अब अपने–अपने दायरे में देख लीजिए कि कहाँ आप के सेन्टर हैं। वहाँ आप जाइए और गहन उतरिये। एक दम से पार होने से कुछ नहीं होगा। गहनता आनी चाहिए और उसमें सब कुछ सहजयोग के बारे में जान लीजिए। बारीक से बारीक बात भी वहाँ आप समझ सकते हैं। कोई शास्त्र पढ़ने से मालूम नहीं होगा, कुछ भी कुरान पढ़ने से मालूम नहीं होगा, बाइबल पढ़ने से मालूम नहीं होगा क्योंकि उस वक्त कुण्डलिनी का जागरण हुआ नहीं था और वो इन लोगों पे था जो अभी पार नहीं हुए हैं। उन लोगों के लिए था कि वे किस तरह से इस दशा को प्राप्त करें। पर अब आप तो प्राप्त कर चुके। अब इसके आगे का जो भी कार्य है वो कैसे करना चाहिए इसके लिए आप कृपया अपने घर के थोड़ी नज़दीक या दूर पर भी हो, जहाँ भी आपका वस्तु है उससे पास या दूर तो वहाँ आप Centre पर जरूर जाएं। मुझे आशा है कि इसको आप लोग शिरोधार्य समझेंगे, इसका मान रखेंगे। जो मिला है वो अनंत है, अंनत वर्षों से किसी को नहीं मिला था वो आपने प्राप्त किया है। उसका आप गौरव जानेंगे, जब आप उसकी शक्ति को पाएंगें तो इसको प्राप्त करें और अपना सम्मान रखें। अपनी इज़्जत रखें। आप इसमें उतरते जाइये, गहरे, और मेरा पूर्ण आशीर्वाद है कि आप लोग पूर्णतया सुखी हो जाएँ, पूर्णतया आनंदित हो जाएँ, और पूर्णतया शान्तिमय हो जाएँ। इसके अलावा आप स्वयं शक्तिशाली हो जाएँ।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री बुद्ध पूजा

बार्सिलोना स्पेन – (20.5.1989)

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम श्री बुद्ध की पूजा करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। भगवान बुद्ध, जैसा आप जानते है, गौतम थे। उनका जन्म राजपरिवार में हुआ था। बड़े होकर उन्होंने मनुष्य को तीन तरह के दुखों से कष्ट उठाते हुए देखा और वे सन्यासी बन गए। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इच्छाओं के कारण ही ये तीनों प्रकार की समस्याएं हैं तो उन्होंने कहा कि व्यक्ति यदि इच्छाएं त्याग दे तो वह सभी समस्याओं से मुक्त हो जाएगा। उन्होंने वेद, उपनिषद और अन्य सभी ग्रन्थ पढ़े। वे बहुत से सन्तों और अन्य लागों के पास गए परन्तु उन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ। वास्तव में वे अवतरण थे। अवतरणों को भी भिन्न प्रकार से आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति तक पहुँचना पड़ता है जिस प्रकार सभी संभाव्य शक्तियों को प्रकट होना होता है। परन्तु अवतरणों में बहुत अधिक संभाव्य शक्ति होती है और यदि द्वार खोल दिया जाए तो वह शक्ति अपनी अभिव्यक्ति करती है।

बुद्ध ने ये बात महसूस की कि मानव की सबसे बड़ी समस्या उसका अहम् है। अपने अहम् में व्यक्ति एक के बाद एक अति में चला जाता है, इसलिए सदैव उन्होंने पिंगला नाड़ी पर कार्य किया और हमारे हित के लिए और हमारे अहम् को नियंत्रित करने के लिए स्वयं को पिंगला नाड़ी पर स्थापित कर लिया। आज्ञा चक्र को यदि आप देखें तो इसके मध्य में ईसा मसीह हैं, बाईं ओर श्री बुद्ध हैं और दाईं ओर श्री महावीर। सभी को भगवान (Lord) कहा जाता है क्योंकि वे इन क्षेत्रों के शासक हैं। आज्ञा चक्र का ये क्षेत्र तप का क्षेत्र हैं, तपस्या का क्षेत्र है क्योंकि इन लोगों ने हमारे लिए तपस्या की। अब हमें तपस्या करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि ये अवतरण हमारे लिए सभी प्रकार की संभव तपस्या कर चुके हैं। यही कारण है कि सहजयोगियों को कोई तपस्या नहीं करनी, अपनी सुन्दर चैतन्य लहरियों के साथ वे अत्यन्त सुन्दर स्थिति में हैं। उन्हें जंगलों में जाने की, समाज से दौड़ने की और ऐसे स्थान पर छिपने की जहाँ बिच्छु, सांप, चींटे तथा जीवन के लिए अन्य खतरे हों, कोई आवश्यकता नहीं है। तो तपस्या का कार्य समाप्त हो गया है। भगवान बुद्ध ने अपने जीवन काल में और सदैव बताया

कि त्याग की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी भी प्रकार का त्याग अनावश्यक है।

भगवान बुद्ध को यदि आप पढ़ें, उनकी प्रारम्भिक शिक्षाओं को यदि देखें तो आप हैरान होंगे, कि किसी भी प्रकार का त्याग अनावश्यक है। उन्होंने स्वयं तो तपस्या की परन्तु वह समय तपस्या का था। उस समय उन्हें ऐसे लोगों की आवश्यकता थी जो जीजान से उनके विचारों का प्रचार कर सकें। अतः सभी ने इस प्रकार का जीवन अपनाया। परन्तु कभी भी उनका विश्वास तपस्या में न था। वो तो शाकाहारी भी न थे। एक बार वे एक गाँव में गए उन्हें भूख लगी हुई थी। वहाँ शिकारियों से उन्होंने खाने के लिए कुछ माँगा। शिकारी ने उत्तर दिया कि आज सुबह हमने एक जंगली सूअर का शिकार किया है लेकिन इसे ठंडा होने में कुछ समय लगेगा। उन्होंने कहा, 'कोई बात नहीं'। किसी दाईं ओर के उग्र स्वभाव व्यक्ति का जंगली सूअर का बिना ठंडा हुए मांस खाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने ये मांस खाया और ऐसा करते हुए उनकी मृत्यु हुई। अवतरण जो भी कार्य करते हैं उसका कोई अर्थ होता है। जिस तरह से हम ईसा–मसीह के जीवन में अर्थ खोजते हैं वैसे ही श्री बुद्ध के जीवन में भी अर्थ खोजते हैं। यही कारण है कि बौद्ध लोग शाकाहारी बन गए। क्योंकि इस गर्मागर्म मांस को खाते हुए बुद्ध भगवान की मृत्यु हो गई थी इसलिए वे शाकाहारी बन गए थे। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि सभी लोग शाकाहारी बन जाएं। जिन लोगों में अहं है उनके लिए शाकाहारी बन जाना बेहतर है। उग्र लोगों का शाकाहारी भोजन करना और तामसिक लोगों का प्रोटीन युक्त भोजन करना बेहतर है। ये बात हम भली–भांति जानते हैं। अतः उन्होंने अत्यन्त प्रेम तथा स्नेह पूर्वक उन्हें नियंत्रित करने का प्रयत्न किया जो उनके साथ थे। परन्तु उनके संदेश का सारतत्व समझा जाना आवश्यक है।

एक बार एक लड़का उनके पास आया और उनसे पूछा, "श्रीमान क्या आप मुझे बुद्ध धर्म की शिक्षा देंगे?" तब तक ये कोई धर्म न था, "क्या आप मुझे दीक्षा देंगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "मेरे बच्चे केवल ब्राह्मणों को दीक्षा दी जाती है अर्थात आत्मसाक्षात्कारी लोगों को ही। आपका जन्म किस कुल में हुआ?" लड़के ने उत्तर दिया, "श्रीमन मैं अपना कुल नहीं जानता।" वह लड़का अपनी माँ के पास वापिस गया और उससे पूछा, "माँ मेरा कुल कौन सा है मेरे पिता कौन थे", माँ ने उत्तर दिया मेरे बच्चे मैं अत्यन्त गरीब महिला थी और मेरे पास जीवन यापन का कोई साधन न था, इसलिए मुझे बहुत से स्वामियों (Lords) के साथ रहना पड़ा, मैं नहीं जानती कि तुम्हारे पिता कौन हैं?" "आप नहीं जानती कि मेरे पिता कौन है?" उसने कहा, "नहीं।" वह लड़का भगवान बुद्ध के पास गया और भगवान ने उससे

पूछा आपके पिता कौन हैं? तुम्हारी जाति कौन सी है?" लड़के ने उत्तर दिया, श्रीमान मेरी कोई जाति नहीं है क्योंकि मेरी माँ ने बताया है उनके कई स्वामी थे और वे नहीं जानतीं कि किससे मेरा जन्म हुआ। अतः मैं अपने पिता को नहीं जानता। भगवान बुद्ध ने उसे गले से लगा लिया और कहा तुम वास्तव में ब्राह्मण हो क्योंकि तुमने सत्य बात बता दी है।

अतः सत्य ही उनके जीवन का सार तत्व है। सर्व प्रथम हमें अपने प्रति ईमानदार होना पड़ता है और मुझे लगता है कि स्वयं के प्रति ईमानदार होना कुछ लोगों के लिए बहुत कठिन कार्य है। वे जानते हैं कि सत्य से पलायन किस प्रकार करना है। वो इस कार्य को करना जानते हैं। सत्य से बचने के लिए वे तर्क देते हैं और युक्तियाँ लगाते हैं। ये स्पष्टीकरण आप किसे दे रहे हैं? केवल अपने आप को? आपकी आत्मा का निवास आपके अन्दर है और आपके चित्त द्वारा यह ज्योतिर्मय हो गई है। अब आप किससे तर्क कर रहे हैं? अपनी आत्मा से? ईसा मसीह का सन्देश ये है कि हमने पुनरुत्थान प्राप्त करना है, परन्तु कैसे पुनरुत्थान प्राप्त करना है। सर्व प्रथम आपको अपने प्रति ईमानदार होना है। यह समझना सबसे जरूरी है कि आपकी जाति ब्राह्मण है, आपको ब्रह्म का ज्ञान है, आप सर्वव्यापक शक्ति को जानते हैं और उसे आपने महसूस किया है। आप सच्चे ब्राह्मण हैं और सच्चे ब्राह्मण होने के नाते आपको चुस्त होना है। भारत में ब्राह्मण लोग हैं, जो वास्तविक ब्राह्मण चाहे न हों परन्तु ब्राह्मण परिवारों में जन्में हैं। हो सकता है उनके पूर्वज ब्राह्मण रहे हों, वे भी अब स्वयं को ब्राह्मण कहते हैं। उनकी विशेषता क्या है? अधिकतर ब्राह्मण लोग प्रातः चार बजे उठ जाते हैं। इस प्रकार आप उन्हें पहचान सकते हैं कि वे ब्राह्मण हैं। इस तरह से देखें तो मैं भी ब्राह्मण हूँ। चार बजे प्रातः उठकर वे स्नान करते हैं और स्वयं को शुद्ध करके वे पूजा, प्रार्थना या ध्यान के लिए बैठ जाते हैं। इस प्रकार वहाँ आप ब्राह्मण को पहचानते हैं। यद्यपि वो सच्चे ब्राह्मण नहीं हैं। इसके विपरीत भारत में शूद्र प्रातः नौ बजे उठेंगे। यह उनकी परम्परा है। वे गन्दे कपड़े पहनते हैं, मुँह में अपने हाथ डालते हैं, गन्दगी से घिरे हुए घिनौने लोग होते है। ऐसे व्यक्ति को गन्दगी से दुर्गन्ध भी नहीं आती क्योंकि परंपरागत वे यही कार्य करते हैं। अब हमें पता चला है कि बहुत से ब्राह्मण हुए हैं जिनका जन्म शूद्र परिवारों में हुआ। अतः शूद्र परिवार में उत्पन्न होने से, व्यक्ति के जन्म से, वह शूद्र नहीं बन जाता। अपने द्रष्टिकोण, अपनी जाति के कारण ही व्यक्ति ब्राह्मण या शूद्र बनता है। परन्तु समाज में परंपरागत जाति को ही स्वीकार किया जाता है। इन शूद्र लोगों के बाल बिखरे हुए होंगे, आप तुरन्त पहचान सकते हैं। वो बालों में तेल नहीं डालते। बिना तेल के उनके बाल (Dishevelled) बिखरे रहते हैं।

दूसरे वे अपने यौन जीवन की चिन्ता नहीं करते। राक्षसों की तरह से उनका जीवन होता है। राक्षस लोग ही दूसरों की महिलाओं के पीछे भागते हैं उन्हें देखते हैं आदि–आदि। पुराणों के अनुसार ये कहते हुए मुझे खेद हो रहा है यह राक्षसों का गुण है।

समुद्र मन्थन में जब समुद्र से अमृत प्रकट हुआ तो श्री विष्णु को राक्षसों की दुर्बलता पता थी। जबरदस्ती राक्षस लोग अमृत कलश को ले गए। अपने अहंकार और शक्ति के कारण। वे कहीं अधिक चालाक थे इसलिए देवताओं से अमृत के घड़े को छीन ले गए। राक्षस अमृत पीने ही वाले थे। श्री विष्णु को राक्षसों की दुर्बलता का ज्ञान था इसलिए उन्होंने मोहिनी रूप धारण किया। मोहिनी अर्थात सुन्दर स्त्री जो अपने वस्त्रों, सुडौल शरीर तथा सभी प्रकार की अदाओं से पुरुषों को आकर्षित करे। तुरन्त सभी राक्षस उस सुन्दरी (श्री विष्णु) पर फिदा हो गए। देवताओं और राक्षसों का भेद आप जान सकते हैं। परन्तु यूनान में अपनी समस्याओं का हल निकालने के लिए देवताओं को राक्षस रूप में दर्शाया है। ज्यों ही विष्णु जी ने पाया कि एक राक्षस कुछ लेकर भागा है, तो पुराणों में बताया है, मोहिनी रूप में श्रीविष्णु जी उसके पास पहुँचे और हँस–हँस कर उसे गुदगुदाने का प्रयत्न किया। किसी अहंकारी राक्षस के पास अत्यन्त सुन्दर महिला का आना और उसे गुदगुदाना! उस मूर्ख राक्षस ने, जिसके मुँह में अमृत भरा हुआ था गुदगुदाहट के कारण अमृत उलट दिया और ऐसी मान्यता है कि जिस भूमि पर उसके मुँह से निकला हुआ अमृत गिरा वहाँ से लहसुन पैदा हुआ।

सहजयोग में जब मैं लोगों को देखती हूँ कि वे अपने प्रति ईमानदार नहीं हैं तो उन्हें ये बात समझनी चाहिए कि अहं अत्यन्त चालाक चीज़ है। केवल इतना ही नहीं, अहं आपको दूसरे लोगों के अहं का दास बना देता है। उदाहरण के रूप में आप देखें, महिलाएं सौन्दर्य प्रसाधन की दुकानों पर जाकर श्रृंगार कराती हैं। ये पहनती हैं वो करती हैं, मैं नहीं जानती कि वो क्या–क्या करती हैं परन्तु तीन चार घण्टों के बाद जब आती है तब भी वो वैसी ही लगती हैं। न जाने कितना पैसा वे उड़ेलती हैं और हैरानी की बात है जब वे बाहर आती हैं तो उनके बाल एक भिन्न शैली में कटे होते हैं! उनसे यदि आप पूछें कि आपने इस प्रकार बाल क्यों कटाए हैं तो वे कहती हैं, 'ये फैशन है।' इसका अर्थ ये हुआ आपका अपना कोई विचार नहीं है, आपकी अपनी कोई धारणा नहीं है। जो भी फैशन हो उसे आप स्वीकार कर लेते है। आप ये नहीं समझ पाते ऐसा करना आपके लिए ठीक है या नहीं। इस प्रकार अहं को बढ़ावा मिलता है। मान लो कोई उद्यमी है जो अन्य लोगों से कहीं अधिक चुस्त चालाक

है, ऐसे बहुत से लोग हैं, अब वो कहता है कि अपने सिर में एक विशेष प्रकार का तेल डालो, अपने बालों को एक विशेष रूप से बाँधो तो वे अच्छे लगेंगे। इस प्रकार वे विशेष रूप से विज्ञापन देता है। इस तरह उसका सारा उत्पाद बिक जाता है। बिना सोचे समझे लोग इसका उपयोग करते हैं। इसका अर्थ ये है कि आपका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है।

अहं क्या है? अहं से आपको व्यक्तित्व, चरित्र और स्वभाव मिलना चाहिए। जब आप उन्हें देखते हैं तो बीमार लोगों की तरह से पहचान नहीं पाते, वैसे ही जैसे सभी रोगियों की दाढ़ी, मूछें बढ़ी होने के कारण आप उनमें अन्तर नहीं कर पाते। एक महिला और दूसरी महिला में आपको अन्तर नजर नहीं आता क्योंकि सभी की बालों की शैली एक जैसी होती है, सभी के कपड़े एक जैसे होते हैं सभी कुछ एक जैसा होता है क्योंकि यही फैशन है। फैशन का आरम्भ किसने किया? किसी बहुत चालाक व्यक्ति ने जो पैसा बनाना चाहता था। भारत में एक सुन्दर प्रकार की डलिया होती है, एक प्रकार की छोटी सी टोकरी। अचानक ये बाजार से गायब हो गई। हमारी समझ में नहीं आया कि सारी टोकरियाँ कहाँ गायब हो गईं! ऐसा होना असम्भव है, कोई इनका क्या करेगा? यह बड़ी साधारण सी चीज़ है। ये सब अमरीका में पहुँच गईं, क्यों? वहाँ महिलाएं बालों की शैली बनाने के लिए इनका उपयोग करती हैं। मैंने पूछा, कैसे? उन्होंने अपने वालों का क्या हाल किया? आजकल वे अपने बालों में तेल नहीं डालतीं, अधिकतर गंजी हो गई हैं। आप यदि अपने बालों में तेल नहीं डालेंगे तो गंजे हो जाएंगे, ये बात मैं आपको बता रही हूँ। आप गंजे हो ही जाएंगे। हम तपस्वी लोग हैं, हम तेल नहीं डाल सकते। आप यदि सिर में तेल नहीं डालेंगे तो गंजे हो ही जाएंगे। तब बिना कुछ किए किसी बुद्ध संस्था में शामिल हो सकेंगे। एक आराम और हो जाएगा, आपको हजामत नहीं करवानी पड़ेगी। अब वो लोग कहते हैं कि हम गंजे हो गए हैं! हमे कुछ लोग कहते हैं कि हम गंजे हो गए हैं, हमें कुछ तो करना होगा। तो वे ये टोकरिया पहन लेते हैं और उनके ऊपर विग डाल लेते हैं। परन्तु क्यों? क्यों नहीं आपने सिर में तेल डाला? आपके सिर पर घने बाल होने चाहिएं। परन्तु आजकल यही फैशन है। एक दिन एक महिला मेरे से बात कर रही थी और उसकी टोकरी गिर गई, साथ में विग भी और इस प्रकार मुझे इस बात का पता चला।

अतः यह समझना आवश्यक है कि आपमें यदि ठीक प्रकार का अहं है तो आपका अपना व्यक्तित्व, चरित्र, सूझबूझ, विशेषता और स्वभाव होना चाहिए। श्री बुद्ध ने क्या किया? उन्होंने कहा कि सभी चीज़ों से, अपने बालों से, अपनी भँवों से और हाथों

पैरों आदि के बालों से मुक्ति पा लो। कल्पना करें कि यदि हम बुद्ध धर्म के अनुयायी होते तो हमारा क्या हाल हुआ होता! उन्होंने कहा, ठीक है, आप गेरुआ वस्त्र पहनें, सारे बाल मुंडवाकर गेरुआ वस्त्र पहनकर घूमें और महिलाओं को केवल दो वस्त्र पहनने की आज्ञा दी–एक ब्लाऊज और एक साड़ी। पेटीकोट भी नहीं, चाहे आप रानी हों या सफाई कर्मी, सभी एक जैसी दिखाई देनी चाहिएं। इसलिए आप फैशन करना छोड़ दें। परन्तु बुद्ध लोग सबसे अधिक फैशनेबुल हैं, इनकी आप कल्पना कर सकते हैं। जापान में जाकर यदि आप उनके फैशन देखेंगे तो पागल हो जाएंगे। इतनी अधिक बनावट है! मेरी समझ में नहीं आता कि वो बुद्ध धर्म कहाँ चला गया है जिसमें श्री बुद्ध ने प्राकृतिक लोगों की सराहना की थी। फैशन के इस जंगल में सारा बुद्ध धर्म खो गया है।

दूसरी बात ये है कि दाईं ओर के आक्रामक और उग्र स्वभाव वाले लोगों को समस्या हो जाती है। आप यदि उग्र स्वभाव हैं तो अपनी बाईं ओर (भावनापक्ष) तथा मूलाधार की उपेक्षा कर देते हैं। आप कहते हैं 'क्या दोष है', 'क्या दोष है'? जब आपको एड्स रोग हो जाता है तब दोष का आपको पता चलता है। जब तक कैंसर नहीं हो जाता, धूम्रपान में दोष नहीं नज़र आता। भारत में भी विज्ञापन दिए जाते हैं कि यदि आपके हाथ में सिगार है तो आप बहुत महान दिखाई देते हैं। यद्यपि आप चिमनी की तरह से दिखाई देते हैं लेकिन ठीक है। ये सारी चीज़ें कहकर उद्यमी आपके अहं को बढ़ावा देते है। और आप वो सब कह रहे हैं। ये कार्य करते हुए आप भूल जाते हैं कि आप महामूर्ख हैं। यदि हम इन धूर्त उद्यमियों की बातें सुनते रहे तो मैं आपको बता देती हूँ कि आपका सारा सौन्दर्य समाप्त हो जाएगा। पहले मोनालिसा हुआ करती थीं, आजकल ये कहीं दिखाई नहीं देती। आजकल भयानक मच्छर हैं। वो सोचती हैं कि वो बहुत सुन्दर हैं परन्तु उनमें से चैतन्य लहरियाँ नहीं निकलती। कलात्मकता के किसी भी मापदण्ड से वो सुन्दर नहीं हैं। चालीस वर्ष की होते–होते वो अस्सी साल की बूढ़ी दिखाई देती हैं।

तो क्या घटित हो गया? अपने अहं के हाथों की पुतली बनकर हमने अपना मूलाधार खराब कर लिया है। **मूलाधार नियंत्रक है। दाईं ओर गतिवर्धक है और बाईं ओर जो कि मूलाधार है यह नियंत्रक है।** आप यदि बहुत अधिक दाईं ओर को झुक जाते हैं अर्थात आक्रामक हो जाते हैं तो आपको बहुत सी समस्याएं हो सकती हैं। मैंने लोगों को कहते हुए सुना है कि बहुत अधिक सक्रिय (Over active) लोग बच्चे उत्पन्न नहीं कर सकते। पहला ये कहना कि 'क्या दोष है' और दूसरे पूर्ण 'शुष्कता' (Dryness) ऐसे लोगों के बच्चे नहीं हो सकते। यदि किसी तरह से हो भी

गए तो वे केवल राक्षस ही बन सकते हैं। अतः बहुत अधिक त्याग प्रवृत्ति व्यक्ति को अति उग्र बना सकती है। यही कारण है कि श्री बुद्ध ने कहा बहुत ज्यादा तपश्चर्या की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने ये बात कही। यद्यपि जो लोग उनके साथ थे और जिनकी वो देखभाल करते थे वो सभी ब्रह्मचारी थे परन्तु उन लोगों को सन्तुलन श्री बुद्ध दिया करते थे।

अतः एक बार यदि आप दाईं ओर को (उग्रता की ओर) चल पड़ते हैं तो आपका अन्त स्वतः ही अत्यन्त निष्क्रिय व्यक्ति के रूप में होता है। परिणामस्वरूप आप बच्चे नहीं उत्पन्न कर सकेंगे, आपकी आयु लम्बी नहीं होगी, जैसे कोकीन लेने वाले लोगों के साथ होता है। हर चीज़ में आप बहुत गतिशील हो उठते हैं। ऐसे लोगों के साथ जीना बहुत कठिन है क्योंकि ये लोग जैट की गति से चलते हैं और मैं गज की तरह से। मैं तो उन्हें आते जाते ही देखती रहती हूँ। उनसे सम्बन्ध जोड़ना मेरी समझ में नहीं आता। अतः अहम् को नियंत्रित करने के लिए हमें श्री बुद्ध की पूजा करनी होगी, श्री बुद्ध को पूजना होगा। परन्तु सर्वप्रथम सिद्धान्त अपनी पावनता का सम्मान करना है। श्री बुद्ध का सम्मान अर्थात अपनी पावनता का सम्मान, जिस प्रकार आपने किया है, आपको अपनी पत्नी का त्याग करने की आवश्यकता तब तक नहीं है जब तक वह बहुत निराशाजनक न हो। आपको अपने पतियों का भी त्याग करने की आवश्यकता नहीं है। वे सब पत्नीविहीन थे। श्री बुद्ध ने अपनी पत्नी का त्याग कर दिया था। श्री महावीर की पत्नी नहीं थी और ईसामसीह ने विवाह नहीं किया। परन्तु सहजयोग में आप विवाह करते हैं; आपके बच्चे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु, जैसे हम कह रहे थे, अहं के कारण हम अपने आप से ही लिप्त हो जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं विश्व में तीन प्रकार के लोग हैं: एक वो जिन्हें किसी अन्य की चिंता नहीं है, एक वो जो दूसरों की ही चिन्ता करते हैं और तीसरी प्रकार के लोग केवल अपने बारे में ही चिन्तित हैं।

अतः श्री बुद्ध का पहला सन्देश स्वयं के प्रति ईमानदारी है और इस ईमानदारी का पहला क्षेत्र आपकी पावनता हैं। आप विवाह कर सकते हैं, आपके पति या पत्नी हो सकते हैं, आप बच्चे उत्पन्न कर सकते हैं। अहं ऐसे लोगों की सृष्टि करता है जो अपने से, अपनी आकांक्षाओं से, परियोजनाओं से, नौकरी से, पत्नी से, बच्चों से, घर से, अपनी कार से, घोड़े से और अपने कुत्ते से ही लिप्त होता है। ऐसे व्यक्ति से आप यदि कहें कि ओह! मुझे फलां व्यक्ति की चिन्ता है तो वह आपको बताएगा कि आपने अपना कर्त्तव्य कर दिया है, अब क्यों आप उसकी चिन्ता करते हैं? अब आपको प्रसन्न होना चाहिए। परन्तु मैं किस प्रकार प्रसन्न हो सकती हूँ। मैं आप

जैसी नहीं हूँ। ऐसा व्यक्ति ये भी कहेगा कि मेरे पास तो घर है, किसी अन्य के पास नहीं है तो मैं इसकी क्यों चिन्ता करूं? यह मेरा कमरा है, यह मेरा कालीन है। घर आने वाले आगन्तुकों को वह कहेगा कि वहां बैठो, ये चीज़ वहाँ रख दो। वह इतना भयानक और कठोर होता है। उसके मस्तिष्क में सदैव मैं और मेरा ही चलते रहता है।

यह अहं अधिक और अधिक और अधिक बढ़ता जाता है और ऐसे लोगों की धारणाएं वैसी बन जाती हैं जैसे हिटलर की। हो सकता है उसे कुछ यहूदियों ने सताया हो और उसके अहं ने इस सदमें को बहुत भयानक जेल का आकार दे दिया हो जिसके कारण वह सभी यहूदियों का वध चाहने लगा। अतः इस प्रकार का व्यक्ति अपने आपमें इतना लिप्त होता है और उसे मैं, मेरा और मुझे ही याद रहता है। मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ बाकी सब महामूर्ख हैं। मैं सबसे अधिक बुद्धिमान हूँ। मुझे हर चीज़ का ज्ञान है। महात्मा की तरह से मैं सड़क पर आ रहा था और मैंने एक डाकू देखा, भागकर मैं पेड़ के पीछे जा छिपा। मैं कितना महान हूँ? तब वह डाकू मेरे पास आया और मुझे धमकी दी, मैने अपना सबकुछ उसे दे दिया। मै कितना महान हूँ? तब वह डाकू आकर मेरी पत्नी को ले गया। मैं कितना महान हूँ? आत्मश्लाघा! और वह व्यक्ति बहुत प्रसन्न होता है! सभी लोग ऐसे व्यक्ति से तंग आ जाते हैं। कोई उसे पसन्द नहीं करता। वह यदि इस तरफ से आ रहा हो तो उसे देखकर लोग रास्ता बदल लेंगे। भारत के सभी नगरों में ऐसे बहुत से लोग हैं। वो बहुत प्रसिद्ध हैं, सभी लोग उन्हें जानते हैं। प्रातः सैर को जाते हुए किसी को यदि उनके दर्शन हो जाएं तो लोग कहते है 'हे परमात्मा आज तो हमें भोजन भी नसीब नहीं होगा।' मैंने पूछा क्यों? तो कहने लगे क्योंकि आज हमें इस मनहूस के दर्शन हो गए हैं। परन्तु वह व्यक्ति अकड़ कर चलता है। वह किसी को नहीं भाता चाहे वह अपना कोई अन्त न समझे। कोई उसे पसन्द नहीं करता। सभी देशों में ऐसे लोग हैं। सामूहिक बेवकूफियाँ हैं।

कभी यदि आप ये देखें कि स्पेन के लोगों ने कितने ही अमरीकन लोगों का वध किया तो आपको विश्वास नहीं होता कि उन्हीं स्पेन के लोगों के बच्चे आज सहजयोगी हैं! मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि आप उनसे बिल्कुल भिन्न हैं और सुन्दर हैं। तो ऐसी कौन सी चीज़ थी जिसने उन्हें इतना अत्याचारी बना दिया? यही अहं, जिसके कारण वो इतना भी न देख पाए कि जिन लोगों का वध हम कर रहे हैं वे भी मानव हैं। उनके देश पर हमने आक्रमण किया, वहीं पर हम रह रहे हैं और उन्हीं का हम वध कर रहे हैं। वहाँ रहने का हमें कोई अधिकार नहीं है। पुर्तगाल के लोगों का भी यही हाल है। वे सब ब्राजील जा बसे। यद्यपि वे पुर्तगाली हैं परन्तु पुर्तगाल

में भी केवल पाँच प्रतिशत ही बचे हैं। उन्हें पुर्तगाल की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि वह बहुत गरीब देश है। स्पेन के जो लोग अमरीका जा बसे हैं वो भी यही सोचते हैं कि हमने अमरीका को विजय किया है, हमने वहाँ के इतने लोगों को मार दिया। उनके अहं के कारण ही ऐसा विनाश हुआ।

पहली बार जब मैं कोलंबिया गई तो एक व्यक्ति, जो संभवतः मुझे जानता था कहने लगा, "माँ क्या आप ही वही व्यक्ति हैं जो आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रसिद्ध है?" मैने कहा, "हाँ, मैं ही हूँ, आप फरमाए।" वह मुझे एक पार्टी में मिला था और उसने मुझे माँ कहकर पुकारा तो मुझे हैरानी हुई। उसने कहा, "क्या आप हमारे देश को कोई ऐसा आशीष दे सकती हैं जिससे हम इन अमरीकनों को मात दे सकें। प्रकृति का कोई प्रकोप हो जाए, हमारे पास गेहूँ है। हम यहाँ गेहूँ उगाते हैं परन्तु ये लोग इसे इतने सस्ते दामों में खरीदना चाहते हैं कि इस पैसे से हम अपने परिवार भी नहीं पाल सकते। ये कीमत इतनी कम है कि आर्थिक रूप से हमें दुर्बल कर देगी। हम खुद तो भूखों मरते हैं और इन्हें ये गेहूँ बेच देते हैं। अब कोलंम्बिया में यही लोग प्रथम दर्जे में यात्रा करते हैं और अमरीका के लोग कोकीन लेते हैं और इनके चरण धोते हैं! अहंकार का यही फल है। इसका ख़ामियाज़ा आपको भुगतना पड़ता है। अपने अहं का फल आपको भुगतना पड़ता है। अत्यन्त सख्ती से ये फल आपको भुगतना पड़ता है। अपने अहं से जो भी चालाकी आप करते हैं वह पलटकर आपको प्रभावित करती है। सहजयोग में तो अहं का परिणाम सबसे बुरा होता है। किसी को घोड़े (अहं) पर सवार होते हुए देखकर मुझे बहुत घबराहट होती है।

मैं दूसरी प्रकार के लोगों के बारे में कहना चाहूँगी जो तामसी प्रवृत्ति होते हैं। ये सदैव शिकायत ही करते रहते हैं। मुझे सिर दर्द हो गया, मुझे यहाँ दर्द हो रहा है, वहाँ दर्द हो रहा है, मुझे ये हो गया, मुझे ये हो गया। उन्हें सभी प्रकार के रोग हो जाते हैं। मैंने जैंरोमी (Jerome) की एक पुस्तक में (मुझे आशा है आप जल्दी में नहीं है, (हंसी) पढ़ा था कि एक व्यक्ति डॉक्टर के पास गया और कहा, "श्रीमान (Materia Medica) मैटीरिया मैडिका नामक ग्रन्थ में जितनी भी बीमारियों का वर्णन है वो सब मुझमें हैं सिर्फ गृहणी के घुटने के सिवाए। डॉक्टर ने पूछा कि ये रोग तुम्हें क्यों नहीं हुआ? तो कहने लगा क्योंकि मैं गृहणी नहीं हूँ।" डॉक्टर ने पूछा, "तुम्हें ये सारी बीमारियाँ कैसे हुईं और तुम इनके विषय में कैसे जानते हैं?" तो कहने लगा मैंने मेटीरिया, मैडिका जैसी पुस्तक पढ़ी और पाया कि मुझे ये सारे रोग हैं। डॉक्टर ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें औषधि देता हूँ परन्तु ये औषधि तुमने अभी नहीं लेनी। यहाँ से पाँच

मील दूर जाकर आप इसे ले सकते हैं। कागज़ के टुकड़ें में उसने दवाई दी। आगे जाकर जब उसने इसे खोला तो कागज की एक के बाद एक तह पाई जिसमें दवाई बिल्कुल भी न थी। कागज के अन्तिम टुकड़े पर लिखा था, "मूर्ख व्यक्ति मैटीरिया मैडिका का पढ़ना बन्द कर दो, तुम्हें कोई रोग नहीं है।"

अतः शिकायत करने वाले लोगों की एक अन्य किस्म है और कभी–कभी तो वे वास्तव में भूत बाधित और कष्ट कर होते हैं। मैं यदि गलती से उनका हाल–चाल पूछ लूं तो उनके पास अपनी तकलीफों की एक लम्बी सूची होती है। मैं कहती हूँ, हे परमात्मा, "इस व्यक्ति से मैंने ऐसा क्यों पूछा?" वो लोग एक तरफ से शुरू हो जाते हैः आज सुबह ऐसा हुआ, कल ये हुआ, खाना बहुत बुरा था, उन्होंने मुझसे बहुत बुरा व्यवहार किया, सहजयोगी इतने खराब थे कि उन्होंने मुझे वहाँ जाने ही नहीं दिया, मुझे अकेला छोड़ दिया, किसी ने मेरी चिन्ता नहीं की। वे लोग इतने दुष्ट थे, बहुत कठोर थे और अगुआ भी मेरे प्रति बहुत कठोर है, उसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। कृपा करके उसे अगुआ के पद से हटा दें। उस अगुआ ने क्या किया? उसने मुझे पानी नहीं पीने दिया। क्यों? क्यों उसने तुम्हें पानी नहीं पीने दिया? ऐसी ही मूर्खतापूर्ण बातें ये लोग करते रहते हैं।

कभी–कभी मैं सोचती हूँ कि वो महान सन्त कहाँ खो गए हैं? वो तीसरी प्रकार के लोग जिन्होंने कभी अपनी चिन्ता नहीं की और जो स्वयं में लिप्त नहीं थे। दूसरों के हित में लगे रहते थे और उन्हीं की चिन्ता करते थे। दूसरे व्यक्ति को क्या कष्ट है, हमारे अगुआ को क्या परेशानी है, अगुआ से मैं कैसा व्यवहार कर रहा हूँ , उसके साथ मैं क्या कर रहा हूँ? क्या मैं किसी प्रकार से उसकी सहायता करता हूँ? क्या मैंने किसी को आत्मसाक्षात्कार दिया? क्या मैंने ठीक प्रकार से उसे कोई पैसा दिया? क्या मैं विवेकशील हूँ या फिर हर समय अगुआ को परेशान ही करता रहता हूँ और फिर जाकर श्री माताजी से शिकायत करता हूँ। ऐसे लोग कभी सन्तुष्ट नहीं होते। एक प्रकार के लोग अति सन्तुष्ट होते हैं और दूसरी प्रकार के कभी सन्तुष्ट नहीं होते। **एक अन्य प्रकार है जो मध्य में है और यह देखने की चिन्ता भी नहीं करते कि वे सन्तुष्ट हैं या असन्तुष्ट? वे तो सदा दूसरों की सन्तुष्टि को ही देखते हैं। श्री बुद्ध के जीवन में भी यही गुण देखा जाना चाहिए कि वे कैसे थे और किस प्रकार सम्मान करते थे।**

अतः आज जो लोग श्री बुद्ध की पूजा कर रहे है उन्हें समझना चाहिए कि उनका सत्य संदेश जिसे हम अपनी बाईं ओर से जान सकते हैं अपने चित्त से जान सकते है, उसका प्रयोग सर्वप्रथम हमें स्वयं पर

करना चाहिए। लोग मुझे बताते हैं, "श्री माताजी उसकी चैतन्य लहरियाँ ठीक नहीं हैं, उस घर की चैतन्य लहरियाँ ठीक नहीं हैं, उस चीज़ की चैतन्य लहरियाँ ठीक नहीं हैं। और बताने वाला व्यक्ति स्वयं मेरे सम्मुख खड़ा हुआ काँप रहा होता है। मैनें उसे कहा, "आपकी अपनी चैतन्य लहरियाँ कैसी हैं?" "ओह, मुझे बहुत चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं!" मुझे भी बहुत चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं, कृपा करके क्षमा करें। सहजयोगियों के साथ ये समस्या है कि कई बार वो अपने महत्व को नहीं समझते। वो नहीं जानते कि उनका अहं ठीक है या नहीं। अहंकार का सार–तत्व अहंभाव है, कि मैं सहजयोगी हूँ। इस बात के साथ ईमानदारी को भी रखें, ईमानदारी कि **मैं सहजयोगी हूँ और ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ जो ब्रह्मांडीय है और जो अन्तर्जात रूप से आत्मलीन होना है। इसके विषय में कोई इधर–उधर की बात नहीं है।** ये मेरा अनुभव है और मुझे इस पर पूर्ण विश्वास है और ये मेरे अन्दर अन्तर्जात है। यह अहंभाव है। मैं नहीं जानती कि अंग्रेजी भाषा में इसे क्या कहेंगे–Highness। अब मैं इस पृथ्वी पर अवतरित हूँ और ये जीवन परमात्मा के कार्य के लिए है। इसके लिए मुझे शुद्ध व्यक्तित्व होना होगा क्योंकि मेरा सम्बन्ध विश्व निर्मला धर्म से है, मुझे शुद्ध होना होगा। ध्यान धारणा के माध्यम से, अन्य तरीकों से, स्वयं पर दृष्टि रखकर ये शुद्धता मुझे प्राप्त करनी होगी और शुद्ध व्यक्ति बनना होगा। मैं यदि सहजयोगी हूँ, परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से यदि मेरा सम्बन्ध है तो मुझे वह प्रेम, वह करुणा अन्य लोगों तक पहुँचाने का माध्यम बनना होगा। इधर–उधर की चीज़ों के लिए मेरे पास समय नहीं है। बाकी सब कार्य व्यर्थ हैं। मेरा चित्त पावन होना चाहिए, मेरा जीवन पावन होना चाहिए।

मैं कहता कुछ हूँ, करता कुछ हूँ। सुबह से शाम तक स्वयं को धोखा देता हूँ तो मुझमें श्रेष्ठता नहीं है, मुझमें आत्मसम्मान नहीं है। इसे प्राप्त करना जब सम्भव है तो क्यों न बिना कोई पैसा खर्चे इसे प्राप्त कर लिया जाए। ऐसे लोग सोचते हैं कि यदि सम्भव हो तो क्यों न मुफ्त में ही चीज़ें प्राप्त कर ली जाएं। जैसे मान लो श्री माताजी का घर है तो क्यों न वहाँ शान से रहा जाए? आखिरकार ये निर्मला भवन है। वहाँ सभी कुछ मुफ्त में मिलेगा। उनमें बिल्कुल भी आत्म–सम्मान नहीं है। हो सके तो यहाँ–वहाँ से कुछ पैसा भी उधार ले लें। मैं ऐसे कई लोगों को जानती हूँ। श्री माताजी मान लो हम गणपति पुले दो दिनों के लिए आते हैं तो क्या आप हमसे एक दिन के पैसे ले लेंगी? ये बात आम है। आपके पैसे कौन देगा? मुझे भी अपने खाने और रहने के पैसे देने होते हैं, मुझे भी देने होते हैं। आज भगवान बुद्ध का समय नहीं है जब उन्हें अपना राज्य और सभी कुछ एक–एक पाई, यहाँ तक कि अपने बाल भी धर्म (ध

ाम्म) के लिए त्यागने पड़े। धर्म के लिए सभी कुछ त्यागकर वे खाली हाथ निकल पड़े, बच्चे, बीवी, माता–पिता सभी कुछ त्यागकर। बुद्ध धर्म, बुद्ध शैली यही थी। भगवान बुद्ध के शिष्य भी ऐसे ही थे। हजारों की संख्या में वे लोग बुद्ध धर्म सिखाने के लिए मीलों–मील पैदल जाया करते थे। लोग जब ये सब देखते होंगे तो उनपर क्या प्रभाव पड़ता होगा!

आज की पूजा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे लगता है कि अहं के कारण पश्चिमी देशों के लोग भटक गए हैं और उन्हें बुद्ध की बहुत आवश्यकता है। उन्हें इस तथाकथित बुद्धधर्म की भी आवश्यकता है क्योंकि इसके पीछे वे अपनी कमियों को छिपा सकेंगे। आप देखें कि हम सब बुद्ध धर्मी हैं। वो लोग अफगानिस्तान की चिन्ता करेंगे, लामा की चिन्ता करेंगे, अन्य सभी लोगों की चिन्ता करेंगे क्योंकि वे बुद्ध धर्मी हैं। परन्तु इसमें कोई सच्चाई नहीं है, बिल्कुल भी सच्चाई नहीं है। उसी सत्य एवं समर्पण को सहजयोगियों ने अपने अन्दर स्थापित करना है।

भगवान बुद्ध ने कहा था, "बुद्धं शरणं गच्छामि।" "मैं आत्मसाक्षात्कारी लोगों को प्रणाम करता है।" "धम्म शरणं गच्छामि"। मै धर्म को प्रणाम करता हूँ" अर्थात विश्व निर्मलाधर्म को और अन्त में उन्होंने कहा 'संघम् शरणम् गच्छामि' अर्थात में सामूहिकता को प्रणाम करता हूँ। इस तरह से आप देखें कि उन्होंने तीनों प्रकार के लोगों की समस्याओं को सुलझा दिया। सर्व प्रथम बुद्ध हैं अर्थात आत्मसाक्षात्कारी। सभी आत्मसाक्षात्कारी लोगों का सम्मान किया जाना चाहिए और उनके सम्मुख समर्पित होना चाहिए। मैं देखती हूँ बिना किसी बात के एक सहजयोगी दूसरे सहजयोगी के विषय में उल्टी सीधी बातें करता है। एक दूसरे के लिए सम्मान नहीं है। 'बुद्धम् शरणं गच्छामि' अर्थात मैं स्वयं को प्रबुद्ध लोगों के सम्मुख समर्पित करता हूँ। उनके आठ बुद्ध हैं, परन्तु हमारे यहाँ बहुत से बुद्ध हैं। यहाँ सभी बुद्ध बैठे हुए हैं। सभी लोग जिन्हें ज्ञान प्राप्त है, जो जिज्ञासु हैं, जो विधना हैं सभी मेरे सम्मुख बैठे हुए हैं। जैसे उन्होंने कहा कि 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि', मैं कहती हूँ कि मैं इन सभी सत्य साधकों के सम्मुख समर्पित हूँ। हमें सभी सहजयोगियों का सम्मान करना चाहिए, चाहे वह श्वेत प्रजाति का हो, श्याम प्रजाति का हो या नीली प्रजाति का हो। चाहे वह स्पेन से हो, इटली से हो, भारत से हो या किसी अन्य देश से। वह चाहे यहूदी धर्म से हो या इस्लाम से संबंधित हो या किसी अन्य धर्म से। चाहे वह वैध सन्तान हो या अवैध, चाहे वह वैभवशाली परिवार से हो, शाही परिवार से हो या दरिद्र परिवार से। चाहे उसके पास धन हो या न हो, वह चाहे स्वस्थ हो या अस्वस्थ, चाहे उसका पूर्व जीवन बहुत बुरा रहा हो। भूतकाल की सभी बातों को भुलाना ही होगा। वे सब

बुद्ध हैं और सभी प्रबुद्ध लोगों का सम्मान किया जाना चाहिए। उनकी इच्छाओं के सम्मुख सिर झुकाना चाहिए। हर समय आप लोगों की इच्छाओं के सम्मुख सिर झुकाते रहने से अब मैं एक प्रकार से इच्छामुक्त हो गई हूँ। ये बात मैं बताना चाहती हूँ। अब आपको इच्छा करनी होगी। अन्यथा मैं आपके लिए बेकार हूँ। मानो मेरी इच्छा शक्ति आपके मस्तिष्क में चली गई हो और मेरे पास कुछ भी न बचा हो। अतः आप लोग इच्छा करें।

इसके बाद 'धम्म शरणम् गच्छामि', अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमने विश्व निर्मला धर्म के लिए क्या किया है? विश्व निर्मला धर्म के लिए जो भी कुछ आवश्यक है, चाहे ये आपका धन हो, चाहे ये आपका घर हो आपकी अन्य वस्तुएं हों, चाहे ये आपका परिश्रम हो, किसी भी प्रकार का परिश्रम। **मैं देखती हूँ कि कुछ लोग तो किसी भी प्रकार का कार्य कर लेंगे और कुछ कोई भी कार्य नहीं करेंगे। अतः हमें चाहिए कि वास्तव में श्रम दान करें उदाहरण के लिए एक दिन अगुआ गण झाड़ू लगाएं दूसरे दिन सारी महिलाएं झाड़ू लगाएं या कुछ और कार्य करें ताकि आप लोगों को इस बात का पूरी तरह से पता चले कि परस्पर सम्मान किस प्रकार करना है।** जब आप मिलकर कोई कार्य करने लगते हैं तो आपमें वास्तव में सम्मान भाव आता है।

आलोचना करना बहुत आसान है, अन्य लोगों की आलोचना करना बहुत ही आसान है। मैंने देखा है कि जो लोग दो लाइनें भी नहीं लिख सकते वे लोग शेक्सपियर की आलोचना कर सकते है, तुकाराम की आलोचना कर सकते है, सन्त ज्ञानेश्वर की आलोचना कर सकते हैं। दो लाइनों की कविता तो आप लिख नहीं सकते, किस प्रकार आप आलोचना कर सकते है? एक रंग से भी वे चित्र नहीं बना सकते और चल पड़ते हैं आलोचना करने! मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार वे किसी की आलोचना कर पाते है! जिस व्यक्ति ने किसी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया कुछ भी कार्य नहीं किया वह अगुआओं की आलोचना करता है, उनकी जो बहुत से लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे चुके हैं! आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया? पहले उस व्यक्ति जैसा कुछ कार्य करके दिखाएं फिर आलोचना करें। सारा ही कुछ आलोचना के माध्यम से होता है। मेरे विचार से अपने साथ यह सबसे बड़ा अन्याय है क्योंकि आलोचना निकृष्टतम अहं है जो आप पर काबू पा लेता है। न कोई अहं भाव है न उच्चता की भावना। सब ठीक है। उन्होंने इतनी सुन्दर कविता लिखी है मैं भी लिखूंगा। लोग कहते हैं कि उन्होंने लिखा है, परन्तु ये ठीक नहीं है। बेहतर होगा कि वैसी दो पंक्तियाँ लिखकर देखें। श्रीमाताजी उसकी अंग्रेजी तो ठीक है, परन्तु अभी भी। आपकी अंग्रेजी कैसी है या आपकी

स्पेनिश? क्या आपको स्पेनिश भाषा का ज्ञान है? तब वो यदि अंग्रेजी नहीं भी जानता तो क्यों आप उसकी आलोचना करें? तो जैसा मैंने आपको बताया, आलोचना ने सारी सृजनात्मकता की हत्या कर दी है, हमारे व्यक्तित्व की हत्या कर दी है और हर समय हम काँपते ही रहते हैं। कोई भी रैम्ब्रैन्ड (Rembrandt) माइकल एंजेलो (Michel Angelo) जैसा नहीं हो सकता। कोई भी नहीं। क्योंकि आप हर चीज को आलोचना का रूप दे देते हैं।

आस्ट्रेलिया में इन लोगों ने संगीत नाटिका के लिए थर्मोकोल के सुन्दर–सुन्दर समुद्री जहाज आदि चीज़ें बनाई। आज भी लोग उनकी आलोचना कर रहे हैं। जब भी उन्हें आस्ट्रेलिया की कोई तस्वीर देनी होती है तो वे वही तस्वीर देते हैं। यह महारानी मैरी एंटोएन्टे (Mary Antointe) की तरह से है। वहाँ पर यदि आपको कोई सुन्दर चीज़ देखनी हो तो जाकर उसके महत्व को देखें। आलोचना करना ठीक है यदि आप उस कला में कुशल हैं, उसके स्वामी हैं, केवल तभी ये ठीक है। कार्य में पारंगत व्यक्ति को निःसन्देह आलोचना का अधिकार है परन्तु आपको तो इस कला का ज़रा सा ज्ञान भी नहीं है, आप कैसे इसकी आलोचना कर सकते हैं? अहं का नियन्त्रण आप श्री बुद्ध के जीवन में देख सकते हैं। श्री बुद्ध, जो प्रकाश थे, करुणा थे, आनन्द थे और ज्ञान की मूर्ति थे। अपने जीवन में उन्होंने कभी किसी की आलोचना नहीं की। सभी भूतों, राक्षसों और असुरों की आलोचना करने का ये भयानक कार्य उन्होंने मुझ पर छोड़ दिया था। उन्होंने सुगम मार्ग अपना लिया– इन सब लोगों से किसलिए लड़ना है? इन्हें इनके हाल पर छोड़ दें। काश कि मैं भी ऐसा ही कर सकती! परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती। पहले तीन वर्षों में मैने ऐसा करने का प्रयत्न किया परन्तु यह करना मेरे लिए सम्भव न था। इन चीज़ों से आपको लड़ना ही होगा। परन्तु आपको एक–दूसरे की आलोचना नहीं करनी चाहिए, इससे मुझे बहुत चोट पहुँचती है। ऐसा लगता है मानो एक हाथ दूसरे हाथ की आलोचना कर रहा हो! मैं लगातार कई दिनों तक श्री बुद्ध के बारे में बोल सकती हूँ। इसका कोई अन्त नहीं है। अपने जीवन द्वारा उन्होंने मुझे बहुत सी सुन्दर चीज़ें प्रदान कीं और **यदि हमें वास्तव में उनके सार तत्व को अपने अन्दर आत्मसात करना है तो हमें अपने अन्दर वह निर्लिप्तता का भाव स्थापित करना होगा।** अनुयायियों के कारण सभी धर्म नष्ट हुए। श्री बुद्ध ने कहा था पूजा मत करो, परमात्मा के विषय में बातचीत मत करो। उन्होंने कहा परमात्मा की बात मत करो केवल आत्म–साक्षात्कार की बात करो। लोगों को पहले आत्म– साक्षात्कार पा लेने दो। उन्होंने कहा, "किसी भी चीज़ की पूजा मत करो, पूजा ही मत करो क्योंकि वे

जानते थे कि पूजा करने के लिए कुछ भी नहीं है। अब इन लोगों के पास स्तूप (Stupas) हैं और ये उनकी पूजा करते हैं। सभी उल्टी–सीधी चीज़ों की पूजा करते हैं और इसका कोई अन्त नहीं है। ये लोग कहते हैं कि ये भगवान बुद्ध के दाँत हैं। मेरा कहने से अभिप्राय है कि किस प्रकार ये बुद्ध के दाँत हो सकते हैं? श्री बुद्ध की जब मृत्यु हुई तो क्या उन्होंने उनके दाँत निकाल लिए थे? ये बुद्ध के दाँत हैं, ऐसा कहकर लोग उनकी पूजा कर रहे हैं। मैंने देखा कि उनमें बिल्कुल भी चैतन्य लहरियां नहीं हैं। चैतन्य लहरियों का पूर्ण अभाव था। सिर के बाल और नाखून तो समझ में आते हैं परन्तु ये लोग जगह–जगह उनके दाँतों की पूजा किए चले जा रहे हैं! **मैं जानती हूँ कि मेरे सहजयोगी–सहजयोग को इतना नहीं खराब कर सकते। वो यदि ऐसा करेंगे तो उनकी चैतन्य लहरियां समाप्त हो जाएंगी। अतः इस मामले में सावधान रहें।** परन्तु मैंने देखा है कि अहं के कारण तो लोगों की चेतना ही समाप्त हो जाती है। "नहीं, मैं ठीक हूँ" नहीं मुझे चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं, नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूँ। वास्तव में ये बात बिल्कुल झूठ होती है। अपने आप को धोखा देना अहं का कार्य है। अतः सावधान रहें, यही न कहते रहें मैं ठीक हूँ, मुझमें कोई दोष नहीं है।

आज के इस शुभ अवसर पर हमे उस कठिन समय के विषय में सोचना चाहिए जिसमें महात्मा बुद्ध थे। फिर भी उन्होंने हमारे लिए सहजयोग का सृजन किया और उनकी करुणा–वर्षा, कठोर परिश्रम, उनके समर्पण और बलिदानों का आनन्द हम ले रहे हैं। सत्य तो हमें सुन्दरता प्रदान करता है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

ये सभी सुन्दर चीज़ें मैं आप लोगों के लिए सोच रही हूँ। श्री बुद्ध को ये कभी प्राप्त नहीं हुईं। उन्हें कभी सुख नहीं मिला। तो अब हमें ये दर्शाना होगा कि हम इसके योग्य हैं। प्रणिधान (Deep Devotion) शब्द उपयोग किया गया है इसके लिए। क्या आप सहजयोग के योग्य हैं? हमें सहजयोग के योग्य बनना होगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

गुरु पूजा

सितम्बर–1981

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज की पूजा का आयोजन क्यों किया गया है?

हमें ये बात समझ लेनी चाहिए कि सभी शिष्यों के लिए गुरु की पूजा बहुत आवश्यक है। परन्तु गुरु को भी सच्चा गुरु होना चाहिए। शिष्यों का अनुचित लाभ उठाने वाला या जिसे परमात्मा ने गुरु बनने का अधिकार नहीं दिया, ऐसा गुरु नहीं। इस पूजा का आयोजन इसलिए किया गया है क्योंकि आप सब लोगों को परमात्मा के विधान में (Statutes of the Lord) दीक्षित किया गया है। आप को बताया गया है कि मानव के क्या धर्म होते हैं। इसके लिए वास्तव में आपको गुरु की आवश्यकता नहीं है। धर्मादेशों की पुस्तक पढ़कर आप जान सकते है कि दैवी–विधान क्या है? लेकिन गुरु को ये देखना होता है कि शिष्य इन नियमों का पालन करें। इन धर्मादेशों का पालन किया जाना चाहिए, इन्हें अपने जीवन में उतारना चाहिए। ऐसा करना बहुत कठिन कार्य है। और **गुरु के बिना, एक सुधारक शक्ति के बिना परमात्मा के इस विधान पर चलना बहुत कठिन है क्योंकि मानवीय चेतना और परमेश्वरी चेतना के बीच में बहुत बड़ी दूरी है और केवल 'पूर्ण गुरु' ही इस दूरी को समाप्त कर सकता है।**

आज पूर्णिमा है अर्थात चाँद आज पूरा है। इन दैवी नियमों के विषय में बताने वाला गुरु पूर्ण होना चाहिए। जो अपने शिष्यों की समझ को इतना उन्नत कर सके कि वे इन नियमों को आत्मसात कर सकें। गुरु इस दूरी को भरने के लिए होता है। इसीलिए गुरु को उच्च दर्जे का आत्मसाक्षात्कारी एवं महान विकसित होना आवश्यक है।

ये आवश्यक नहीं कि गुरु त्यागी हो या जंगलों में रहता हो। वह सामान्य गृहस्थ भी हो सकता है वह राजा भी हो सकता है। व्यक्ति के जीवन की बाह्य अभिव्यक्तियों का कोई महत्व नहीं है। गुरु जब तक दैवी विधान को आत्मसात नहीं कर लेता तब तक उसके सांसारिक पद का कोई महत्व नहीं होता।

मैं पुनः कहती हूँ कि आपको दैवी विधान आत्मसात करने चाहिएं। आइए देखें कि वे विधान कौन से हैं, क्या हैं? पहला विधान–ये है कि "**आप किसी को दुख नहीं दे**

सकते।" पशु किसी को भी हानि पहुँचाते हैं क्योंकि वे नहीं समझते कि वो क्या कर रहे हैं। सांप के पास यदि आप जाएंगे तो वह काटेगा, बिच्छू के पास यदि आप जाएंगे तो वह डंक मारेगा। परन्तु मानव को चाहिए वो किसी को हानि न पहुँचाए। मनुष्य किसी को सुधार तो सकता है लेकिन हानि पहुँचाने का अधिकार उसको नहीं, लेकिन अहिंसा के इस नियम को उस स्तर तक खींचा गया कि वास्तविकता ही समाप्त हो गई। उदाहरण के रूप में कहा गया कि किसी के प्रति हिंसा मत करो (Do not harm anyone) तो लोग कहने लगे ठीक है हम मच्छरों और खटमलों को भी हानि नहीं पहुँचाएंगे, उन्हें मारेंगे नहीं। कुछ लोग ऐसे धर्मों का पालन कर रहे हैं जिनमें वे मच्छरों व खटमलों की रक्षा करते हैं। यह बेवकूफी, किसी चीज़ को मूर्खता की सीमा तक ले जाना, सच्चाई नहीं हो सकती। सर्वप्रथम हमें उन लोगों के प्रति हिंसा नहीं करनी चाहिए जो आत्मसाक्षात्कारी हैं तथा परमात्मा के मार्ग पर चल रहे हैं। हो सकता है उनमें कुछ गलतियाँ हों जिन्हें सुधार की आवश्यकता हो। अभी तक कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है। अतः उन्हें हानि न पहुँचाएं, सदैव उनकी सहायता करने का प्रयत्न करें।

दूसरे स्थान पर, सच्चा जिज्ञासु गलत भी हो सकता है। हो सकता है वह गलत लोगों के पास गया हों, हो सकता है उसने कुछ गलत कार्य किए हों। परन्तु उनके लिए अपने मन में प्रेम भाव पैदा करें क्योंकि कभी तो आप भी गलत मार्ग पर चले होंगे। सहज में आने से पूर्व उन्हें भटकाया गया। अतः अपने मन में उनके लिए सहानुभूति के भाव बनाएं। इसीलिए यदि आपने कभी गलतियाँ की हैं तो अच्छा है, ऐसी स्थिति में आपके मन में अन्य लोगों के लिए अधिक हमदर्दी होगी। अतः किसी मनुष्य के प्रति हिंसा न करें उसे किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न पहुँचाएं या कष्ट देने के लिए उसकी भावनाओं की चोट न पहुँचाएं, सुधारने के लिए यदि आवश्यक हो तो इसका कुछ औचित्य है। (Haethrow) हीथ्रो हवाई अड्डे पर श्री माताजी ने पुष्टि की कि किसी भी हालात में हमें किसी को हानि नहीं पहुँचानी।

दूसरा विधान ये है कि आपको अपनी टाँगों पर खड़ा होना है और ये समझना है कि आपकी एकाकारिता सत्य से है और आप सत्य के साक्ष्य (Testimony) हैं अर्थात आपने सत्य को देखा है। आप जानते हैं कि सत्य क्या है और असत्य से आप समझौता नहीं कर सकते। आप कर ही नहीं सकते। इसके लिए किसी को भी हानि पहुँचाने की आवश्यकता नहीं है। आपको इसकी घोषणा मात्र करनी है। साहस पूर्वक खड़े होकर आपको कहना है कि मैंने सत्य को देखा है और सत्य ऐसा है। सत्य के साथ आपको एकरूप होना है ताकि आपके अन्दर सत्य के प्रकाश को लोग देख सकें और उसे स्वीकार कर सकें।

स्वयं को परखें। ये केवल अन्य लोगों को बताने की बात नहीं कि आपको सत्यनिष्ठ होना है और हमने यह सत्य देखा है तथा ये परमात्मा के विधान हैं और ये इस प्रकार कार्य करते हैं।

चैतन्य चेतना के माध्यम से हम देख पाए हैं कि सत्य ऐसा है। इसके विषय में पूर्णतः विश्वस्त हो जाएं। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आपको स्वयं को भली–भांति परखना होगा अन्यथा आप आसुरी शक्तियों के हाथों में पड़ सकते है। लोग जब नया–नया सहजयोग शुरु करते हैं तो बहुत से लोगों के साथ ऐसा होता है। उन्हें चैतन्य लेना होगा। अतः सावधान रहें।

पूर्णतः विश्वस्त हो जाएं कि आप सत्य ही कह रहे हैं, इसके सिवाए कुछ नहीं कह रहे और सत्य को आपने पूरी तरह महसूस किया है। **जिन लोगों को चैतन्य लहरियों का अनुभव नहीं हुआ वे सहजयोग की बात न करें। ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं उन्हें चैतन्य लहरियाँ लेनी चाहिए।** पहले उन्हें अपने अन्दर चैतन्य लहरियां आत्म–सात करनी होंगी तभी वो कह सकते हैं हाँ हमने महसूस किया।

आधुनिक काल में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है जिसे सहजयोगियों ने करना है अर्थात ऊंची आवाज में घोषणा करनी है कि उन्हें सत्य प्राप्त हो गया है। सहजयोगियों में यह पक्ष अभी बहुत दुर्बल है। जिस तरह से भी आप चाहें सत्य की घोषणा कर सकते है। आप पुस्तकें लिख सकते हैं, अपने मित्रों और संबंधियों से बातचीत करके उन्हें बता सकते हैं कि अब यही सत्य हैं, कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं, कि परमात्मा की कृपा से आपको आशीर्वाद मिल गया है।

अब आप इस सत्य की घोषणा कर सकते हैं कि आप आत्म–साक्षात्कारी लोग हैं और सर्वत्र व्याप्त इस परमेश्वरी शक्ति को आपने अनुभव किया है, तथा आप अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं और सत्य को स्वीकार करके आप उसमें अपनी ओर से कुछ जोड़ नहीं रहे, सत्य से स्वयं को अलंकृत कर रहे हैं।

सत्य का आनन्द लेने के लिए व्यक्ति को साहस की आवश्यकता होती है। हो सकता है कभी लोग आपका मज़ाक उड़ाएं, आप पर हंसें, आपको सताएं परन्तु इन सब चीज़ों की चिन्ता आपने नहीं करनी क्योंकि अब आप दैवी विधान तथा परमात्मा की कृपा से जुड़ गए हैं।

जब यह आपका सम्बन्ध (योग) है तो आपको इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि लोग क्या कहते हैं। साहस पूर्वक खड़े होकर आपको सत्य से स्वयं को अलंकृत करना है और लोगों को इसके विषय में

बताना है। तब लोग जान जाएंगे, कि आपने सत्य को प्राप्त कर लिया है। अधिकार के साथ जब आप सत्य के विषय में लोगों को बताएंगे तो वे जान जाएंगे कि आपने सत्य प्राप्त कर लिया है। जो व्यक्ति आत्म–साक्षात्कारी नहीं है तथा आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति में मूलतः यही अन्तर होता है कि आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति परमात्मा से दूरी की वेदना की बात नहीं करता। वह कहता है, "अब मैंने इसे पा लिया है, ये सत्य है," जैसे, ईसा–मसीह ने कहा था, "मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही पथ हूँ (I am the Light, I am the Path)। इस प्रकार का दावा कोई अन्य व्यक्ति भी कर सकता है, परन्तु आप ये समझ सकते हैं कि उसका दावा सच्चा नहीं है। आपके आत्मविश्वास से, आपके हृदय से प्रवाहित होने वाली पूर्ण सूझ–बूझ से लोग समझ लेंगे कि यह पूर्ण सत्य है," और तब सारे असत्य को त्याग देना आवश्यक होता है। इस बात की चिन्ता न करें कि कोई बुरा मान जाएगा क्योंकि सत्य बताकर आप उनकी रक्षा कर रहे हैं, उन्हें हानि नहीं पहुँचा रहे। परन्तु सत्य उचित रूप से बताया जाना चाहिए, छिछोरेपन से नहीं। अत्यन्त आकर्षक ढंग से आप उन्हें बताएं कि ये गलत है। ऐसे समय की प्रतीक्षा करें जब आप आत्म–विश्वास के साथ बता सकें। उन्हें बताएं कि ये गलत है, आप नहीं जानते परन्तु ये गलत है। हम भी ऐसे कार्य कर चुके हैं। इस प्रकार आप अपने गुरु तत्व की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। आपको सत्य निष्ठ होना पड़ेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि आप सत्य का ज्ञान प्राप्त करें, सत्य के साक्ष्य के रूप में खड़े हों और इसका उद्घोष करें।

गुरु बनने के लिए सहजयोगी को जो तीसरा कार्य आवश्यक है वह है अपने अन्दर निर्लिप्तता उत्पन्न करना। शनैः शनैः आप ये गुण अपने अन्दर विकसित करें क्योंकि बिना इस गुण को अपने अन्दर विकसित किए आपको लगेगा कि आपके अन्दर चैतन्य लहरियाँ अच्छी तरह से नहीं बह रहीं। सभी प्रकार की निर्लिप्तता विकसित करनी होगी अर्थात आपको अपनी प्राथमिकताएं बदलनी होंगी। एक बार जब आपका चित्त आत्मा पर स्थापित हो जाएगा तो अनावश्यक चीज़ों के प्रति आपकी लिप्सा स्वतः ही घटने लगेगी। उदाहरण के रूप में आपके माता–पिता हैं, बहन हैं। भारत में यह बहुत बड़ी समस्या है। इनमें लोग बहुत लिप्त होते हैं। इतना ही नहीं भारतीय लोग अपने बच्चों से भी बहुत लिप्त होते हैं। 'ये मेरा बेटा है' और बाकी सब यतीम हैं! केवल आप ही के बच्चे वास्तविक बच्चे हैं। "मेरी बेटी, मुझे अपने बेटे के लिए, अपने पिता के लिए अपनी माँ के लिए ऐसा करना पड़ेगा!" दो तरह की लिप्साएं हैं एक मोह के कारण लिप्सा, कि आप उनके लिए ये वो सभी कुछ करना चाहते है उनको संपत्ति देना चाहते हैं, उनका बीमा कराना चाहते हैं और सभी कुछ करना चाहते हैं। दूसरी लिप्सा दूसरे प्रकार की है जैसी यहाँ (लन्दन में) है। आप अपने पिता

से घृणा करते हैं, अपनी माँ से घृणा करते हैं और सभी से घृणा करते हैं दोनों ही चीज़ें एक सी हैं। **अतः निर्लिप्तता भाव अवश्य विकसित होना चाहिए। निर्लिप्तता ये है कि आप ही अपने पिता हैं, आप ही अपनी माता हैं, आप ही सभी कुछ हैं। आपके लिए आपकी आत्मा ही सभी कुछ है। आपने अपनी आत्मा का ही आनन्द लेना है** तभी आपमें निर्लिप्तता आएगी। तब आप वास्तव में उनका हित करेंगे क्योंकि उनके मोह से निकलकर आप उनका सच्चा रूप देख सकेंगे और जान सकेंगे कि उनके लिए क्या किया जाना चाहिए।

प्रलोभनों (Crazes) के प्रति मोह, उदाहरण के रूप में लोगों को बहुत सी सनक का मोह होता है। किसी भी चीज़ के लिए लोग सनकी हो जाते हैं, किसी भी चीज़ के लिए व्यक्ति को समझना चाहिए केवल एक लगन (Craze) होनी चाहिए–अपनी आत्मा में स्थापित होना, पूर्णतः स्थापित होना। तब अन्य सभी प्रकार की सनक समाप्त हो जाएगी क्योंकि आत्मा में स्थापित होना अत्यन्त आनन्दायी होता है, ये अत्यन्त पोषक है और अत्यन्त सुन्दरतम। बाकी सारी चीज़ें छूट जाती हैं और आप केवल उसी का आनन्द लेते हैं जो सारे आनन्द का स्रोत है। आप अपनी आत्मा में लिप्त हो जाते हैं और निर्लिप्तता कार्यान्वित होने लगती है। कभी–कभी निर्लिप्तता को अन्य लोगों के प्रति शुष्क होने की अनुमति मान लिया जाता है। ये मूर्खता है। हर सुन्दर चीज़ को असुन्दर बनाने का यह मानवीय गुण है। वास्तव में निर्लिप्त व्यक्ति ही अत्यन्त सुन्दर है, अत्यन्त प्रेममय है, प्रेम की प्रतिमूर्ति। फूलों की ओर देखें। वे निर्लिप्त हैं। कल उनकी मृत्यु हो जाएगी, वो जिएंगे नहीं, परन्तु हर क्षण वो आपके लिए सुगन्ध बिखेरते रहते हैं। पेड़ किसी चीज़ से लिप्त नहीं हैं, कल उन्होंने मर जाना है परन्तु कोई बात नहीं। कोई भी यदि उनके पास आए तो वह उन्हें छाया एवं फल देते हैं।

मोह अर्थात प्रेम की मृत्यु। प्रेम की मृत्यु ही मोह है। उदाहरण के रूप में पेड़ के अन्दर रस जड़ों से उठता है। सभी आवश्यक अवयवों में प्रसारित होता है–सभी फूलों, फलों आदि में–और बाकी का पृथ्वी माँ में वापिस चला जाता है। किसी विशेष चीज़ से यह लिप्त नहीं होता। मान लो यदि पेड़ का रस एक फल से लिप्त हो जाए तो क्या होगा? वह फल मर जाएगा और पेड़ भी मर जाएगा। निर्लिप्तता आपके प्रेम का संचारण (Circulation) करती है।

अब भौतिक पदार्थों के विषय में। वस्तुओं के साथ यदि भावनाएं जुड़ी हुई नहीं हैं तो वे मूल्यहीन हैं। उदाहरण के रूप में जो साड़ी आज मैंने पहनी हुई है वह गुरु पूजा (गुरु पूर्णिमा) के लिए लाई गई थी परन्तु इनके पास कोई साड़ी नहीं थी, उस दिन इन्हें पूजा के लिए साड़ी चाहिए थी तो

मैंने कहा, "यदि आप ज़ोर देते हैं तो मैं यह पहन लेती हूँ। परन्तु इसे मैंने आज पहना। क्योंकि अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम के साथ ये साड़ी लाई गई थी कि गुरु पूजा पर श्री माताजी को हल्के रंग की साड़ी पहना अच्छा लगेगा। सफेद रेशम का वास्तविक रंग–पूर्ण निर्लिप्तता का प्रतीक। परन्तु सफेद में सभी रंगों का मिश्रण है, केवल तभी यह सफेद बनता है। इसमें इतना सन्तुलन और समग्रता है। **आपको भी श्वेत (पावन) बन जाना चाहिए। आज की अपेक्षा अधिक पावन।** निर्लिप्तता पावनता है, अबोधिता है। अबोधिता के प्रकाश में किसी भी प्रकार की अपावनता आपको दिखाई नहीं पड़ती। आपको पता भी नहीं चलता कि कोई व्यक्ति आपके पास बुरे इरादे से आया है। कोई व्यक्ति आपके पास चोरी के इरादे से आता है तब भी आप कहेंगे आइए, आपकी क्या सेवा की जाए। आप उसको चाय आदि पेश करते हैं, तब वह कहता है, "मैं तुम्हें लूटने के लिए आया हूँ।" ठीक है यदि आप चाहते हैं तो लूट लो। इस हालात में वह व्यक्ति आपको लूटेगा नहीं। निर्लिप्तता द्वारा व्यक्ति को यह अबोधिता अपने अन्दर विकसित करनी चाहिए।

अतः गुरु बनने के लिए व्यक्ति में निर्लिप्तता होनी चाहिए। निर्लिप्तता का अर्थ सन्यास या त्याग आदि नहीं है। संसार को दिखाने के लिए कभी–कभी तपस्वियों जैसी वेश–भूषा भी पहननी चाहिए। कम समय में यदि आपने कार्य को करना है तो ईसा–मसीह या आदिशंकराचार्य की तरह से गम्भीर आचरण अपनाने होंगे। इन लोगों का जीवन बहुत छोटा था। इस छोटे से जीवन में इन्होंने इतना महान कार्य करना था कि समस्याओं से बचने के लिए इन्हें तो सैनिकों जैसी वर्दी पहन लेनी चाहिए थी। समस्याओं से बचने के लिए, अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं। स्वयं को निर्लिप्त दर्शाकर अन्य लोगों को प्रभावित करने के लिए आजकल लोग ऐसा करते हैं और वास्तव में उनका आचरण इसके बिल्कुल विपरीत होता है।

अतः हम समझते हैं कि किसी को कष्ट न देना–अहिंसा–पहला कार्य है। किसी की हत्या मत करो।

इसका अर्थ ये नहीं है कि आप मांस–मछली आदि मत खाओ। ये सब बेवकूफी है। निःसन्देह आपको अच्छे अच्छे व्यजनों के पीछे भी नहीं दौड़ना, यह बात भी सच है। किसी की हत्या न करने का अर्थ है, किसी मनुष्य की हत्या न करें। आप हत्या नहीं करेंगे (Thou Shall not kill)। तो किसी को हानि न पहुँचाना पहली आवश्यकता है। दूसरी बात ये जानना है कि आपने सत्य को प्राप्त कर लिया है। आपको सत्य का साक्ष्य देना होगा।

तीसरा निर्लिप्तता है जिसके विषय में मैंने आपको बताया। किसी व्यक्ति से इसलिए

लिप्त नहीं होना क्योंकि वह हमारा सम्बंधी आदि है। सबके लिए समान प्रेम की भावना विकसित करना और किसी से भी घृणा न करना। यह भी निकृष्टतम लिप्सा है। 'मैं घृणा करता हूँ' शब्द सहजयोगियों के मस्तिष्क में भी नहीं आना चाहिए। इसे दण्डक कहते हैं, दण्डक कहते हैं, यही विधान (Statute) है। आप किसी से भी घृणा नहीं कर सकते, राक्षसों से भी नहीं। अच्छा होगा कि उनसे घृणा न करें, उन्हें अवसर दें।

चौथा दैवी विधान ये है कि 'चरित्रवान जीवन बिताएं' (To lead a Moral Life)। ये आदेश गुरुओं ने दिए थे। सुकरात और उनके बाद मोज़िस, अब्राहिम, दत्तात्रेय, जनक, मोहम्मद साहब और सौ वर्ष पूर्व श्री साईं नाथ। सभी ने कहा कि आपको चरित्रवान जीवन जीना चाहिए। किसी ने भी ये नहीं कहा कि आप विवाह न करें, अपनी पत्नी से बात न करें या अपनी पत्नी से कोई सम्बन्ध न रखें। ये सब बेवकूफी है। चरित्रवान जीवन व्यतीत करें। आप यदि युवा हैं और अविवाहित हैं तो अपनी दृष्टि पृथ्वी पर रखें, पृथ्वी माँ आपको अबोधिता प्रदान करती हैं।

पाश्चात्य जीवन में अधिकतर भ्रम एवं समस्याएं इसलिए उत्पन्न हो गई हैं क्योंकि उन्होंने चरित्र को ताक पर रख दिया है। चरित्र को समाज के मूल आधार के रूप में स्वीकार करना उनके लिए मुश्किल कार्य है। यह पूर्ण उल्टाव (Reversion) है, परन्तु यह आपको करना होगा। पूरा पहिया आपको उल्टा घुमाना होगा। समाज में इन पावन सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए आरम्भ में बहुत से कार्य किए गए थे। कुछ नियम आचरण ऐसे कार्य करते हैं जैसे रसायनिक नियम करते हैं। रसायन और भौतिक शास्त्र में, भौतिक नियम हैं। मानवीय नियम भी व्यक्ति को समझने चाहिएं– पारस्परिक सम्बन्ध, सम्बन्धों की श्रेष्ठता, सम्बन्धों की पावनता भी समझी जानी चाहिए।

चरित्रवान जीवन व्यतीत करें। पति–पत्नी के बीच सम्बन्धों की पावनता को समझा जाना चाहिए। केवल तभी आप खुशहाल विवाहित जीवन प्राप्त कर सकते हैं। खुशहाली का यही आधार है। ईसा–मसीह ने कहा है कि "आपको परगमन नहीं करना (Thou shalt not commit Adultery) (संभवतः वो जानते थे कि इस मामले में आधुनिक लोग अपने मस्तिष्क का उपयोग करेंगे)। उन्होंने कहा, कि "आपको परगमन नहीं करना है।" उन दिनों में ये सोचना कितनी दूरदृष्टि थी? भारत में रहते हुए मैं भी इस बात को न समझ पाई थी। यहाँ आने के पश्चात् ही मैं समझ पाई कि उनका क्या अभिप्राय था। ये आँखों की पकड़ है––पकड़ है। यह आनन्द विहीन व्यर्थ का आचरण है। इसके कारण चित्त पूर्णतः विचलित हो जाता है। यह गरिमाविहीन है। दृष्टि अत्यन्त सुस्थिर होनी चाहिए। आँखें स्थिर होनी चाहिएं। किसी की तरफ यदि आप स्थिरता पूर्वक देखें तो

उसे इस बात का ज्ञान हो जाना चाहिए कि आप में सहजयोग है। अत्यन्त प्रेम, सम्मान एवं गरिमापूर्वक लोगों की ओर देखें उन्हें ताकें नहीं। किसी की तरफ एकटक ताकना बाधाओं के हाथ खेलना होता है। पूरा समाज ही बाधित है। सारी शैतानी शक्तियाँ विचरण कर रही हैं और मैं सोचती हूँ कि जिस प्रकार से लोग बाधाग्रस्त हैं वे सूक्ष्मता पूर्वक चीज़ों को देख नहीं पाते। वे इसाई कहलाते हैं। चित्त की ओर देखना आवश्यक है। ये अत्यन्त आवश्यक कार्य है क्योंकि चित्त ने ही ज्योतिर्मय होना है।

अतः हमें समझना है कि नैतिकता क्या है? लोगों को हँसने दो और कहने दो कि ये भावुक लोग हैं (Goody Goodies) या वो जो चाहे कहें। धर्मपरायण होने पर हमें गर्व है। इसके कारण हम लज्जित नहीं हैं। धर्मपरायणता का ये महत्वपूर्ण भाग है। **जो लोग इसका (नैतिकता) पालन नहीं करते शीघ्र ही उनकी चैतन्य लहरियाँ चली जाएंगी।**

अब गुरु के विषय में। गुरु को संचय नहीं करना चाहिए। उसके पास अधिक संग्रहित वस्तुएं नहीं होनी चाहिए। केवल आवश्यकता की वस्तुएं ही उसके पास होनी चाहिएं। गुरु को अपनी सारी सम्पत्ति दे डालनी चाहिए। धन लाभ के लिए उसे टिकटें आदि एकत्र नहीं करनी चाहिएं। ऐसी वस्तुएं एकत्र की जा सकती हैं जो उपयोगी हों, सुन्दर हों, अन्य लोगों को प्रसन्नता एवं आनन्द प्रदान करें और उनकी आँखों को अच्छी लगें। गुरु के पास ऐसी चीज़ें होनी चाहिए जो उसके जीवन को प्रतीकात्मक बनाएं और ये दर्शाएं कि वह व्यक्ति अत्यन्त दार्शनिक है। अधार्मिकता का प्रतीक बन सकने वाली कोई भी चीज़ उसके पास नहीं होनी चाहिए। उसकी वेशभूषा तथा अन्य वस्तुएं उसकी धार्मिकता को अभिव्यक्त करने वाली होनी चाहिए। किसी भी अपवित्र तथा खराब चैतन्य वाली चीज़ का संग्रह नहीं किया जाना चाहिए। जो भी वस्तु आपके पास है उसके विषय में सोचना चाहिए कि आप ये वस्तु किसे दे सकते हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि आपकी संग्रहित वस्तुएं आपकी उदारता की अभिव्यक्ति करने के लिए होनी चाहिएं। सहजयोगी को समुद्र की तरह से उदार होना होगा। कंजूस सहजयोगी के विषय में तो मैं सोच भी नहीं सकती। ये तो ऐसे हुआ मानो प्रकाश में अंधेरा मिला दिया जाए। सहजयोग में कंजूसी वर्जित है। जिस व्यक्ति का मस्तिष्क इस बात पर जाता है कि मैं किस प्रकार पैसा बचा सकता हूँ, किस प्रकार मेहनत बचा सकता हूँ–मेहनत और पैसा बचाने के बहुत से उपाय हैं। दूसरों को धोखा देने और छोटी–छोटी चीज़ों में पैसा बनाने के भी तरीके हैं। परन्तु ये सब सहजयोग विरोधी हैं। इनसे आपका पतन होगा। अपनी उदारता का आनन्द लें। कितनी बार मैं आपको उदारता के विषय में बता चुकी हूँ? आपके बाँटने की विधि के अतिरिक्त आपका

भावनात्मक पक्ष इतना सुन्दर है कि आप कल्पना नहीं कर सकते। एक महिला के विवाह के तीस वर्ष के पश्चात् लन्दन में मैं उसे अचानक मिली। वह कहने लगी, "क्या संयोग है!" मैंने पूछा, "क्यों?" उसने कहा, "मैंने आज वही मोतियों का हार पहना हुआ है जो तुमने मुझे मेरे विवाह के अवसर पर भेंट किया था और आज ही तुमसे मिलना हुआ है? उस मुलाकात से सारा दृश्य ही बदल गया। छोटी सी चीज़ जो आप भेंट करते हैं उसका कितना महत्व है! देने की महानतम कला व्यक्ति को सहजयोग में सीखनी चाहिए। सांसारिक चीज़ों को छोड़ दें। जैसे आप किसी के जन्मदिवस पर बधाई सन्देश भेजते हैं, कहते हैं,"आपका बहुत धन्यवाद।" अपने सन्देश को अधिक गंभीर तथा महत्वपूर्ण बनाएं। हमें देखना है कि आप ने किस प्रकार प्रेम के प्रतीक (Symbol of Love) को विकसित किया। जब आपकी ये चीज़ें चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण होती है और आप इन्हें किसी सहजयोगी को देते हैं तो वह समझ जाता है कि यह क्या है? सहजयोगियों के साथ कभी भी उदारता में कमी न रखें। शनैः शनैः आप आश्चर्य चकित होंगे कि किस प्रकार छोटी–छोटी चीज़ों से आप उनके हृदय जीत लेते हैं, मानो चैतन्य लहरियाँ इन्हीं चीज़ों के माध्यम से बहकर उन लोगों के लिए सभी कुछ कार्यान्वित कर रही हों!

सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि वे प्राकृतिक चीज़ों का उपयोग करें, बनावट को छोड़कर अधिक स्वाभाविक बनें। मेरे कहने का ये अभिप्राय नहीं है कि जड़ों को खोदकर उनको खाएं या कच्ची मछली खाएं। मेरा ये अभिप्राय नहीं है। सदैव अति में जाने से बचें परन्तु ऐसा जीवन बिताने का प्रयत्न करें जो अधिक स्वाभाविक हो, इस प्रकार से स्वाभाविक कि लोग जान सकें कि आपमें मिथ्या अभिमान नहीं है। कुछ लोग दूसरी प्रकार के भी हो सकते हैं। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वे आवारा की तरह से वस्त्र पहनते हैं, मेरा अभिप्राय है कि ये चीज़े दोनों तरह से हो सकती हैं। फिर मै देखती हूँ कि कुछ लोग अपनी बातों को रंगते हैं। अतः आचरण में आपको अत्यन्त स्वाभाविक होना होगा।

अतः स्वाभाविक बने। जो लोग अपने विवेक का उपयोग नहीं करते उनके लिए इस बात का बेतुका अर्थ भी निकल सकता है। सहजयोग में विवेक अत्यावश्यक है और हर समय आपको विवेक बनाए रखना होगा। स्वाभाविक अर्थात आपको सहज वस्त्र पहनने चाहिएं जो आप पर सुहाएं। उदाहरण के रूप में इस जलवायु में आपको श्री राम जैसे वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता नहीं है। शरीर के ऊपरी हिस्से में वे कुछ नहीं पहनते थे। उसकी कोई आवश्यकता ही न थी। जिस देश से आप सम्बन्धित हैं उसी की वेशभूषा अवसर के अनुसार आपको पहननी चाहिए, ऐसी वेशभूषा जिसे आप अच्छी व गरिमामय मानते हों। ये आपके शिष्टता और

व्यक्तित्व को छलकाएगा। जो भी वस्त्र आप पर फबें आपको वही पहनने चाहिए। उन लोगों की तरह से नहीं जो कई रंग के वस्त्र पहनते है; लम्ब सूट पहनते हैं, जिनसे वे विदूषकों की तरह से प्रतीत होते हैं। विदूषको जैसे या छैलाओं जैसे वस्त्र आवश्यक नहीं हैं। साधारण सुन्दर वस्त्र पहनने चाहिएं जिनसे आप गरिमामय प्रतीत हों। पूर्वी देशों में लोग मानते हैं कि परमात्मा ने सुन्दर शरीर प्रदान किया है उसे मानव द्वारा बनाई गई सुन्दर चीज़ों से सजाया जाना चाहिए ताकि उस शरीर का सम्मान किया जा सके, उसकी पूजा की जा सके। उदाहरण के रूप में भारत में महिलाएं साड़ी पहनती हैं। साड़ी उनकी मनोवृत्ति (Moods) की अभिव्यक्ति करती है तथा उनकी इस भावना की कि वे अपनी शरीर का सम्मान करती हैं। वस्त्र उपयोग के लिए होने चाहिएं और गरिमा के लिए भी। सहजयोगियों को एक जैसे वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं है। एक जैसे वस्त्र मुझे अच्छे नहीं लगते। हर व्यक्ति भिन्न प्रतीत होना चाहिए।

पूजा के लिए चाहे आप एक जैसे वस्त्र पहन लें। पूजा के मामले में आपका चित्त वैचित्र्य पर होना आवश्यक नहीं है। परन्तु इसके अतिरिक्त आपको सामान्य व्यक्ति होना है। आप सब गृहस्थ हैं, आपको कोई घोषणा नहीं करनी। आपको तो मैं ये भी नहीं कहती कि कुम–कुम लगाकर गलियों में जाओ। आपको सामान्य होना चाहिए जो दूसरों से भिन्न हों। किसी भी तरह के अटपटे वस्त्र पहनने की आपको आवश्यकता नहीं है। अन्य लोगों की तरह से वस्त्र पहनें। सहजयोगियों के लिए सामान्य होना अत्यन्त आवश्यक है। आपको न किसी धर्म की निन्दा करने की आवश्यकता है और न ही कभी किसी अवतरण का अपमान करने की। ऐसा करना पाप है। सहजयोग में ऐसा करना बहुत बड़ा अपराध है क्योंकि आप जानते हैं कि ये अवतरण कौन हैं। परस्पर आप लोगों में जातिवाद की भावना नहीं होनी चाहिए। आप चीनी (Chinese) हों या कोई और, जब तक हम मानव हैं तो हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि हम एक ही प्रकार से हँसते हैं, एक ही प्रकार से मुस्कराते हैं और एक ही प्रकार से कार्य करते हैं।

ये सब हमारे मानसिक बन्धन हैं, सामाजिक बन्धन हैं कि ये छूत है ये अछूत है। भारतीय समाज में ये कुप्रथा है, भयानक! ब्राह्मण वाद ने भारत को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इससे आपको सीखना चाहिए। उदाहरण के रूप में गीता के लेखक व्यास कौन थे? एक मछुआरन के नाजायज़ पुत्र थे। उन्हें जान–बूझकर इस तरह का जन्म दिया गया था। गीता पढ़ने वाले सभी ब्राह्मणों से पूछें कि व्यास कौन थे? वास्तविक ब्राह्मण वही है जो आत्मसाक्षात्कारी है। जाति या जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं बनता।

पश्चिम में सारी उच्च शिक्षा और उन्नति के बाद भी राष्ट्रवाद की मूर्खता भरी हुई है।

मेरी तो समझ में भी नहीं आता कि कोई व्यक्ति श्वेत हो या अश्वेत, आखिरकार परमात्मा ने रंगों का वैचित्र्य भी तो बनाना था। आपको (लन्दन के लोगों को) किसने बताया कि आप ही पृथ्वी पर सबसे अधिक सुन्दर लोग हैं। हो सकता है कि यहाँ के बाज़ारों या हालीवुड के लिए यह बात ठीक हो। परन्तु परमात्मा के साम्राज्य में सात–सात पतियों से विवाह करने वाली, सभी प्रकार की अटपटी तथाकथित सुन्दर, लोगों को प्रवेश नहीं मिलेगा। उन सबको नर्क में डाल दिया जाएगा। परमात्मा ने आप सबको अपने बच्चों के रूप में बनाया है।

सौन्दर्य हृदय का होता है चेहरे का नहीं। हृदय का सौन्दर्य ही दिखाई पड़ता है और चमकता है। हो सकता है लोग इसके विषय में जानते हों। यही कारण है कि लोग जाकर अपने चेहरे ताम्र वर्ण बनाते हैं। मैं नहीं जानती। वे सबकुछ जानते हैं फिर भी बहुत अधिक दिखावा करते हैं। किसी को काले बाल पसन्द हैं तो किसी को लाल। कहने का अभिप्राय है कि सभी प्रकार के बाल होने चाहिए। किसी विशेष प्रकार के बालों का पसन्द किया जाना मेरी समझ में नहीं आता। पसन्द या नापसन्द जैसी कोई चीज़ नहीं है। परमात्मा की बनाई गई सभी चीज़ें सुन्दर हैं, आप इसका निर्णय करने वाले कौन हैं कि मुझे ये पसन्द है ये नापसन्द है। "मैं" क्या है? आप समझें कि यह 'मैं' अहम् है जिसको समाज बढ़ावा दे रहा है, जो आपको सिखाता है कि सिगार किस तरह से पिएं, बीयर किस प्रकार पिएं। सुबह से शाम तक इस प्रकार करता है। यह सारा बन्धन कचरे की तरह से फैंक दिया जाना चाहिए और देखना चाहिए कि परमात्मा ने आपका सृजन अपने बच्चों के रूप में किया है। यह अत्यन्त सुन्दर चीज़ है। इन मूर्खतापूर्ण विचारों से आप इसे क्यों गन्दा कर रहे हैं? "मुझे पसन्द है या न पसन्द है" का भद्दापन मूर्खता है। केवल एक ही शब्द होना चाहिए "मैं प्रेम करता हूँ" बाकी सब चीज़ों को भूल जाएं। ये याद करने की आवश्यकता नहीं है कि अंग्रेजों ने जर्मन के साथ क्या किया। सभी कुछ भुला दें। ये सब कुछ करने वाले लोग मर चुके हैं। हम भिन्न लोग हैं, हम सन्त हैं। ये सब दैवी विधान है जो मैंने आपको बताएं हैं और जिन्हें आपको आत्मसात करना है।

आज मैं आपको गुरु बनने का अधिकार देती हूँ। आपके चरित्र के माध्यम से, आपके व्यक्तित्व के माध्यम से और जिस प्रकार आप सहजयोग का अपने जीवन में आचरण करते हैं और प्रकाश की अभिव्यक्ति करते हैं उसे देखकर अन्य लोग भी आपका अनुसरण करेंगे। यह उनके हृदय में परमात्मा के दैवी विधानों को स्थापित करेगा और उनका उद्धार करेगा। आपको मोक्ष प्राप्त हो गया है, अन्य लोगों का भी उद्धार करें। आप ही माध्यम (Channels) हैं। बिना माध्यमों के ये सर्वव्यापी शक्ति कार्यान्वित नहीं हो सकती। यही शैली है। आप यदि सूर्य को देखें तो इसका प्रकाश

इसकी किरणों के माध्यम से फैलता है। आपकी धमनियों के माध्यम से आपके हृदय का रक्त प्रसारित होता है। **धमनियाँ अति सूक्ष्म होती हैं। आप ही वह रक्तवाहिकाएं हैं जिनके माध्यम से मेरा प्रेम रूपी यह रक्त सभी लोगों में प्रवाहित होगा।** रक्त वाहिकाएं ही यदि टूटी हुई होंगी तो लोगों तक रक्त नहीं पहुँचेगा यही कारण है कि आप लोग महत्वपूर्ण हैं। आप जितने विशाल होंगे रक्त धमनियाँ भी उतनी ही विशाल होंगी और उनके माध्यम से आपने सभी लोगों को सम्मिलित कर लेना है। इस कार्य के लिए आप ज़िम्मेदार हैं।

गुरु में गौरव का होना अत्यन्त आवश्यक है। गुरु अर्थात वज़न, गुरुत्वाकर्षण। गुरु तत्व का अर्थ है गुरुत्वाकर्षण। आपमें अपने वज़न का गुरुत्वाकर्षण होना चाहिए, अर्थात चारित्रिक वज़न, गरिमा का वजन, आचरण का वजन, श्रद्धा का वज़न और आपके प्रकाश का वज़न।

तुच्छता और मिथ्याभिमान से आप गुरु नहीं बनते। घटियापन, अभद्र भाषा, घटिया मज़ाक, क्रोध एवं गुस्सा, ये सब दुर्गुण पूरी तरह से त्याग दिए जाने चाहिएं। अपनी गरिमा, अपनी वाणी के माधुर्य से लोगों को प्रभावित करें। इन गुणों से लोग वैसे ही आकर्षित होंगे जैसे पुष्प के अन्दर निहित मधु से मधुमक्खी होती है। आप भी इसी प्रकार लोगों को आकर्षित करेंगे। आपको गर्व होना चाहिए, गर्वित होना चाहिए आपको। इस उपलब्धि पर आपके मन में अन्य लोगों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति होनी चाहिए।

अब संक्षिप्त में मैंने आपको बताना है कि यह कार्य आपको कैसे करना है। स्पष्ट रूप से आपने अपने भवसागर को कार्यान्वित करना है।

सर्वप्रथम आपको ये समझना है कि भवसागर तभी पकड़ता है यदि आप गलत गुरु के पास गए हों। अपने गुरु के विषय में आपको पूरी तरह से ज्ञान होना चाहिए। अपने गुरु का चरित्र तथा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करें। यह बहुत कठिन कार्य है क्योंकि आपके गुरु भ्रान्ति रूपेण हैं, वे महामाया हैं, उनके बारे में जान पाना सुगम नहीं है। सामान्य रूप से वे आचरण करती हैं और कभी–कभी तो आप हतप्रभ हो जाते हैं। परन्तु आप देखें कि छोटी–छोटी चीज़ों में भी वे किस प्रकार आचरण करती है। किस प्रकार उनका चरित्र अभिव्यक्त होता है। किस प्रकार उनका प्रेम अभिव्यक्त होता है। अपने गुरु की क्षमाशीलता का स्मरण करने का प्रयत्न करें। तब आप जान पाएंगे कि आपका गुरु कितना महान है और वैसा गुरु पाने की कामना कितने साधकों के मन में रही होगी क्यों कि आपका गुरु सभी गुरुओं का स्रोत है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश की भी उत्कृष्ट इच्छा होगी कि उन्हें भी ऐसा गुरु प्राप्त

होता। वे सब आपसे ईर्ष्या करते होंगे। परन्तु ये गुरु भ्रान्तिमय है। **अतः अपने भवसागर को ठीक करने के लिए कहें कि श्री माताजी आप हमारी गुरु हैं।"** उनकी भ्रान्तिमयता के कारण गुरु के प्रति वांछित भय, श्रद्धा और सम्मान आपमें स्थापित नहीं हो पाता जब तक आपमें वह श्रद्धा (Awe) पूर्ण श्रद्धा विकसित नहीं हो जाती। आपका गुरु तत्व स्थापित नहीं हो सकेगा। इस मामले में कोई भी छूट नहीं ली जानी चाहिए। मैं स्वयं आपको बता रही हूँ परन्तु मैं अत्यन्त भ्रान्तिमय हूँ। अगले ही क्षण मैं आपको हँसाकर ये सब बातें भुलवा देती हूँ–क्योंकि यह कार्य करने की आपकी स्वतन्त्रता को मैं परख रही हूँ– पूर्ण स्वतन्त्रता से मैं आपके साथ इस प्रकार खेलती हूँ कि हर क्षण आप भूल जाएंगे कि मैं आपकी गुरु हूँ–हर क्षण।

अतः सर्वप्रथम अपने गुरु को पहचानने का प्रयत्न करें–उन्हें अपने हृदय में स्थापित करें। मेरा कहने का अभिप्राय है कि आपकी गुरु अत्यन्त महान हैं। काश मेरा भी कोई ऐसा ही गुरु होता। आपकी गुरु निरीच्छ हैं, निष्पाप है, पूर्णतः निष्पाप। मैं जो भी कार्य करूं मेरे लिए वह पाप नहीं है। मैं किसी का भी वध कर सकती हूँ या कोई भी छल योजना कर सकती हूँ। मैं आपको बताती हूँ कि यह बात सत्य है। मैं जो चाहे करुं मैं पाप से ऊपर हूँ। परन्तु मुझे सदैव यह ध्यान रहता है कि आपकी उपस्थिति में मैं कोई ऐसा कार्य न करूं ताकि मेरा गुण मानकर आप उसे ग्रहण न कर लें। आपकी गुरु सर्वोच्च हैं इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु आपको इस बात की भी समझ होनी चाहिए कि सर्वोच्चता कि वो शक्तियाँ आपमें नहीं हैं। मैं इन सब चीज़ों से ऊपर हूँ। मैं नहीं जानती कि प्रलोभन क्या होते है, कुछ नहीं जानती। जो भी कुछ मुझे अच्छा लगता है यह सब मेरी मौज मात्र है। परन्तु इतना होते हुए भी मैंने स्वयं को अत्यन्त सामान्य बनाया है क्योंकि मुझे आपके सम्मुख इस प्रकार प्रतीत होना है कि आप दैवी विधानों को जान सकें। मेरे लिए कोई विधान नहीं है। आप ही के लिए मैं ये सब कार्य करती हूँ और आपको छोटी छोटी चीज़ें सिखाती हूँ क्योंकि आप अभी तक बच्चे हैं।

इसी प्रकार आप स्मरण रखें कि जब अन्य लोगों से आप सहजयोग के विषय में बात कर रहे हों तो याद रहे कि हर समय वो आपको देखेंगे और जानने का प्रयत्न करेंगे कि कितनी गहनता से आप इसमें उतरे हैं। जिस प्रकार मैं आपको समझती हूँ उस प्रकार आप उन्हें समझने का प्रयत्न करें। जिस प्रकार मैं आपको प्रेम करती हूँ उसी प्रकार से आप उन्हें प्रेम करें। निश्चित रूप से मैं आपको प्रेम करती हूँ। परन्तु मैं निर्मला हूँ मैं प्रेम से परे हूँ, यह बिल्कुल ही भिन्न अवस्था है।

इस हालात में आप बहुत ही अच्छी स्थिति में हैं क्योंकि कोई भी गुरु कभी इतनी बारीकियों

में नहीं गया। इसके अतिरिक्त मैं सारी शक्तियों का स्रोत हूँ, सारी शक्तियों का। ये सब शक्तियाँ आप मुझसे प्राप्त कर सकते हैं, जिस भी शक्ति की आपकी इच्छा हो। मैं इच्छा मुक्त हूँ परन्तु आपकी जो भी इच्छा होगी वह पूर्ण होगी। यहाँ तक कि मेरे लिए भी आप ही को इच्छा करनी होगी। यह बात आप देखें कि किस प्रकार से मैं आपसे बंधी हुई हूँ? मेरे अच्छे स्वास्थ्य की कामना जब तक आप नहीं करेंगे तब तक मेरा स्वास्थ्य बिगड़ा रहेगा। बात इतनी गहन है। परन्तु मेरे लिए क्या अच्छा स्वास्थ्य और क्या बुरा स्वास्थ्य? इन सुन्दर स्थितियों में आपको वास्तव में पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त कर लेनी चाहिए। गुरु बनने के लिए आपके सम्मुख कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

'सहजी की कलम से'

जय श्री माताजी

मैं गोपालपुर विद्यालय में अध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। दिनांक 26.7.2001 को विद्यालय लगा हुआ था, करीब पौने बाहर बजे थे, मैं कक्षा में पढ़ा रहा था। सम्पूर्ण विद्यालय अपना कार्य कर रहा था। अचानक भयानक घटना घटी, विद्यालय के पास में लगी पानी की पाईप लाईन फट गयी और पानी की तेजधार विद्यालय पर पड़ने लगी। कुछ ही मिनटों में विद्यालय का आँगन पानी से 3–4 फुट तक भर गया, कमरे और दिवारें गिरने लगें। मेरे कमरे की छत भी हिलने लगी तथा छत की चार दीवारी भी गिरने लगी। चारों तरफ हाहाकर मच गया। बच्चों में बचाओ–बचाओ की चिल्लाहट शुरू हो गई। मैं कक्षा में पढ़ा रहा था तभी ये घटना घटी और सभी कक्षाओं में पानी बढ़ता चला जा रहा था तभी मेरी कक्षा के सभी बच्चे और मैं श्री माता जी से प्रार्थना करने लगे। सभी बच्चे रो रहे थे और चिल्ला रहे थे। इसी बीच मैंने बन्धन लगाने का प्रयास किया किन्तु घबराहट और अकस्मात घटना के कारण मुझसे बन्धन नहीं लग सका। बस, मैं भी श्री माता जी से प्रार्थना करने लगा कि माँ आप ही हमें बचाओ। इसी बीच गाँव के हजारों लोग हमारी मदद के लिए उमड़ पड़े और बच्चों को बाहर निकालने में सहायता करने लगे। पानी इतना बढ़ चुका था कि बच्चों को हाथों में पकड़ कर बाहर लाया गया!

पानी के भराव के कारण सारे विद्यालय की नींव हिल गयी, परन्तु श्री माता जी की कृपा से मेरी कक्षा की एक ईंट तक नहीं हिली! और सारे विद्यालय के बच्चे और अध्यापक सुरक्षित बच गये!

विद्याधर कौशिक
भजनपुरा

।। जय श्री माता जी।।

चै त न्य ल ह री

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए. मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू.एच.एस. 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15
फोन : 5447291, 5170197

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016